हिमाचल प्रदेश का प्राचीन तन्त्र ग्रन्थ

साञ्चा



प्रकाशक : सचिव, हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी
क्लिफ एण्ड एस्टेट, शिमला-171001 हिमाचल प्रदेश

सम्पादन सहयोग : रमेश जसरोटिया
डॉ. श्यामा ठाकुर
सूनृता गौतम

प्रथम संस्करण : 1998

ISBN :

आवरण : नवीन धीमान

मूल्य : 75/- (पचहत्तर रुपये) मात्र

मुद्रक : PRINTING SERVICE CORPORATION
D-52, Flatted Factories Complex,
Jhandewalan, New Delhi-110055
Phones : 011-7538699, 520124
E-mail : kitab@del3.vsnl.net.in

Himachal Pradesh Ka Prachin Tantra Granth-Sancha
A book on one of the Traditional Himachali tantra system by
Himachal Academy of Arts, Culture & Languages, Shimla-1

विषयानुक्रमणिका

सम्पादकीय

ज्योतिषांग प्रवक्ष्यानि यदुक्तं ब्रह्मणा पुरा। यस्य विज्ञानमात्रेण धर्मसिद्धिर्भवेन्नृणाम्।। १।।
त्रिस्कन्धं ज्योतिषं शास्त्रं चतुर्लक्षमुदाहृयम्। गणितं जातकं विप्र संहितास्कन्ध संज्ञितम्।। २।।
गणिते परिकर्माणि खगमध्यस्फुट क्रिये। अनुयोगश्चन्द्रसूर्यग्रहणं चोदयास्तकम्।। ३।।
छाया शृंगोन्नतियुति पातसाधनमीरितम्।

(नारदपुराण : पूर्वभाग द्वितीय पाद)

–देवर्षी! अब मैं ज्योतिष नामक वेदांग का वर्णन करुंगा, जिसका पूर्वकाल में साक्षात् ब्रह्मा जी ने उपेदश किया है तथा जिसके विज्ञानमात्र से मनुष्यों के धर्म की सिद्धि हो सकती है। ब्रह्मन्! ज्योतिष शास्त्र चार लाख श्लोकों का बताया गया है। उसके तीन स्कन्ध हैं जिनके नाम ये हैं–गणित (सिद्धांत), जातक (होरा) और संहिता। गणित में परिकर्म, ग्रहों के मध्यम एवं स्पष्ट करने की नीतियां बताई गई हैं। इसके सिवा अनुयोग (देश, दिशा और काल का ज्ञान), चन्द्रग्रहण, सूर्य ग्रहण, उदय, अस्त, छायाधिकार, चन्द्रशृंगोन्नति, ग्रहयुति तथा पात का साधन प्रकार कहा गया है।

ज्योतिष की सभी शाखाओं, उपशाखाओं की यह परम्परा पुराण, उपनिषदों से होती हुई सदियों से आज तक चलती रही। समय के अनन्तर इसमें कई तरह की गुप्त विद्याएं भी सम्मिलित हुईं। या यूँ कहना चाहिए कि कुछ शाखाएं अपने रहस्य-रोमाञ्च के कारण गुप्त होती गईं।

संस्कृत का प्रभाव कम होने पर इस विद्या की उपयोगिता के कारण अन्य लिपियों में प्रचलन हुआ। इन लिपियों में गोपनीयता बने रहने का एक बड़ा आकर्षण भी था जिससे तन्त्रविद्या को विशेष लाभ मिला।

सिरमौर में इस विद्या की परम्परा विभिन्न लिपियों के माध्यम से सुरक्षित रही। मुख्य रूप से ये चार लिपियाँ हैं–पाबुची, पंडवाणी, भटाक्षरी और चन्दवाणी। इन चारों लिपियों में थोड़ा-थोड़ा अन्तर है। एक लिपि का जानकार दूसरी लिपि को कुशलता से पढ़ नहीं पाता। इन लिपियों के माध्यम से अपनी विद्या को गुप्त रखते हुए पण्डितों ने इस परम्परा को चलाए रखा। पुरातन पोथियों, जिन्हें साञ्चा कहा जाता है, द्वारा इस परम्परा के इतिहास को आंके जाने की अपेक्षा है। अकादमी द्वारा ऐसे कुछ दुर्लभ साञ्चों का संग्रह किया गया है।

क्योंकि यह पद्धति दिन-प्रतिदिन के प्रयोग में आने वाली प्रक्रिया से सम्बन्धित है अत: जातक या होरा में राशि भेद, ग्रहयोनि, वियोनिज, गर्भाधान, जन्म, अरिष्ट, विभिन्न प्रकार के योग, स्त्रीजातक फल, जन्मविधान; संहिता में ग्रहचार, वर्ष लक्षण, तिथि, दिन, नक्षत्र, योग, मुहूर्त, ग्रहगोचर, जातकर्म, अन्नप्राशन, उपनयन, विवाह, यात्रा, गृहप्रवेश आदि के लिए इसका प्रयोग निरन्तर होता रहा।

अकादमी द्वारा इस विद्या में प्रवीण मूल पण्डितों के साथ कई बैठकें करने तथा विभिन्न साञ्चों की खोज के उपरान्त सामग्री का संकलन किया गया है जिसे पाठकों तथा शोधकर्ताओं के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। इस क्षेत्र में अभी और शोध की अपेक्षा है।

सुदर्शन वशिष्ठ

हिमाचल में साञ्चों का उद्भव और विकास

डॉ० खुशीराम गौतम

'साञ्चा' ज्योतिष और तन्त्रविद्या का अद्भुत ग्रन्थ कहा जा सकता है। यह हिमाचल में पूर्वी क्षेत्र के शिमला, सिरमौर तथा सोलन मण्डलों में अब भी उन लोगों के पास देखने में आता है जिनके पूर्वज उपर्युक्त विद्याओं के विद्वान् तथा ज्ञाता रहे। हिमाचल में इनका उद्भव और विकास कब से हुआ यह अभी एक खोज का विषय है। परन्तु यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि इन साञ्चों का प्रादुर्भाव पौराणिक युग में हुआ जो इतिहासकारों के विचार में लगभग एक हज़ार ईसवी पूर्व से एक हज़ार ई0 पश्चात् तक माना जाता है। चूंकि इनका सम्बन्ध ज्योतिष के साथ-साथ तन्त्र विद्या से भी है और ये दोनों विद्याएं गुप्तकाल में अपनी चरम सीमा पर थीं अत: यह अनुमान लगाया जा सकता है कि चौथी अथवा पांचवीं ईसवी पश्चात् इनका उद्भव होना आरम्भ हुआ तथा आठवीं नवीं शताब्दी ईसा पश्चात् तक होता रहा। यह भी सम्भव हो सकता है कि सातवीं आठवीं ई0 पूर्व ही इनका प्रचलन हो चुका हो जब नाथों और सिद्धों द्वारा सारे भारत में तन्त्रविद्या तथा जीव बलि का बोलबाला हुआ और जिसके फलस्वरूप भारत में जैन तथा बौद्ध मत का प्रादुर्भाव हुआ क्योंकि हिमाचल में बौद्ध मत के प्रचार-प्रसार का भी इन पर स्पष्ट प्रभाव प्रतीत होता है, विशेषकर बज्रयानियों का।

दूसरी विशेष बात जो इनकी प्राचीनता की द्योतक है, वह है इन साञ्चों में प्रयोग की गई लिपि तथा भाषा। जिस लिपि में इनमें से अधिकतर साञ्चे लिखे देखे जाते हैं वह भट्टाक्षरी अथवा पाबुची लिपि कहलाती है जो गुप्तकाल की लिपि अथवा शारदा लिपि का स्थानीय परिवर्तित रूप है तथा जो प्राचीनकाल में पाबुची, भट्टाक्षरी तथा टाकरी लिपि कहलाती रही।टाकरी लिपि के हिमाचल में कई रूप हैं

जैसे चम्बयाली, कुल्लुई, मण्डयाली, सिरमौरी आदि। ये स्थानीय रूप हिमाचल में विद्वानों तथा राजाओं द्वारा राजकाज को सुचारु रूप से चलाने के लिए प्रयोग किए जाते रहे और ऐसा तब तक होता रहा जब तक एक हज़ार ईसवी पश्चात् के लगभग तथा इस काल से आगे देवनागरी लिपि पढ़ने-लिखने के लिए प्रयुक्त होने लगी। चूंकि उस काल में हिमाचल में पढ़े-लिखे लोग 'पाबुच' कहलाते थे जो उच्च कोटि के स्थानीय ब्राह्मणों का एक वर्ग होता था। ये ज्योतिष तथा तन्त्रविद्या के ज्ञाता होने के साथ-साथ मन्दिरों में पूजा-पाठ भी किया करते थे। ये लोग यम-नियमों का पालन करने वाले तथा खान-पान, पूजा-पाठ तथा रहन-सहन के लिए सर्वसाधारण से अलग होते थे। ये लोग स्वयंपाकी होते थे। इनके उच्च स्तरीय खान-पान और रहन-सहन के कारण 'पाबुच' शब्द इस क्षेत्र में अब तक रूढ़ बना हुआ है जिसका भावार्थ है विद्वान् ज्ञानी तथा शुद्ध जीवन व्यतीत करने वाला मनुष्य। ये पाबुच आज भी इस क्षेत्र में देखे जा सकते हैं तथा इनमें से अधिकतर लोगों के पास ही ये साञ्चे देखने में आते हैं परन्तु वर्तमान काल में इनके वंशज इन साञ्चों के व्यवहार करने में इतने कुशल नहीं रहे तथा ये मनमाने ढंग से इनका प्रयोग करते देखे जाते हैं।

इस क्षेत्र विशेष में इनके उद्‌गम का क्या कारण रहा होगा, यह भी एक विचारणीय विषय है। प्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वान् मैलिनोविस्की के अनुसार मनुष्य की बुनियादी आवश्यकताओं जैसे शरीर पोषण प्रक्रिया, सन्तानोत्पत्ति, शारीरिक आराम, सुरक्षा गति, वृद्धि तथा स्वास्थ्य आदि के दृष्टिगत सांस्कृतिक प्रेरक मन्त्र का उद्‌भव होता है। उसका कथन है कि गतिशील दृष्टिकोण से संस्कृति का कई पहलुओं से विश्लेषण किया जा सकता है जैसे कि शिक्षा, सामाजिक नियंत्रण, धर्मशास्त्र ज्ञान की प्रणालियां, विश्वास और नैतिकता तथा सर्जनात्मक और कलात्मक अभिव्यक्ति की रीतियां आदि। ये बातें हमें प्रयोगशास्त्र, प्राकृतिक साधनों की उपयोगिता, आवश्यकताओं की पूर्ति, सामाजिक संगठन, शैक्षणिक कार्य, मानव सम्बन्धों में व्यवस्थापन, धर्म, सौहार्दात्मक प्रवृत्ति, लोकवार्ता, नाटक और संगीत के अतिरिक्त भाषा के अध्ययन की ओर प्रेरणा देती हैं।

आरम्भ से ही मानव जीवन जिन परिस्थितियों में रहा उसने वातावरण को अपने अनुकूल बनाने का प्रयत्न किया और चूंकि वातावरण जीवन और विकास को प्रभावित करने वाली अवस्थाओं और प्रभावों का योग होता है अतः इसमें उसकी जीवन रीति की परम्परागत विरासत और आवास आदि सम्मिलित होते हैं। उन तत्त्वों से, जिन्हें वह अपने पूर्वजों के अनुभवों से ग्रहण करता है यह वातावरण बना होता है, जिससे उसकी संस्कृति भी प्रभावित होती है। मनुष्य की संस्कृति ही उसको उसकी

मूलभूत आवश्यकताएं ग्रहण की जाने वाली सम्भावनाएं, योग्यताएं और शक्तियां भी प्रदान करती रहती हैं। इसी कारण ये साञ्चे उसी हिमाचली प्राचीन संस्कृति के द्योतक भी कहे जा सकते हैं। पौराणिक साहित्य में इन्द्रपुरी, स्वर्गलोक, गन्धर्वों, अप्सराओं, किन्नरों, नागों तथा राक्षसों आदि के आख्यान देखने में आते हैं। इन साञ्चों में उस समय के वातावरण के अनुकूल इन सभी से छुटकारा पाने के ढंगों का भी वर्णन पढ़ने को मिलता है। विद्वानों के अनुसार जिस प्रकार संसार के समस्त दु:खों को आधिदैविक, आधिभौतिक तथा आध्यात्मिक तीन भागों में बांटा गया है, उसी ढंग से इन साञ्चों में इन तीन प्रकारों को ओपरा, पराया और देहजन्य इन तीन भागों में बांटा गया देखा जाता है। इस बात से यह स्पष्ट हो जाता है कि इनके रचयिता पर्याप्त योग्य तथा विद्वान् थे। इन साञ्चों में अधिकांशत: सभी प्रकार के रोगों तथा उनके निवारण का वर्णन देखने में आता है। इनमें वर्णित विषयों में जादू-टोना, भूत-प्रेतों की छाया तथा इसी प्रकार की अन्य बाधाओं से छुटकारा तथा मुक्ति, सम्मोहन, सम्मूर्छन, शत्रुओं का विनाश आदि तन्त्र तथा मन्त्रों का वर्णन है। इनको देखने वाले 'पाबुच' अथवा भाट जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक के लगभग सभी संस्कारों के मुहूर्तों के अवलोकन तथा निर्धारण करने हेतु इन साञ्चों का प्रयोग करते हैं। गांव के लोग अपने नए आवास स्थानों के निर्माण हेतु भी इनसे मुहूर्त निकलवाते हैं। यदि किसी स्थान पर कोई दैवी प्रकोप हो तो उसे दूर करने के लिए ये पण्डित जन्तर (यन्त्र) बनाकर देते हैं। ऐसे जन्तरों को 'बासत' कहा जाता है जो 'वास्तु' शब्द से बना है।

इन सब बातों के अतिरिक्त चोरी गई वस्तु का पता लगाने के लिए भी साञ्चों का प्रयोग किया जाता है। वस्तु कब चोरी हुई, चोर सम्भवत: कौन और कितने थे, किस ओर से आए तथा किधर गए, उन्होंने कैसे वस्त्र धारण किए हुए थे, चोरी रात को हुई या दिन को ? इन सब बातों को इन साञ्चों के द्वारा बताया जाता है। भविष्य की बातें भी इन साञ्चों द्वारा ये लोग बताते हैं। वर्तमान काल में ऐसे लोगों को 'बाकी' कहकर भी पुकारा जाता है और लोग दूर-दूर से इस प्रकार की पूछताछ अथवा शारीरिक रोगों के कारण और उनका तन्त्र मन्त्र से निवारण करवाने इनके पास आते हैं। इन सभी बातों का उपचार ये लोग अधिकतर इन्हीं साञ्चों की सहायता से करते हैं।

इस प्रकार के फलादेश देखने के लिए इसे प्रयोग करने वाला ज्योतिषी इन साञ्चों के साथ एक 'पाशा' अथवा 'पासा' रखता है। इसका आकार लगभग प्राचीन काल में चौसर अथवा जुआ खेलने के लिए प्रयुक्त पासे के समान होता है। यह पाशा शकुन विचारने वाले किसी जन्तु जैसे काकड़, हरिण आदि के सींगों अथवा

कौए या सियार आदि की हड्डी का बनाया जाता है। जब पाबुच प्रश्नकर्ता के प्रश्नों का उत्तर साञ्चे में देखना आरम्भ करता है तो सर्वप्रथम वह विशेष पवित्र तथा ऊंचे स्थान पर रखे उस साञ्चे को धूप आदि जलाकर तथा पवित्र जल के छींटे देकर उस पर पाशा फेंकना आरम्भ करता है। कभी-कभी तो वह अपने नाक को अंगुली से छूकर शकुन भी विचारते देखा जाता है। यदि श्वास अनुकूल न हो तो वह प्रक्रिया आरम्भ करने में देरी भी हो सकती है और कभी-कभी यह देरी घण्टों तथा महीनों तक की भी हो सकती है ताकि पाशे व साञ्चे से यथार्थ उत्तर की प्राप्ति हो सके। कुछ पण्डितों का तो यह भी विचार है कि उचित समय पर पासा न फैंकने के कारण तथा कुछ लोगों द्वारा उचित प्रयोग न किए जाने के कारण इससे वाञ्छित फलादेश प्राप्त नहीं हो पाता। इसी कारण लोगों का इस साञ्चा विद्या पर से विश्वास उठता जा रहा है।

पासे द्वारा फलादेश देखने में जिस प्रकार के पासे का प्रयोग किया जाता है उसके चारों ओर कुछ अंक अथवा चिह्न बने होते हैं जिनमें से अधिकतर शून्य अथवा बिन्दु के आकार के एक से लेकर चार तक अंक अंकित होते हैं। अकेले अंक अथवा शून्य के चिह्न को 'दा' अथवा 'एका', दो को 'दुआ' अथवा 'दोका', तीन को 'त्री' अथवा तिका' और चार को 'चौक' अथवा 'चौका' कहा जाता है। इस पासे को तीन अथवा अधिक से अधिक चार बार फैंक कर उसके अनुसार साञ्चे के पृष्ठ को खोलकर पढ़ा जाता है। फैंकने से जिस क्रम से अंक आते हैं विषयानुसार उसी क्रम से आगे फलादेश लिखे होते हैं, उदाहरणार्थ यदि साञ्चा फेंकते समय 2,3,1 के क्रम से पासे के अंक ऊपर की ओर पढ़े गए तो साञ्चे के अन्दर वह फलादेश पढ़ा जाएगा जो उस बारे में 2,3,1 के आगे वर्णित है। लगभग सभी साञ्चों में सभी प्रकार के प्रश्नों के जुदा-जुदा भागों में बंटे फलादेश लिखे होते हैं।

उदाहरणार्थ यदि प्रश्न किसी व्यक्ति की बीमारी का हो तो पहले यह निश्चित किया जाना आवश्यक होता है कि रोग किस प्रकार का है ? ओपरा, पराया अथवा देहज। यदि ओपरा हो तो किसका ओपरा है? किसी देवता का, जो कुलदेवता अथवा स्थानीय देव हो सकता है अथवा इसी प्रकार की किसी देवी का। फिर कारण के पश्चात् उपचार देखा जाता है जो हवन, यज्ञ, पूजा, पाठ अथवा बलि के रूप में अधिकतर हो सकता है ताकि देवता सन्तुष्ट हो जाए। इसके लिए पाबुच साञ्चे से ही किसी यन्त्र की नकल उतार कर देता है और प्रश्नकर्ता को उसे देकर उसके प्रयोग की विधि बताता है कि इस यन्त्र को रोगी के किस अंग से बांधना है अथवा धूप देकर उसे पानी में घोलकर पिलाना है। इसके लिए वह कभी-कभी उपचार के लिए समय भी निर्धारित कर देता है। उस समय के भीतर यदि रोगी को आराम

होने लगे या हो जाए तो वह व्यक्ति पुनः पाबुच के पास जाकर उसका पूर्णरूप से उपचार करने का ढंग पूछता है तथा उसी प्रकार कार्य करता है। इस प्रकार के 'जन्तर' तथा समय के निर्धारण को 'बान्धा' कहा जाता है। कभी-कभी यह बांधा जन्तर के साथ-साथ कुछ सरसों के दाने, विभूति और उस पुड़िया में कुछ नकद धन के रूप में रखकर रोगी के शरीर से छुआ कर उसके सिरहाने या उसी घर के कमरे में रखने को कहा जाता है और जब इस प्रकार के रोगों का पूर्ण उपचार किया जाता है तो उस बान्धे की राशि को भी भविष्य में होने वाले व्यय में सम्मिलित कर लिया जाता है।

इसी प्रकार अन्य प्रश्नों का भी हल किया जाता है। साञ्चा के विशेषज्ञ पण्डितों का विचार है कि कोई भी विद्या स्वयं में अपूर्ण एवं असत्य नहीं होती तथा उसका फल प्रयोक्ता के ज्ञान एवं विधान पर निर्भर करता है। वे साञ्चा ग्रन्थों में प्रतिपादित तन्त्र एवं गणित विद्या को भी स्वयं में पूर्ण समझते हैं परन्तु इसका समग्र फल प्रयोक्ता को तभी मिल सकता है यदि वह इसमें पूर्ण विश्वास रखता हो तथा उसे इसका पूर्णज्ञान हो और विधान के अनुसार इसे प्रयोग करे।

वे साञ्चा को गणित एवं तन्त्र विद्या का आदि ग्रंथ मानते हैं। वे इसे प्राचीन हिमाचली पहाड़ी संस्कृति का भी अभिन्न अंग मानते हैं। अतः इसकी प्राचीनता, लिपि तथा भाषा आदि के बारे में विशेष अनुसन्धान की महती आवश्यकता प्रतीत होती है।

साञ्चों में प्रयोग की गई लिपियों का भी ज्ञान इसके अनुसन्धान अथवा खोज के लिए आवश्यक प्रतीत होता है।

❑

साञ्चा-पृष्ठभूमि एवं स्थिति : एक सर्वेक्षण

ओम प्रकाश 'राही'

'साञ्चा' शब्द संस्कृत के 'सञ्चः' अथवा 'सञ्चयः' का तत्सम रूप परिलक्षित होता है। 'सञ्चः' शब्द 'संचीयते अत्र' इस व्युत्पत्ति के अनुसार सम पूर्वक चि धातु से ड प्रत्यय करने पर निष्पन्न होता है। शब्दकोशकार आप्टे के अनुसार इस शब्द का अर्थ है ग्रन्थ लेखन के काम आने वाले पत्रों का संग्रह तथा सम पूर्वक चि धातु से अच् प्रत्यय करने पर निष्पन्न 'सञ्चयः' शब्द के अनेक अर्थों में एक अर्थ 'संग्रह' भी है। इस प्रकार इन दोनों अर्थों की पुष्टि 'साञ्चा' ग्रन्थ की विषय वस्तु देखने पर भी होती है, क्योंकि 'साञ्चा' ग्रन्थ लेखन के काम आने वाले लिखित पत्रों का संग्रह है जिसमें ज्योतिष एवं तन्त्र विद्या का अनुपम एवं अतुलित संग्रह विद्यमान है। लिपि की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं प्राचीन यह संग्रह ग्रन्थ 'पाबुची', 'भटाक्षरी', 'चंदवाणी', 'पंडवाणी' जैसी विभिन्न लिपियों में पाया जाता है। अनूदित होकर अब यह ग्रन्थ हिन्दी में भी पाया जाने लगा है। किन्तु हिन्दी (दिवनागरी) में यह ग्रन्थ आंशिक रूप से ही प्राप्त होता है। समग्रतः एवं मौलिक रूप से इसे 'पाबुची' में ही पाया जाता है, जिसके विद्वान् चौपाल क्षेत्र के 'चानणा' के अतिरिक्त शिमला, सिरमौर एवं उत्तर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में पाये जाते हैं।

पृष्ठ भूमि :- ब्राह्मी लिपि के विकास के परिणामस्वरूप कालान्तर में अनेक स्थानीय लिपियां पनपीं। इनमें शारदा, टांकरी तथा गुरुमुखी आदि का विकास क्षेत्र उत्तरी भारत रहा। इनके अतिरिक्त शिमला, सिरमौर तथा उत्तर प्रदेश के जौनसार बाबर क्षेत्रों में एक अन्य लिपि भी विकसित हुई जिसे भट्टाक्षरी तथा पाबुची के नामों से जाना जाता है। ये लिपियां तन्त्र ग्रन्थों के प्रणयन के लिए इन क्षेत्रों में अब भी प्रचलित हैं और इनमें लिखित हज़ारों पाण्डुलिपियां स्थानीय लोगों के पास उपलब्ध हैं।[1]

सोमसी, जुलाई १९९१ में डॉ० बंशीराम शर्मा के सम्पादकीय से।

इन लिपियों के उद्‌भव एवं विकास का विषय नि:सन्देह अपने आप में अनुसन्धान का विषय है। इन लिपियों एवं सम्बन्धित ग्रन्थों की विषयवस्तु ज्योतिष एवं तन्त्र विद्या से सम्बन्ध रखती है और ये दानों विद्याएं गुप्त काल में अपनी चरम सीमा पर थीं। अत: चौथी अथवा पांचवीं ईसवी पश्चात् इनका उद्‌भव माना जा सकता है। साञ्चों में प्रयुक्त लिपि तथा भाषा गुप्तकाल की लिपि अथवा शारदा लिपि का स्थानीय परिवर्तित रूप है। ये स्थानीय रूप हिमाचल में विद्वानों तथा राजाओं द्वारा राज-काज को सुचारु रूप से चलाने के लिए प्रयुक्त होते रहे हैं और यह क्रम तब तक चलता रहा जब तक देवनागरी लिपि पढ़ने-लिखने के लिए प्रयुक्त होने लगी।

हिमाचल एवं उत्तर-प्रदेश के उपर्युक्त क्षेत्रों में पाबुची लिपि एवं साञ्चा ग्रन्थों का प्रचलन कब और कैसे हुआ ? यह जानने के लिए ग्राम खड़कांह निवासी प्रसिद्ध पाबुची पण्डित श्री देवीराम ने मूल साञ्चा ग्रन्थों में उल्लिखित वर्णन का प्रतिपादन करते हुए बताया कि नटी के शाप से सिरमौर महाराज के राज्य भ्रष्ट तथा वंश नाश होने पर महाराज के वज़ीर रायमोण तथा रायगोपाल कश्मीर राजा की राजधानी श्रीनगर गये। नटी के शाप द्वारा राज्य भ्रंश की घटना ग्यारहवीं शताब्दी की मानी जाती है। राजा कश्मीर की दो रानियों में एक के पास एक टीका पुत्र था जबकि दूसरी रानी सुमित्रा गर्भवती थी। राजा कश्मीर से सिरमौरी वजीर ने अनुरोध किया कि वे सिरमौर राज्य की स्थिति देखते हुए उन्हें टीका दान दें। वजीर के अनुरोध पर राजा ने गर्भवती रानी को शैया दान के रूप में दिया जिसे वजीर आदर पूर्वक अपने साथ लाये। राजा ने ऋषि, चारण, भाट, कलाकार आदि भी साथ भेजे। हमारे अर्थात् पाबुचों के ऋषि पंत साथ आये- "लोय आणा मंगतु पुरोहित साथ लोय आणा राय भाट लोय आणा, विक्रमी सम्वत साल थी तोदी 1152 म्हीना माघ।'' इस उल्लेख से यह स्पष्ट है कि यह विद्या एवं विद्याविद् विद्वान् कश्मीर से यहां आये। साञ्चे के आरम्भ में कश्मीरी वाचा का उल्लेख मिलता है। इस तथ्य की पुष्टि करते हुए जबलोग ग्राम (रेणुका) निवासी पंडित शिवानन्द ने बताया कि साञ्चा ग्रन्थ में प्रतिपादित विद्या का विचार करने के लिए "विद्या सुरी काश्मीरी लगन देख शोधन विचार'' इस प्रकार ध्यान किया जाता है। इससे भी इस विद्या के काश्मीरी होने की पुष्टि होती है। राजा की 22 पीढ़ियों तक इन पंत वंशी पण्डितों को पूर्ण सम्मान प्राप्त होता रहा। ये ऋषि पंत के वंशज अपने आचार-विचार, खान-पान आदि की अत्यन्त पवित्रता के कारण ही 'पाबुच' कहलाये। वंशवृद्धि के साथ-साथ ये पाबुच इधर-उधर फैलते गये और आज ज़िला शिमला के ग्राम चानणा, घुरोत, ज़िला सिरमौर के जबलोग, बगनोल, खड़कांह तथा उत्तर प्रदेश के ज़िला देहरादून की चकरौता तहसील के प्रमुख

गांवों में समस्त परिवारों की संख्या दो सौ से अधिक बनती है तथा सभी घरों में साञ्चे पाये जाते हैं। पाबुची लिपि जानने वाले शिष्य बहुत बड़ी संख्या में हिमाचल प्रदेश व उत्तर प्रदेश के ब्राह्मण परिवारों में मिलते हैं जो इस लिपि में लिखे साञ्चों से पहाड़ी क्षेत्र का ब्रह्म कर्म पुश्तों से कर रहे हैं।

पण्डित देवीराम का कथन है कि उनके ग्राम खड़कांह में एक ही जात, बिरादरी व गोत्र के पाबुच पण्डित रहते हैं। गांव में 42 घर हैं। इन घरों में तीन साञ्चे मूल तथा 96 साञ्चे गणना करने वाले हैं। मूल साञ्चों को गणना सम्बन्धी कार्यों के लिए बाहर नहीं ले जाया जाता। इन मूल साञ्चों में सबसे पुराना साञ्चा विक्रम सम्वत् 1543 का लिखा मिलता है।

दूसरे नम्बर का पुराना साञ्चा सम्वत् 1603 का लिखा पाया जाता है।

तीसरा साञ्चा सम्वत् 1666 का लिखा मिलता है। उपर्युक्त तीनों साञ्चे बाहर भ्रमण को नहीं लाये जाते और जेठ मास के मूल नक्षत्र में इनकी पूजा की जाती है और शेष धार्मिक पर्वों में भी इनकी पूजा-अर्चना की जाती है।

साधारण साञ्चा- जिसे पण्डित गणना कार्य के लिए प्रयोग करते हैं तथा भ्रमण पर बाहर भी ले जाते हैं, ग्राम खड़कांह में सबसे पुराना 346 वर्ष पूर्व का लिखा मिलता है। साञ्चे में उल्लिखित वर्णनानुसार सम्वत् 2050 से देखने पर यह साञ्चा 2050-1704=346 वर्ष पुराना सिद्ध होता है। यह साञ्चा ब्राह्मण कर्म हेतु भ्रमण करने को बाहर भी लिया जाता है। इसे 'पोथी पाशा' भी कहते हैं और पाबुची लिपि का लेख है।

इसी प्रकार का एक दूसरा साञ्चा 240 वर्ष पुराना है।

इस प्रकार ग्राम खड़कांह निवासी पाबुची पण्डितों के पास जहां साधारण साञ्चे साढ़े तीन सौ वर्ष पूर्व लिखे उपलब्ध होते हैं वहीं मूल साञ्चे पांच सौ वर्ष से भी अधिक पुरातन प्राप्त हुए हैं।

किन्तु तहसील रेणुका के ग्राम जबलोग निवासी पाबुची के प्रसिद्ध पण्डित श्री शिवानन्द के पास तो 839 वर्ष पूर्व लिखा मूल साञ्चा प्राप्त हुआ है। "यह साञ्चा विक्रम सम्वत् 1211 के म्हीना चैत्र, गते दो, नक्षत्र भरणी में खगीयाराम पाबुच ने लिखा।" इस प्रकार सम्वत् 2050 से अवलोकन करने पर यह साञ्चा 2050-1211=839 वर्ष पूर्व लिखा सिद्ध होता है। इस प्रकार यह साञ्चा ईसवी सन् 1993-839=1154 ईसवी सन् का लिखा प्राप्त होता है। पंडित शिवानन्द ने बताया कि तांबे की बही पर समस्त वर्णन मिल जाता है जो ग्राम चानणा (जुब्बल) में उपलब्ध है। निश्चित ही यह बही इससे भी पुरातन रही होगी। शिवानन्द पंडित का कथन है कि उनके

पूर्वज कश्मीर से आकर चानणा में रहे और वहां से घुरोत रहते हुए जबलोग में आकर अब पांचवीं पीढ़ी से रह रहे हैं। ग्राम जबलोग में ये पाबुच जानिया, चूंचू, मोंजीराम, शिवानन्द, राजेन्द्र- इस क्रम से रहते आ रहे हैं।

उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि ग्यारहवीं-बारहवीं शताब्दी में पाबुची लिपि, साञ्चा एवं एतत्सम्बन्धी तन्त्र विद्या का पूर्ण प्रचलन पूर्व वर्णित क्षेत्रों में रहा है जो मूल उद्गम स्थल कश्मीर से अनुसन्धान करने पर अति प्राचीन सिद्ध होगा।

पंचांग एवं चिरी :- जैसा कि पहले कहा गया है 'साञ्चा' ज्योतिष एवं तन्त्र विद्या का आकर ग्रन्थ है। ज्योतिष सम्बन्धी तिथि, नक्षत्र, मुहूर्त, लग्न आदि कार्यों के लिए पंचांग अर्थात् जन्त्री की आवश्यकता रहती है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से आरम्भ होने वाले इस पांच अंगों वाले पंचांग में 12 मास शुक्ल एवं कृष्ण भेद से 24 पक्ष अंकित होते हैं तथा यह पंचांग चन्द्र कला से अंकित किया जाता है।

पंडित देवीराम का कथन है कि पाबुची विद्वानों द्वारा अपनी ही रीति से एक अन्य जन्त्री बनाई जाती है जिसे 'चिरी' कहते हैं। इसके तीन अंग होते हैं- वार, नक्षत्र और तिथि। पाबुची पंडितों द्वारा रचित यह 'चिरी' सूर्य सिद्धान्त पर आधारित होती है तथा सूर्य की मेष संक्रान्ति यानि वैशाखी को इस चिरी में वर्ष का पहला दिन माना जाता है। मेष संक्रान्ति से क्रमशः सूर्य बारह राशियों का सम्भोग करता है और बारहवीं मीन संक्रान्ति तक का पूरा वर्ष प्रकरण बनाया जाता है।

पंचांग तथा चिरी में अन्तर :- तिथि, नक्षत्र, वार आदि ज्ञान की समता के साथ-साथ पंचाग व चिरी में अन्तर भी है। पंचांग में बारह मास की संक्रान्ति आगे-पीछे होती है, परन्तु चिरी के अनुसार संक्रान्ति वर्ष के प्रथम दिन 15 अप्रैल से लेकर वर्ष पर्यन्त एक ही निर्धारित समय पर होती है। अंग्रेज़ी तिथि के अनुसार जिस मास की जितनी तारीख को होगी, हर वर्ष उसी तारीख को होगी।

चिरी में रवि आदि वार प्रथम अंग पहले अंकित होता है, उसके बाद नक्षत्र जिससे राशि बनती है तथा बाद में तिथि-जो कि पंचांग में सर्वप्रथम अंकित होती है। चिरी हस्तलिखित ही प्राप्त होती है, छापाखाने से नहीं। माघ मास की वसंत पंचमी को चिरी का श्रीगणेश किया जाता है, क्योंकि धर्मार्थ कार्य के लिए माघ मास उत्तम माना जाता है।

पंडित देवीराम के पूर्वज 500 वर्षों से चिरी गणितकर्ता रहे हैं। चिरी निर्माता पंडित के ज्येष्ठ पुत्र को ही चिरी निर्माता ज्योतिषी बनाने की प्रथा रही है। पं० देवीराम के पूर्वजों की 500 वर्षों से चिरी बनाने वाले विद्वानों की वंशावली साञ्चा ग्रन्थ में इस प्रकार बताई गई है-

ज्योतिषी दीलौरी पाबुच - पूरण - बगण - छणी - सूरदास - बलांकी- दुर्गु - रामचन्द - नरगू - कलीराम - खयालीराम - देवीराम - गोविन्दराम । इस वंशावली के अनुसार एक पुश्त का चिरी गणित कर्ता एक ज्योतिषी रहा है। उपर्युक्त वंशावली 507 वर्षों के गणित कर्ता पंडितों का प्रदर्शन करती है।

विषय वस्तु तथा वर्तमान स्थिति :- अति प्राचीन लिपि एवं विद्या के आकर ग्रन्थ 'साञ्चा' की वर्तमान स्थिति जान लेने से पूर्व इसकी विषय वस्तु से परिचित होना उचित रहेगा। 'साञ्चा' ग्रन्थ की विषयवस्तु अति विस्तृत है। मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त के संस्कारों के अवलोकनार्थ इसका प्रयोग किया जाता है। रोग निवारण, जादू-टोना, भूत-प्रेत बाधा से मुक्ति, गुप्त प्रश्न फलादेश, सम्मोहन, सम्मूर्छन, मारण आदि तक के तन्त्र मन्त्रों का वर्णन एवं प्रयोग विधान इसमें मिलता है। यह प्रयोक्ता के विवेक पर निर्भर करता है कि वह कैसे कार्यों के लिए इसका प्रयोग करता है।

प्रसूति काल में कष्ट होने पर ग्रन्थ में विद्यमान तन्त्र का पान कराकर स्त्री को सरलता से प्रसव कराया जा सकता है- ऐसा विशेषज्ञों का मत है। प्रसव उपरान्त बच्चे का भविष्य जानने बारे विशेषत: 'डांडा,' 'छतरी', 'रेख' आदि जानने के लिए इस ग्रन्थ का फलादेश देखा जाता है। जैसा पहले वर्णन किया गया है तिथि, लगन, पहर आदि का फलादेश भी इस ग्रन्थ में विद्यमान है। विवाह, गृह स्थापना आदि के लिए शुभ बेला तथा प्रश्न फलादेश का विचार भी इस ग्रन्थ के माध्यम से किया जाता है। प्रसिद्ध पाबुची पंडित शिवानन्द का कथन है कि गृह स्थापना जिसे बास्त विचार कहा जाता है, के लिए इस ग्रन्थ में बहुत सूक्ष्मता से विचार किया जाता है। पंडित जी का स्वानुभूत अनुभव है कि भली-भांति विचार करने पर पूर्ण विधान से विचार करने पर कथित फलादेश को फलीभूत होते देखा गया है। उदाहरणार्थ अमुक लगन के अमुक समय में बास्त लगाते समय वर्षा होगी तो वर्षा अवश्य होती है। अमुक स्थिति में अमुक प्राणी की ध्वनि होगी या अमुक जीव दिखाई देगा-तो वह उसी रूप में अवश्य परिलक्षित होता है, आदि-आदि। पंडित जी ने आगे बताया कि किसी घर अथवा सामूहिक रूप से किसी ग्राम विशेष की अन्न-धन आदि बहुविध वृद्धि हेतु 'सींज' करने का विधान है। पूर्ण विधि-विधान से 'सींज' करते समय सही लगन, मुहूर्त आदि पकड़े जाने पर कुछ प्रत्यक्ष आश्चर्य जन साधारण द्वारा भी देखे जा सकते हैं। उदाहरणार्थ पानी के आधे लोटे में अचानक ऐसा उफान आ जाये कि पानी बाहर निकलकर बहने लगे अथवा किसी आधे भरे अन्न पात्र से अन्न स्वयमेव अचानक पात्र के बाहर इधर-उधर बिखरने लगे। इस प्रकार पूर्ण विधान से 'सींज' किये जाने पर उस ग्राम में सात पुश्तों तक अन्न-धन का अभाव नहीं होता।

'साञ्चा' असंख्य तन्त्र-मन्त्रों का संग्रह है। किसी व्यक्ति को किये गये जादू-टोना, दृष्टा, नज़र, ओपरा, भूत-प्रेत आदि का निराकरण इन जन्त्र-मन्त्रों से किया जाता है। पं0 देवीराम ने बताया कि फेदी नामक एक पाबुच की प्रसिद्धि तो यहां तक रही कि उसके नाम मात्र से ही भूत भाग जाता था। किसी छोटे बच्चे के लगातार रोने पर जिसे 'रूणी लगना' कहा जाता है उसके सिर पर 'साञ्चा' फेरने मात्र से बच्चे को चुप होते देखा एवं सुना गया है। व्यक्ति विशेष की पीड़ा दूर करने हेतु 'साञ्चा' ग्रन्थ में उल्लिखित जन्त्र को पूर्ण विधि से तैयार करके पीड़ित व्यक्ति के गले अथवा बाजू में बांधा जाता है। कभी-कभी विशेष स्थिति को देखते हुए इन जन्त्रों को कागज़ पर लिखकर तब पानी से धोकर पिलाया भी जाता है। किसी व्यक्ति को धीमा विष दिये जाने की स्थिति में 'साञ्चा' ग्रन्थ के पन्नों का प्रयोग करते हुए जन्त्र युक्त धागा बनाकर रोगी के गले में पहनाकर उसे लाभ होते देखा गया है। विष उपचारार्थ तहसील रेणुका के ग्राम भाटण निवासी स्व0 पं0 जातीराम अपने 'साञ्चा' के माध्यम से विशेष ख्याति अर्जित किये हुए थे। जिनके वंशज आज भी इसका प्रयोग करते हैं। वर्तमान में तहसील रेणुका के ग्राम सैंज के पंडित मोहरसिंह विष उपचारार्थ तैयार किये जाने वाले 'धागे' के लिए सुप्रसिद्ध हैं। तहसील रेणुका के ही ग्राम कढ़याना निवासी पंडित रामनाथ 'साञ्चा' ग्रन्थ द्वारा तान्त्रिक विद्या के लिए ख्याति अर्जित किये हुए हैं। दृष्टिदोष मानवेतर जाति पशुओं को भी हो जाता है। तत्सम्बन्धी उपचार विधान भी इस ग्रन्थ में प्रतिपादित है। किसी व्यक्ति अथवा परिवार की अहित भावना से कुछ दुष्ट व्यक्ति उनके घर-मकान अथवा ज़मीन आदि में अनिष्टकारक गन्दी सामग्री दबा देते हैं। साञ्चा ग्रन्थ में इसे भी ढूंढ निकालने का ज्ञान भरा पड़ा है। इस निमित्त दीपक अथवा तुम्बे द्वारा खोज की जाती है जिसे "चौली लगाना" कहते हैं। इस निमित्त राशि आदि को देखने के बाद उपयुक्त व्यक्ति के हाथ 'तुम्बा' (सूखा आल) बांधा जाता है। तब विशेषज्ञ पण्डित द्वारा तान्त्रिक प्रक्रिया द्वारा मन्त्रोच्चारण किया जाता है। आश्चर्य है कि वह तुम्बी हाथ में बंधा व्यक्ति मन्त्र शक्ति द्वारा परवश सा हुआ हाथ को घसीटता हुआ आगे बढ़ता है। कई बार जल्दी ही खोज हो जाती है किन्तु कई बार बहुत समय लग जाता है और वह तुम्बी सम्बन्धित व्यक्ति के घर-मकान व ज़मीन में दौड़ती जाती है और उस स्थान पर आकर फट जाती है जहां वह अनिष्ट सामग्री दबी होती है। तब खुदाई द्वारा खोज करने पर वहां प्राप्त उस सामग्री को निकाल कर प्रायः पानी में बहाया जाता है तथा उस घर की शान्ति व समृद्धि हेतु शेष विधान किया जाता है।

साधारण गृह दोष की स्थिति में सात अनाजों के मिश्रण जिसे सतनाजा कहते हैं, अभिमन्त्रित कर घर के चारों ओर डाला जाता है तथा कागज़ पर जन्त्र बनाकर

उसमें भी सतनाजा डालकर गोबर की सहायता से गृह द्वार अथवा भित्ति पर लगाया जाता है।

इतना ही नहीं सुविज्ञ पण्डित लोग इस ग्रन्थ द्वारा त्रिलोकी आकाश, पाताल तथा मर्त्य लोक का विचार भी करते हैं। वर्तमान के साथ भूत एवं भविष्य का ज्ञान भी ये विद्वज्जन इस ग्रन्थ के माध्यम से करवा लेते हैं। किसी व्यक्ति के प्रश्न पूछने पर उससे केवल समय पूछने के बाद उसकी मार्ग में घटित समस्त घटनाओं को प्रत्यक्ष दृष्टवत् बता देना तथा जीवन की समस्त घटनाओं का वर्णन करना इस विद्या की श्रेष्ठता सिद्ध करता है।

पाशे की उपयोगिता :- उपर्युक्त समस्त बातों को जानने के लिए साञ्चे और पाशे का खेल चलता रहता है। जुए के पासे जैसे इस 'पाशा' को बहुत सरलता से तैयार नहीं किया जा सकता। इस चौरस पाशे पर चार तक अंक बिन्दु 0, 00, 000, 0000, अंकित होते हैं जिन्हें एक, दो, तीन, चार के विचार से क्रमशः दा, दुआ, त्रीक, चौक पढ़ा जाता है। क्योंकि यह विद्या शकुन विचार पर आधारित होती है, अतः शकुन विचारक पशु-पक्षियों के अवयवों से निर्मित 'पाशा' श्रेष्ठ माना जाता है। इस पाशे पर अंक लेखनार्थ भी विशेष मु हूर्त व शकुन की आवश्यकता होती है। पाबुची पंडित शिवानन्द के शब्दों में इस प्रकार के मुहूर्त पकड़ने में दिन, महीनों तो क्या, वर्षों भी प्रतीक्षा करनी पड़ती है।

पाशे पर अंकित दा, दुआ, त्रीक, चौक से पड़ने वाले प्रत्येक अंक से सोलह 'होरों' से कुल होरों का योग चौंसठ होता है। ये चार अंक चार वेदों, एक अंक की सोलह 'होरें' सोलह संस्कार एवं कुल 64 'होरें' चौंसठ कलाओं की परिचायक मानी जाती हैं।

उपर्युक्त विधि से तैयार किये गये पाशे को किसी व्यक्ति के प्रश्न करने पर अथवा उसके रोग दोष आदि विचारणार्थ इष्ट स्मरण के साथ "विद्या सुरी काश्मीरी लगन देख शोधन विचार'' ध्यान करके पंडित बन्द सांचे पर गिराते हैं। इस प्रकार तीन बार डालने के पश्चात् (इसे एक होर कहा जाता है) उसका फ़लादेश देखा जाता है। उदाहरणार्थ तीन बार पाशा डालने पर 2, 1, 4, अंक आये तो साञ्चा खोलने पर दुआ, दा, चौक का फलादेश पढ़ा जाता है। सूक्ष्मता से फल जानने के लिए दूसरी तथा तीसरी बार 'होर' डाली जाती है और तब उनका फ़लादेश भी पढ़ा जाता है और अधिक गहनता से फल जानने के लिए तीनों होरों के योग एवं भाग आदि से फल विचार किया जाता है। उदाहरणार्थ उपर्युक्त सन्दर्भ में दूसरी होर 4,4,1 तथा तीसरी 1,1,3 अंक क्रम से 'दूहीने चौक दा' तथा 'दूहीने दा त्रीक' पढ़ी जायेगी। पहली होर 2,1,4, के योग 7, दूसरी 4,4,1 के योग 9 तथा तीसरी

1,1,3 के योग 5 तीनों के योगफल 7+9+5=21 को अब भाग किया जाता है। भाग भी अलग अलग अंकों, प्रातः सूर्योदय से मध्याह्न तक 4 से, मध्याह्न के बाद सूर्यास्त तक 7 से तथा सूर्यास्त के बाद मध्य रात्रि तक 12 से करने का विधान है। सम्बन्धित अंक से भाग करने पर भागफल एवं शेष अंक का विचार किया जाता है। प्रश्न को बहुत बारीकी से देखने की स्थिति में यह जमा, घटाव, गुणा, भाग की प्रक्रिया काफी लम्बी भी चल सकती है।

किसी पीड़ित अर्थात् रोगी के रोग के विचारार्थ भी इसी प्रकार 'साञ्चा' 'पाशा' का प्रयोग किया जाता है, जिसे 'गणना' कहते हैं। उस व्यक्ति को पाप, देव, दृष्टा आदि कोई भी दोष हो तो उसका पता फलादेश द्वारा लग जाता है। कोई भी दोष न होने पर 'कर्मगति' की स्थिति में भाग उस तरह से कट जाता है। 'गणना' के पश्चात् पण्डित उस पीड़ित व्यक्ति को 'बन्धा' देते हैं और लाभ होने के पश्चात् ही उसका पूर्ण उपचार करते हैं।

प्रश्न उलझने की स्थिति में मिट्टी अथवा जल शोधन द्वारा विचार किया जाता है। मिट्टी शोधन को 'दुरपट चक्र', 'धरोटा' या 'मेट काटना' आदि नामों से पुकारा जाता है। मेट काटने के लिए पंडित शिवानन्द ने बताया कि इस निमित्त साधारण मिट्टी प्रयोग में नहीं लाई जाती बल्कि चानणा से ही मिट्टी लाई जाती है। यह विशेष प्रकार की मिट्टी बताई जाती है, जो पानी से नहीं बहती। इस मिट्टी को तख्ती पर फैलाकर दुरपट लिखा जाता है। मिट्टी पर बारह लग्नों का यन्त्र बनाया जाता है तथा राशि विचार किया जाता है। उपर्युक्त चानणा की मिट्टी की एक विशेषता के बारे में जनश्रुति यह भी है कि वहां साञ्चा एवं इस विद्या के आद्यक्षर 'राम सत जी' स्वयं प्रकट हुए थे। अतः इसी मिट्टी से विचार फलीभूत होता है। इस दुरपट विचार द्वारा जन्म से पूरी आयु का फलादेश पण्डित लोग बनाते हैं। वेद पीड़ा विचार, अल्पमृत्यु विचार भी इसी से किया जाता है। इससे तान्त्रिक वेद अर्थात् जादू-टोना, दृष्टा, ओपरा आदि का विचार भी किया जाता है। पण्डितों का कथन है कि इस दुरपट पर चावलों के बारह दाने डाले जाते हैं और उसी से लग्न पकड़ा जाता है। इस प्रक्रिया द्वारा पण्डित पूर्व एवं पर जन्म विचार तक की मान्यता रखते हैं।

जल शोधन द्वारा भी फल विचार किया जाता है। इस निमित्त मर्त्य लोक की भद्रा में पानी का लोटा मंगाकर विचार किया जाता है। सम्बन्धित प्रष्टा मन में अपने शत्रु अथवा रोग आशंका का विचार करता है तथा तब पर्ची पर लिखकर जल से छानबीन की जाती है। कुछ पण्डितों द्वारा इन पर्चियों को बटे हुए बराबर तुले हुए आटे के भीतर डालकर पानी के लोटे में डाल दिया जाता है जो स्वाभाविक तौर पर भार होने के कारण पानी में डूब जाती हैं। तब शोधन करने पर सम्बन्धित

पर्ची युक्त गोली ही ऊपर आती है। इसे 'भुजड़ी तारना' भी कहते हैं। तब तत्सम्बन्धी विचार एवं उपचार पण्डित लोग करते हैं।

स्थिति :- 'साञ्चा' ग्रन्थ की विषय वस्तु पर विचार करते समय इसकी महत्ता के साथ-साथ वर्तमान स्थिति का भी किञ्चित् अवलोकन हो पाया है। ज्योतिष विद्या के लिए भले ही इस ग्रन्थ का उपयोग कुछ कम हो गया हो किन्तु तान्त्रिक कार्यों के लिए आज भी बराबर इस ग्रन्थ एवं विज्ञ पण्डितों की उपयोगिता बनी हुई है। सिरमौर, शिमला एवं उत्तर प्रदेश के जिन क्षेत्रों में पाबुच पण्डित रहते हैं वहां तो इस विद्या की उपयोगिता बराबर बनी हुई है ही, साथ इन पण्डितों को इन क्षेत्रों से बाहर भी आदर-सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। पूर्वोल्लेख के अनुसार पाबुची के अतिरिक्त 'भटाक्षरी,' 'चंदवाणी', एवं 'पंडवाणी' लिपियों में भी साञ्चे पाये जाते हैं। तहसील चौपाल के ग्राम मंडोचली में वयोवृद्ध पण्डित तुलसीराम जी 'चंदवाणी' लिपि में लिखे साञ्चे द्वारा ही गणित विद्या को पुश्तों से करते आ रहे हैं। उन्होंने बताया कि चौपाल के कुछ गांवों में 'पंडवाणी' लिपि में साञ्चे मिलते हैं। ज़िला सिरमौर की तहसील रेणुका के विभिन्न ग्रामों में 'भटाक्षरी' लिपि में लिखित साञ्चे उपलब्ध होते हैं।

लिपि कोई भी हो, ये पण्डित आज भी अपनी इस विद्या से जन समुदाय में अपना वर्चस्व बनाये हुए हैं। पहले कहा गया है कि सैंज ग्राम निवासी पंडित मोहर सिंह विष उपचारार्थ निर्मित धागे के लिए प्रसिद्ध हैं और इस निमित्त लोग उनके पास आज भी दूर-दूर से आते हैं। ग्राम कढ़याना निवासी पंडित रामनाथ को जन्त्र-तन्त्र व मन्त्र सम्बन्धी कार्यों के लिए लोग दूर-दूर तक ले जाते हैं। ग्राम सड़कांह निवासी पण्डित तो सुदूर क्षेत्र तक ख्याति अर्जित किये हुए हैं। ग्राम जब लोग निवासी पंडित शिवानन्द की कीर्ति सिरमौर के बाहर भी सुदूर तक फैली हुई है। यह पूछे जाने पर कि आपके एवं इस पाबुची साञ्चा विद्या द्वारा कैसे तथा किन लोगों को आपने लाभ होते देखा है, के उत्तर में पंडित शिवानन्द जी ने बताया कि उनके पास साधारण सिरदर्द से लेकर भयंकर रोग से पीड़ित तक असंख्य लोग आये हैं जिनमें से अधिकतम पूर्ण स्वस्थ हुए हैं। गृह स्थापना, देह शुद्धि, शूची-मातृ पूजन, भूत निराकरण आदि के लिए भी ये प्रसिद्धि प्राप्त किये हैं। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं-

1. ग्राम जबलोग के ही उपग्राम 'मिडिच' के हीरू की धर्म पत्नी श्रीमती हरदेवी को कहते हैं असाधारण शिरो वेदना हुई। ज्यों-ज्यों इलाज किया दर्द बढ़ता ही गया। कहते हैं कि उसकी असह्य सिर दर्द से पागलावस्था हो गई। कहते हैं कि डाक्टर ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया था कि इसे घर ले जाओ, यह अब मुश्किल से पन्द्रह दिनों की मेहमान है। अंत में उन्होंने पंडित जी की शरण ली। पंडित जी ने अपने ग्रन्थ से विचार किया और दोष को बारीकी से पकड़ा। पूर्ण उपचार

करने के बाद कहते हैं अब वह महिला लगभग छः माह से पूर्ण स्वस्थ् है और उसकी पीड़ा का नामोनिशान भी नहीं रहा।

2. मुस्लिम सम्प्रदाय के मोहम्मद असमोल नाहन निवासी दिन प्रतिदिन क्षीण होते गये। चिकित्सकीय उपचार से जब लाभ न हुआ तो वे पण्डित जी के पास आये और उन्हें अपने घर नाहन ले गये। पंडित जी ने वेद विचार के बाद पाया कि उन्हें विष एवं मशान खिलाया गया था। जन्त्र पिलाकर खून की उल्टी के साथ रोग कारण के बाहर निकलने के बाद उन्हें स्वास्थ्य लाभ हो पाया।

3. तहसील नाहन की ग्रामीण महिला बालो देवी को कुछ अधरंग से मिलता रोग हो गया था। उनकी मुखाकृति बदलकर भयंकर सी हो गई थी। एक आंख बहुत अधिक फूल सी गई थी। चिकित्सालय में पर्याप्त इलाज करवाया किन्तु स्वास्थ्य लाभ न हो पाया। पंडित जी के सम्पर्क में आने पर ग्रन्थ विचार द्वारा प्राप्त दोष निराकरण उपाय के पश्चात् यह महिला तीन दिन में पूर्ण स्वस्थ हो गई थी।

4. हरियाणा सीमा से लगते मोरनी के कुटली ग्राम के जगमोहन के लड़के को कुछ अनाम सा ऐसा रोग हो गया कि युवक होने पर भी उसका वजन 19 किलो तक रह गया। शरीर धीरे-धीरे घुलता सा गया। बहुत अधिक उपचार कराया किन्तु स्थिति बिगड़ती ही गई। अन्ततोगत्वा पण्डित जी तक पहुंचे और उनके ग्रन्थ प्रतिपादित उपचार के बाद पूर्ण स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया।

5. जिला टिहरी गढ़वाल के 'फिडोली' ग्राम के खेमराज की 44 वर्षीया धर्मपत्नी कुछ ऐसे रोग से आक्रान्त हुई कि उसका रोग निरन्तर बढ़ता गया। बहुत इलाज करवाया। यहां तक कि पी० जी० आई० से भी उपचार न होने पर डाक्टर ने वापिस घर भेज दिया। जीने की कोई आशा न रही। जनश्रुति से पण्डित जी की प्रसिद्धि सुनी तो उनके सम्पर्क में आये। साञ्चा ग्रन्थ विचार करके पण्डित जी ने अपना तान्त्रिक उपचार आरम्भ किया। शनैः शनैः स्वास्थ्य लाभ की स्थिति में वे पंडित जी के पास कई बार आते रहे। अब उन्हें पूर्ण स्वस्थ बताया जाता है।

पण्डित शिवानन्द जी का कहना है कि ऐसे उनके पास अनेक उदाहरण हैं। ऐसे उदाहरण इन एक के पास नहीं अपितु सभी पण्डितों के पास प्राप्त हो जाते हैं। उपर्युक्त उदाहरणों से यह भी पता चलता है कि इन पण्डितों को इस विद्या के माध्यम से बहुत दूर तक जाना जाता है।

निःसन्देह 'साञ्चा' ज्योतिष एवं विशेष रूप से तन्त्र विद्या का अनुपम ग्रन्थ है, जिसका प्रयोग प्राचीन काल से आज तक विज्ञ पण्डितों द्वारा बराबर किया जा रहा है।

साञ्चा ग्रन्थ की करामात

अति प्राचीन ग्रन्थ साञ्चा की विषय वस्तु भी अति विस्तृत है। मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन के संस्कारों के अवलोकनार्थ इसका प्रयोग किया जाता है। ग्राम गराड़ी, तहसील रेणुका निवासी पंडित लेखराम शर्मा द्वारा तैयार की गई 'साञ्चा विषय सूची' के अनुसार साञ्चा ग्रन्थ में काल ज्ञान होरें, भूत प्रश्न, सिद्ध संकल्या, प्रश्नावली की होर, लगन-तिथि होर, वार-नक्षत्र पीड़ा, पाशी चक्र, त्रिनाड़ी चक्र, मेघ नाड़ी चक्र, चौघड़िया, बालक जन्म लगन विचार, राशि-रेखा बिन्दु विचार, महादशा योगिनी दशा चक्र, वर कन्या मंगल विचार, सर्व कार्येषु आनन्दयोग, वार-लगन-चन्द्रादि विचार, मोहण आदि षट्कर्म, छाया नाश चक्र, गर्भथम्भ चक्र, तापनाश, मरि-मिरगी नास चक्र, वास्तू वारे विभिन्न ज्ञान .... आदि विविध विषय वस्तु का उल्लेख दर्शाया गया है। पंडित लेखराम ने अपने साञ्चे के 382 पृष्ठों में पृष्ठांकन सहित विविध 125 विविधताओं का उल्लेख किया है। वस्तुतः अनेक चमत्कारी मन्त्र-तन्त्र का संग्रह है- साञ्चा। उदाहरणार्थ 'दीप-बताना', 'चोली लगाना' आदि ऐसे प्रत्यक्ष दृष्ट चमत्कृत कर्म हैं जिनमें सम्बन्धित व्यक्ति मन्त्र शक्ति द्वारा परवश सा खिंचा चला जाता है। किसी बच्चे को पेट की 'साग' के उपचारार्थ प्रयुक्त मन्त्र शक्ति से नापने के लिये प्रयोग की गई सूखी छड़ी उतनी बढ़ती जाती है जितना रोग घटता है फिर उसे काटकर पुनः नाप के अनुरूप रखा जाये तथा दूसरे दिन पुनः रोग घटाव के साथ उसकी वृद्धि क्या आश्चर्य जनक नहीं है? इस विद्या के विज्ञ पण्डित उपर्युक्त एवं इनके अतिरिक्त भी विविध कार्य कलापों के लिये आज भी ख्याति अर्जित किये हुए हैं।

इन पंक्तियों के लेखक के पैतृक ग्राम भाटण (रेणुका) में भी चार साञ्चे उपलब्ध हैं जिनमें तीन भटाक्षरी तथा एक पाबुची लिपि में लिखित है। 'पाबुची' में लिखित साञ्चे का प्रयोग लेखक के पितामह स्व0 पंडित रामभज तथा ताया स्व0 बस्तीराम शर्मा किया करते थे। लगभग 85 वर्ष पूर्व यह साञ्चा पाबुची पण्डित द्वारा लिखवाया गया था जिसका क्रयमूल्य ताया जी के दामाद पंडित लेखराम शर्मा के कथनानुसार 'आठ बीशे' अर्थात् 8x20=160 चांदी के रुपये बताया गया है, जिसकी वर्तमान कीमत लगभग दस हज़ार रुपये बनती है। इससे साञ्चा ग्रन्थ की बहुमूल्यता भी सिद्ध होती है। इस ग्रन्थ में तन्त्र-मन्त्रों का अनुपम संग्रह बताया जाता है। अपने कार्यकाल में उपर्युक्त दोनों पण्डित इस विद्या द्वारा ख्याति अर्जित किये हुए थे। भटाक्षरी लिपि में लिखित साञ्चों का प्रयोग सर्वश्री पं0 कंठीराम शर्मा, भागचन्द एवं पूर्णलाल वंश परम्परया आज भी पूर्ववत् कर रहे हैं। पूर्णलाल के दादा स्व0 जातीराम तो विष उपचारार्थ विशेष ख्याति अर्जित किये हुए थे।

साञ्चा ग्रन्थ प्रतिपादित विद्या के विचारार्थ साञ्चे-पाशे का प्रयोग किया जाता है, जिसे 'गणना' कहा जाता है। किसी व्यक्ति के आधिभौतिक, आधिदैविक अथवा आध्यात्मिक रोग का कारण जानने अथवा गुप्त प्रश्न फलादेश जानने बारे 'गणना' कार्य किया जाता है, जिसका वर्णन "साञ्चा-पृष्ठभूमि एवं स्थिति: एक सर्वेक्षण" आलेख में किया जा चुका है।

इस आलेख के माध्यम से कुछ पण्डितों से साक्षात्कार कर उन द्वारा लोगों को हुए लाभ के कुछ उदाहरणों द्वारा साञ्चा ग्रन्थ की करामात (शक्ति) का वर्णन किया जा रहा है -

1. **पंडित राम नाथ शर्मा :-** ज़िला सिरमौर की तहसील रेणुका के मुख्यालय संगड़ाह से लगभग छः किलोमीटर दूर एक पहाड़ी ढलान पर बसा है- ग्राम कढ़याना। इस गांव के पंडित रामनाथ शर्मा साञ्चा ग्रन्थ द्वारा तान्त्रिक विद्या के लिए दूर-दूर तक प्रसिद्ध हैं। पं० रामनाथ भटाक्षरी एवं पाबुची दोनों लिपियों में लिखित साञ्चे का प्रयोग करते हैं। ग्राम बयओंग निवासी श्री कमना इनके गुरु रहे हैं तथा इनके पास खड़कांह से लिखा पाबुची साञ्चा उपलब्ध है। साञ्चे में प्रतिपादित विषयवस्तु के सुविज्ञ पं० रामनाथ दृष्टा, नज़र, ओपरा, लाग-लागीच के विशेषज्ञ माने जाते हैं तथा इस बारे लोग उनके पास दूर-दूर से आते हैं तथा इन्हें दूर-दूर ले जाते हैं। इनके माध्यम से सैंकड़ों लोगों को लाभ हुआ है। इनके कथनानुसार यहां कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं-

(क) कुछ वर्ष पूर्व संगड़ाह (कलियां) के कुनणु की औरत को एक बार अचानक झल्लाहट जैसी हो गई थी। आपे से बाहर होने की इस स्थिति को 'झाल लगना' कहा जाता है। झल्लाहट के साथ-साथ उसे फिट भी पड़ते थे। संगड़ाह तथा नाहन चिकित्सालय में पर्याप्त उपचार करवाया, किन्तु स्वास्थ्य लाभ नहीं हो पाया। कहते हैं डाक्टरों ने उसे निराश होकर वापिस घर भेज दिया था। बाद में पं० रामनाथ द्वारा तान्त्रिक उपचार करवाने पर वह न केवल पूर्ण स्वस्थ हुई बल्कि उसके पास तीन बच्चे भी हुए।

(ख) ग्राम टिकरी निवासी रेवती, जिनके पति पांवटा में सरकारी कर्मचारी हैं, को भी मिरगी के दौरे आने लगे तथा उसके अंग-प्रत्यंग में दर्द होने लगा। चिकित्सकीय उपचार पांवटा में करवाया किन्तु लाभ नहीं। स्वास्थ्य परीक्षण, एक्सरे आदि की रिपोर्ट साफ निकलती। जब उपचार न हो सका तो पंडित जी से सम्पर्क साधा। पंडित जी ने तान्त्रिक उपचार करते हुए वहीं पांवटा पुल पर ही पूजा दी तथा जल विसर्जन आदि समग्र विधान के पश्चात् उसे पूर्ण स्वास्थ्य लाभ हो गया।

(ग) ग्राम आमरा के श्री रामस्वरूप कमल की पुत्री कु० किरण को मानसिक

परेशानी, बेचैनी, झल्लाहट एवं फिट जैसी बीमारियों ने आ घेरा। कहते हैं जब राजगढ़, सोलन, शिमला चिकित्सालय से स्वास्थ्य लाभ नहीं हुआ तो पंडित रामनाथ ने साञ्चा ग्रन्थ द्वारा विचार किया। तत्पश्चात् कारणानुरूप तान्त्रिक उपचार करने पर ही पूर्ण स्वास्थ्य लाभ हुआ।

(घ) लगभग आठ वर्ष पूर्व ग्राम भुट्ली-मानल के नोखरू की बाईस वर्षीय पुत्री को मिरगी के दौर आने लगे। काफी दिनों तक राजगढ़ इलाज करवाया तथा बाद में चण्डीगढ़ भी ले गये किन्तु लाभ नहीं हुआ। बाद में पंडित जी ने साञ्चा ग्रन्थ द्वारा गणना कार्य कर विचार किया तो पाया कि उसे छाया लग गई थी। तब तदनुरूप जन्त्र-मन्त्र व तन्त्र सम्बन्धी उपचार किया, जिससे स्वस्थ होकर रोग मुक्ति मिल पाई।

(ङ) बोगधार विद्युत विभाग में कनिष्ठ अभियन्ता पद पर सेवारत (अब एस. डी.ओ. चाड़ना) श्री पठानिया जी की धर्मपत्नी बीना को अंग-प्रत्यंग में दर्द, दिली बेचैनी, अचानक रो पड़ना तथा कभी-कभी फिट पड़ना जैसी परेशानियों ने आ घेरा। साधन सम्पन्न पठानिया जी ने उपचारार्थ हज़ारों रुपये व्यय किये किन्तु स्वास्थ्य लाभ होता नज़र नहीं आया। पंडित जी की प्रसिद्धि सुनी तो इन्हें सादर बुला लिया। पंडित जी ने अपना तान्त्रिक व पूजा पाठ सम्बन्धी उपचार किया जिससे अब वे पूर्ण स्वस्थ हैं।

(च) साञ्चा ग्रन्थ द्वारा विचार करने पर नि:सन्तान दम्पतियों को सन्तान प्राप्ति के भी पर्याप्त उदाहरण देखने को मिलते हैं। कैंथ कुफर ग्राम के 45 वर्षीय कुन्दनसिंह के पास कोई सन्तान न थी। सन्तान प्राप्ति की इच्छा प्रत्येक गृहस्थी को होती है। अत: कुन्दनसिंह ने भी इस निमित्त पर्याप्त प्रयास किये, किन्तु इच्छा पूर्ण न हुई। बाद में पंडित जी द्वारा साञ्चे से विचार करवाया तो 'पापड़ा', 'लाठा' आदि का सही समाधान होने पर सन्तानोत्पत्ति हो पाई।

(छ) टिकरी डसाकणा के 'धिरोआण' वंशज श्री दिलीपसिंह, रूपसिंह आदि के पूरे परिवार में मात्र दो कन्याएं ही थीं। पुत्र अभिलाषा से पंडित जी द्वारा गणित फलादेश विचार करवाया। पंडित जी ने बताया कि बाद में उनके पास पुत्रों की शृंखला में दिलीपसिंह के पास ही पांच पुत्र हो गये।

पंडित रामनाथ के पास ऐसे अनेक उदाहरण हैं। आज भी लोग पंडित जी को तान्त्रिक कार्यों के लिये दूर-दूर तक ले जाते हैं, यही कारण है कि पंडित रामनाथ अपने ग्राम व घर में बहुत कम मिल पाते हैं। पंडित जी की प्रसिद्धि सैणधार नाहन, पांवटा, शिलाई तथा जुब्बल तक फैली हुई है।

2 पंडित मोहन लाल शर्मा :- संगड़ाह के साथ ही पंडितों का एक गांव है- डाहर। वहां की 'खोंर-वाण' वंशावली में प्रसिद्ध तान्त्रिक पंडित हुए, जिनके वंशजों में वर्तमान में पंडित मोहनलाल पांडित्य कर्म संरत हैं। साञ्चा ग्रन्थ विशेषज्ञ अपनी वंशावली के पूर्व पंडितों का क्रम प्रतिपादन करते हुए पं० मोहनलाल ने बताया कि उनके पूर्वजों में सर्वश्री रोडाराम, सिरिया, खोंरू, मेहरसिंह, गंगाराम आदि सुप्रसिद्ध पंडित हुए जिनमें खोंरू एवं मेहरसिंह को तो आज भी याद किया जाता है। पं० मोहनलाल ने वंश परम्परया प्राप्त ज्ञान के अतिरिक्त सैंज निवासी प्रसिद्ध पंडित मोहरसिंह का शिष्यत्व ग्रहण कर छाया एवं उपचार में विशेषज्ञता प्राप्त की। कुछ उदाहरणों का ज़िक्र करते हुए उन्होंने बताया-

(क) ग्राम लुधियाणा वासी वास लाणा पालर में रह रहे श्री सूरतराम की पत्नी सुगना अस्वस्थ रहने लगी। कालान्तर में उसे एक बार सांप ने काटा, जिससे बेचैनी-परेशानी का बढ़ना स्वाभाविक था। ग्रामांचल में एक उक्ति प्रसिद्ध है- "सांप रोष से काटता है अथवा दोष से।" इस उक्ति के अनुरूप उन्होंने पंडित जी से दोष कारण जानना चाहा तो पंडित ने गणना द्वारा पापड़ा-छाया दोष पाया तथा तन्निमित्त पूजा-पाठ के लिए सुझाया। पंडित जी ने बताया कि पूजोपचार के समय उस महिला को स्वयं छाया प्रकट हुई, जिससे उसने अपने मुख से ही सारा दोष बताया। तब तत्सम्बन्धी समग्र 'ठठ-मठ' करने के बाद पूर्ण स्वस्थ होकर वह महिला अपना जीवन यापन कर रही है।

(ख) ग्राम लगनु निवासी सुन्दरु को फिट पड़ते थे तथा उसे अधरंग की शिकायत हो गई थी। बुलाये जाने पर पंडित जी को वहां जाते समय किसी वरिष्ठ व्यक्ति ने बताया कि अब वहां जाकर कोई लाभ नहीं, क्योंकि स्थिति अति शोचनीय हो गई थी। किन्तु पंडित जी ने जाकर अपना तन्त्र-मन्त्र सम्बन्धी उपचार आरम्भ किया। तीन दिन लगातार पूजा-पाठ करते रहने पर वह व्यक्ति स्वस्थ हो गया और अब मिस्त्री का कार्य करते हुए स्व आजीविका कमा रहा है।

(ग) मंडोली ग्राम वासी डंडलु की पुत्री प्रतिदिन की भांति बकरियां चुगाने गई थी। वहां वह विश्राम कर रही थी कि उसकी आंख लग गई। उसे लगा जैसे उसे किसी ने आकर दबाया। उसकी नींद खुली तो वह सहमी-सहमी सी थी। अचानक उसकी जुबान बन्द हो गई, जो सात दिन तक बन्द रही। पंडित जी ने गणना कार्य कर यह पाया कि उसे देवी मातृ की शुद्ध छाया लग गई थी। तब तदनुरूप जल के पास, मन्दिर में तथा ऊंची धार पर पूजन करने के बाद उसे ज़ुबान आई तथा उसने सारी बात अपने मुंह से बताई, जिसमें बलि पूजन का निषेध तथा शुद्ध पूजन पर बल दिया गया। तब तदनुरूप पूजन करने पर वह पूर्ण स्वस्थ हो गई।

(घ) गनोग भोज के ग्राम ऊंचा टिक्कर का एक व्यक्ति अपनी रिश्तेदारी में पालर आया हुआ था। उसे वहां असह्य शिरोवेदना हुई। साथ ही उसे खूनी उल्टियां भी होती गईं। पंडित जी ने ग्रन्थ विचार किया तो उसका कारण विष पान (धीमा ज़हर) पाया। तब तत्सम्बन्धी यन्त्र-मन्त्र युक्त 'धागा' पहनाये जाने से शनैः शनैः उससे मुक्ति मिल पाई।

(ङ) ग्राम डुंगी निवासी प्रेमसिंह की नवयुवती पुत्री सत्या एक बार सड़क से गिर गई। वहां निकट श्मशान घाट पर वह भयभीत हो गई। वहां कोई छाया लग जाने से वह बेहोश हो गई। बाद में होश आने पर वह लगभग पागल ही हो गई। संगड़ाह चिकित्सालय में उपचार चलता रहा, किन्तु लाभ नज़र नहीं आया। तब पंडित जी से तान्त्रिक उपचारार्थ अनुरोध किया। पंडित मोहनलाल जी ने पहली पूजा वहीं चिकित्सालय में ही दी तथा तब किञ्चित् लाभ होने पर विधानानुरूप जल, मन्दिर, शिखर आदि पर पूजन करने के बाद वह पूर्ण स्वस्थ हो गई, जिसके बाद अब वह सानन्द गृहस्थ आश्रम में रह रही है।

3. पंडित लेखराम शर्मा :- तहसील रेणुका में ही एक ग्राम है- गराड़ी। यहां के पंडित लेखराम शर्मा जो अब लाणा पालर में रह रहे हैं, के पास वंश परम्परया प्राप्त एक विशेष 'साञ्चा' ग्रन्थ है। पंडित जी के पिता श्री बुधराम जी अपने 'साञ्चा' ग्रन्थ के माध्यम से तन्त्र विद्या में ख्याति अर्जित किये हुए थे। उनकी प्रसिद्धि यहां तक बताई जाती है कि किसी बच्चे को "लाग-लागीच" लगने की स्थिति में चोकर, भंगाड़ी आदि ग्रामों में 'न्हौरा देने'. की बात की जाती थी। अर्थात् यदि किसी बच्चे को 'लागीच' लग जाता तो सम्बन्धित परिवार का व्यक्ति अथवा महिला घर की छत पर जाकर ऊंचे स्वर से कहते कि यदि मेरे बच्चे का 'लागीच' न हटा तो हम पं0 बुधराम को बुला लेंगे। कहने का अभिप्राय यह है कि इस विद्या में उनका अपना प्रभुत्व था। उन्हीं के सुपुत्र पं0 लेखराम भी आज 'साञ्चा' ग्रन्थ का प्रयोग करते रहे हैं। इनके गुरु पंडित गुणानन्द उर्फ गुलाबा स्यूं निवासी रहे हैं। पंडित जी के पास जो 'साञ्चा' है, उसे मूल साञ्चे से पंडित मुकुन्दराम शर्मा जिला गढ़वाल-पट्टी असवाल स्यू मौजा गोविन्द पुर ने सम्वत् 1982 में लिखा है।

पंडित लेखराम शर्मा के पास जो 'साञ्चा' है वह न तो पूर्णतः पाबुची में है और न ही भटाखरी में। पंडित जी ने बताया कि इसके कुछ लिपि चिह्न पाबुची के तथा कुछ भटाखरी से मिलते हैं। जबकि कुछ इनसे भिन्न अलग ही लिपि की ओर संकेत करते हैं, जिसके लिपि नाम से पंडित जी स्वयं को भी अनभिज्ञ बतलाते हैं। गराड़ी के इन पंडितों के पास प्राप्त विद्या को 'भूत विद्या' के नाम से भी जाना जाता है। कहते हैं भूत विद्या सम्बन्धी वह मूल साञ्चा तो घर के कोने की दीवार

में बन्द करके रखा गया है। पंडित लेखराम का कथन है कि उस घर में आज भी कुछ विशेष चमत्कारिक घटनाएं होती देखी व अनुभव की जा सकती हैं।

उस मूल 'साञ्चा' ग्रन्थ की प्राप्ति बारे एक रोचक आख्यान सुनाते हुए पंडित लेखराम शर्मा ने बताया कि पालर नदी में 'उबांव' नामक जल कुण्ड प्रसिद्ध है, जहां भूत निवास बताया जाता है। उसके समीप ही एक महिला घास काट रही थी। वहां साधारण नर वेष में कोई आया और उसने उस महिला से दाई (प्रसव विशेषज्ञ महिला) बारे पूछा। उस महिला ने ग्राम डुंगी की तत्कालीन किसी दाई का नाम बताया तो वह आदमी उस महिला को लेने डुंगी गांव आया। वहां से दाई को साथ लेकर जब वह आदमी कुण्ड किनारे आया तो उसने महिला को आंखें बन्द करने को कहा। वैसा करने पर उसने महिला सहित ही पानी में डुबकी लगाई। पानी के अन्दर जाकर वह उस महिला को कहीं सूखे स्थान पर ले गया। वहां उस दाई ने प्रसव कराया तो लड़का उत्पन्न हुआ। अब उस पुत्र के जन्म कुण्डली आदि बनवाने हेतु पंडित बारे पूछा तो दाई ने गराड़ी के पंडित का पता बताया जो कि इन्हीं पंडित के पूर्वज बताये जाते हैं। तब वह आदमी उसी तरह पंडित को भी गराड़ी से साथ लाया। पंडित ने जब अन्दर जाकर कुण्डली बनाकर बच्चे के जन्म फलादेश आदि का ज्ञान कराया तो कहते हैं उस व्यक्ति ने पुरस्कार स्वरूप पंडित जी को एक खाली साञ्चा ग्रन्थ तथा उस दाई को ढक्कन द्वारा ढककर एक 'असकापरी' दी तथा उन दोनों को घर तक न खोलने का निर्देश दिया। कहते हैं उत्सुकता वश दाई ने तो आधे रास्ते में उसे खोलकर देखा तो पाया कि आधे भाग में सोना तथा आधे में राख पड़ी थी। पंडित ने घर जाकर ही उस ग्रन्थ को खोला तो उसे एक विशेष लिपि में लिखा पाया जिसका ज्ञान भी उन्हें अनायास ही हो गया और तब वह विद्या भूतविद्या के नाम से प्रसिद्ध हुई। यद्यपि कालान्तर में उस मूल साञ्चे को तो छिपा दिया गया तथा अत्यावश्यक विषय का संकलन कर अन्य साञ्चे का प्रयोग किया जाता रहा।

सम्वत् 2002 के श्रावण माह में पंडित लेखराम का जन्म हुआ जबकि दो माह पूर्व ज्येष्ठ माह में उनके पिता का निधन हो गया था। बुजुर्गों ने राय दी कि जन्म से ही इस साञ्चे को बच्चे के सिरहाने टांग कर रखा जाये। यह क्रम चलता रहा। पंडित लेखराम का कथन है कि कुछ बातों का ज्ञान उन्हें भी अनायास ही होता रहा तथा कुछ ज्ञान उन्होंने बाद में गुरु से प्राप्त किया। पंडित जी का आज भी नियम है कि वे अपने साञ्चे को रात सोते समय सिरहाने में टांग लेते हैं। वंश परम्परया सुरक्षित उपर्युक्त आख्यान तथ्यों पर कितना आधारित है ? यह तो वे ही जानें, किन्तु पंडित लेखराम शर्मा अपने 'साञ्चा' ग्रन्थ द्वारा प्रसिद्धि प्राप्त

किये हुए हैं। कुछ उदाहरण जानने बारे जिज्ञासा प्रकट करने पर उन्होंने बताया-

(क) नौहराधार के समीपवर्ती ग्राम उलाणा निवासी उजागरसिंह को अंग-अंग में दर्द रहने लगा। स्थानीय चिकित्सकों के अतिरिक्त नाहन व सोलन चिकित्सालयों में भी उपचार कराया किन्तु स्वास्थ्य लाभ नहीं हो पाया। कई पंडितों की भी शरण ली किन्तु रोग से छुटकारा न मिल पाया। अन्ततोगत्वा पंडित शर्मा के पास भी आये। पंडित जी ने विद्या विचार किया तो पाया कि उन्हें कुछ 'किया-कराया' गया था तथा भूत छाया भी लग गई थी। पंडित जी ने पूजा-पाठ किया। समग्रतः पूजोपचार के बाद अब वे स्वस्थ होकर जीवन बिता रहे हैं।

(ख) ग्राम कुफर काइरा के लालसिंह का लगभग पूरा परिवार ही अस्वस्थ रहने लगा। समूचे परिवार की धीमी अस्वस्थता को स्थानीय बोली में 'घिरजोग' कहा जाता है। वे पंडित जी के पास आये और पंडित जी के शुद्ध पूजोपचार के पश्चात् समस्त परिवार सुख चैन से रहने लगा।

(ग) अपनी धर्मपत्नी नारदा देवी का ही उदाहरण देते हुए पंडित् जी ने बताया कि वह चिड़चिड़ापन जैसी स्थिति में रहने लगी। पंडित जी ने विद्या विचार कर देखा तो पाया कि उसे विष दिया गया था। पंडित जी ने उपचारार्थ यन्त्र पिलाया तथा पहले ही बता दिया कि इससे उसे अधिक तकलीफ भी हो सकती है। पूर्व कथनानुसार श्रीमती नारदा को बहुत ज़ोर से पेट दर्द के साथ उल्टी व दस्त एक साथ होते रहे। संयोग वश कुफर निवासी लालसिंह भी अपने काम के सम्बन्ध में इसी दिन घर आया था। नारदा की तकलीफ देखकर वह भी विचलित हो उठा तथा वहीं स्वयं चिकित्सक लाने की बात करने लगा। बाद में पंडित जी ने एक अन्य शान्ति प्रद यन्त्र का पान कराया तो उन्हें मानसिक शान्ति के साथ-साथ स्वास्थ्य लाभ भी हो गया। इस प्रत्यक्ष दृष्ट घटना से लालसिंह के मन पर भी गहरा प्रभाव पड़ा तथा पंडित जी के प्रति श्रद्धा भी बढ़ी। बाद में पूर्व लिखित उदाहरणानुसार उसे भी सपरिवार सौख्य प्राप्त हुआ।

(घ) डेबर घाट निवासी कुन्दन सिंह का पुत्र सुदामा पागल हो गया था। उसकी दशा अति दयनीय हो गई थी। वह न केवल अपने ही बल्कि दूसरों के भी वस्त्र फाड़ लेता था। पंडित जी को ले जाया गया तथा प्रथम पूजन द्वारा ही पर्याप्त शान्ति मिली। बाद में पाक्षिक पूजन द्वारा तीन पूजन करने पर वह पूर्णतः स्वस्थ हो गया।

(ङ) लाणा चेता से पार तथा दीदग से नीचे दौलतां नाम का एक व्यक्ति बेचैनी, मिरगी जैसी परेशानी से आक्रान्त हो गया। उसे भी कोई छाया लग गई थी। उसका आदमी पंडित जी के पास आया, पंडित ने 'बान्धा' दिया, तथा उससे

ही पर्याप्त लाभ हो गया। किन्तु निश्चित अवधि बीत जाने पर वह पुनः अस्वस्थ हो गया। तब वे पंडित जी को अपने घर ले गये जहां समस्त पूजा उपचार के बाद वह पूर्ण स्वस्थ हो गया।

पंडित लेखराम शर्मा की यह विशेषता है कि ये समस्त उपचार शुद्ध पूजन द्वारा ही करते हैं। ये कभी भी जीव बलि नहीं लगाते तथा शुद्ध व पवित्र सामग्री द्वारा ही पूजोपचार करते हैं।

4 पंडित मोहर सिंह :- ग्राम सैंज (रेणुका) निवासी श्री मोहरसिंह सुप्रसिद्ध पण्डित हैं। ये मूलतः खादर (जुब्बल क्षेत्र शिमला) के रहने वाले हैं जो अब आठवीं पुश्त से सैंज में रह रहे हैं। इनके पास उपलब्ध 'पाबुची' साञ्चे को इन्होंने देवनागरी में भी लिखा है और प्रायः इसी का प्रयोग करते हैं। तन्त्र विद्या के लिए ख्याति प्राप्त पं0 मोहरसिंह विष उपचार विशेषज्ञ मानें जाते हैं। प्रत्येक बुध, शुक्र, अमावस्या, अष्टमी व पूर्णिमा को इनके पास लोगों की भीड़ जुटी रहती है। लगभग 70 वर्षीय पंडित जी घर से बाहर बहुत कम जाते हैं तथा लोग इन्हीं के घर आकर इन द्वारा निर्मित 'धागा' सादर ग्रहण करते हैं। पंडित जी ने बताया कि महीने के प्रथम बुध व शुक्र को तो इनके पास लोगों का इतना तांता लग जाता है कि ये दिन का भोजन भी ग्रहण नहीं कर पाते। पंडित जी ने आगे बताया कि उपर्युक्त दिनों इनके पास 50 से 70 तक लोग प्रायः आते हैं। संयोगवश लेखक भी बुध को पंडित जी से मिला तो देखते ही देखते पंडित जी के पास ग्राम डुंगी, रनवा, गेहल, भलाड़, हरिपुरधार, घंडूरी, दाणा घाटों, शामना, संगड़ाह, लुधियाणा, (रेणुका) छोग टाली (पछाद) तथा राजकीय उच्च पाठशाला अन्धेरी में मुख्याध्यापक (नाहन निवासी) इतने व्यक्ति एक साथ ही आये। लगभग दो घण्टे वहां रहने पर लगभग 25 व्यक्ति लेखक के समक्ष वहां आये व अपनी-अपनी परेशानियों से पंडित जी को अवगत कराया।

जैसा पहले उल्लेख किया गया है पंडित जी विष (धीमा ज़हर) उपचार विशेषज्ञ माने जाते हैं। इस निमित्त वे यन्त्र-मन्त्र व तन्त्र का प्रयोग करते हुए एक 'धागा' तैयार करते हैं जिसे पीड़ित पुरुष की दाईं तथा महिला की बाईं भुजा में बांधा जाता है। इस निमित्त पंडित जी रंगीन धागों को बट लगाकर, कागज पर यन्त्र लिखकर उसे अभिमन्त्रित कर धागे में बांध देते हैं। साथ तिलक लगाने के लिए सिन्दूर एवं कुछ अक्षत भी अभिमन्त्रित करते हैं। तब दूर जाने की स्थिति में भाभर-कुंकुआ (बिच्छू बूटी) के पत्ते में सम्बन्धित व्यक्ति को आवश्यक निर्देश के साथ दे देते हैं। यह पूछे जाने पर कि इस समस्त सामग्री को बिच्छू बूटी के पत्ते में क्यों लपेटा जाता है ? पंडित जी ने बताया कि दूर जाने की स्थिति में नदी-नाला अथवा पहाड़ पार करने पर मन्त्र-तन्त्र शक्ति का ह्रास हो जाता है। उसे बचाने के लिए बिच्छू

बूटी बोडीगार्ड (अंगरक्षक) का काम करती हैं। पंडित जी ने और बताया कि इस मन्त्र-तन्त्र शक्ति को जानने के लिए साधना की महती आवश्यकता होती है। अस्तु .... पंडित जी अपनी साञ्चा ग्रन्थ प्रतिपादित 'गणना' एवं तन्त्र-मन्त्र विद्या के लिए सुदूर क्षेत्र तक प्रसिद्धि प्राप्त किये हुए हैं। उनसे कुछ उदाहरण जानने बारे जिज्ञासा प्रकट करने पर उनके कथनानुसार–

(क) तहसील नाहन के ग्राम नंडासा निवासी नंदलाल सन् 1992 के रेणुका मेले में आये हुए थे। वहां से वे पाहुनचारी में अपने ससुराल सँगड़ाह भी आये। वापसी में ददाहू से पार जाते हुए उन्हें बस में ही लगा जैसे किसी ने उन्हें बड़े ज़ोर का थप्पड़ मार दिया हो। आंखों के आगे अंधेरा छा गया और साथ ही जुबान भी बन्द हो गई। घर जाकर घरेलु उपचार करवाया, कुछ पण्डितों व महात्माओं की भी शरण ली, किन्तु जुबान नहीं खुल सकी। चिकित्सकीय उपचार भी किया, किन्तु व्यर्थ। हताश होकर अमृतसर जाने का विचार बनाया। साथ में सहयोगी लेने के लिए पुन: किसी सम्बन्धित के साथ संगड़ाह ससुराल आये। तब तक जुबान बन्द रहे उन्हें 21 दिन हो गये थे। संगड़ाह आने पर सलाह दी गई कि जब तक अमृतसर की पूरी तैयारी हो सके, तब तक सैंज निवासी पंडित मोहरसिंह जी के पास ही जाया जाये। नन्दलाल अपने सहयोगी के साथ सैंज आये। पण्डित जी ने अपने 'साञ्चा' ग्रन्थ द्वारा विद्या विचार किया तो पाया कि उन्हें कुछ तान्त्रिक रूप से कराया गया था। पंडित जी ने तदनुरूप जन्त्र-मन्त्र शक्ति का प्रयोग कर धागा बनाया और वापिस संगड़ाह भेज दिया। रात को पंडित जी के कथनानुसार स्नानादि के पश्चात् शुद्ध होकर धागे को धूप देकर अपनी भुजा पर बांधकर रात्रिशयन किया। कहते हैं दूसरे दिन प्रात: जागकर सास चाय लेकर उनके कमरे में गई और उन्हें जगाते हुए क़हा-बेटा चाय पी लो। सास की अकस्मात् हर्ष से अश्रुधारा फूट पड़ी, जैसे ही नन्दलाल ने उठते हुए कहा- 'मत्था टेकू'। इक्कीस दिनों बाद अकस्मात् आई जुबान से सभी सदस्यों के हर्ष की सीमा न रही। तब वे पुन: पण्डित जी के पास गये और उनका हार्दिक आभार प्रकट किया।

(ख) ग्राम बयरा (जुब्बल) निवासी बंशी की पत्नी नोमी दिन प्रतिदिन कमज़ोर होती गई। कहते हैं उनका शिमला सनोड़न, सोलन, नाहन व हरपटपुर भी उपचार करवाया किन्तु स्वास्थ्य लाभ नहीं हुआ। डाक्टर ने उनके स्वास्थ्य बारे निराशा ही प्रकट कर दी थी। हताश बंशी पंडित जी के पास सैंज आया। 'गणना' करने पर पंडित जी ने पाया कि उसे विष दिया गया था। पंडित जी के प्रसिद्ध उपचार तीन मासों द्वारा ही उसे पूर्ण स्वास्थ्य लाभ हो गया।

(ग) लुध्याणा (रेणुका) निवासी पूर्व प्रधान दीपराम बिल्कुल पागल हो गये

थे। कहते हैं वह अपनी पत्नी, रिश्तेदार जो भी मिलने आता सभी को थप्पड़ मारते। चिकित्सा विज्ञान से जब स्वास्थ्य लाभ न हुआ तो पण्डित जी के पास आये तथा तीन धागों द्वारा पूर्ण स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया।

(घ) ग्राम डाहर निवासी पंडित मोहनलाल जी का पूर्वोल्लेख किया जा चुका है, किन्तु आरम्भ में एक बार उन्हें भी 'झाल' लग गई थी। पंडित मोहरसिंह जी के उपचार द्वारा ही उन्हें स्वास्थ्य लाभ हुआ और तब उनसे प्रभावित हो उन्हें गुरु धारण कर साञ्चा विद्या प्राप्त की।

(ङ) ग्राम टिकरी डसाकणा के दिलीपसिंह को शरीर कम्पन रहने लगा। रोग बढ़ते-बढ़ते वे अचेत भी रहने लगे। स्थानीय चिकित्सालयों के अतिरिक्त नाहन सोलन व शिमला से भी जब स्वास्थ्य लाभ नहीं हुआ तो पंडित जी से सम्पर्क साधा तथा इनके पाण्डित्योपचार से स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया।

(च) देहरादून निवासी 7 सदस्यीय सरदारों का दल एक बार पंडित जी के घर पहुंचा। उन्होंने बताया कि उनका बेटा जम्मू कश्मीर में पढ़ता था। वहीं उसे पागलपन हो गया। सामर्थ्य सम्पन्न होने के नाते पर्याप्त उपचार कराया किन्तु लाभ नहीं हो पाया। उन्होंने बताया कि उन्हें पांवटा निवासी सरदार ज्ञानचन्द ने पंडित जी का पता बताया तो उनके पास आये। पंडित जी ने अपने 'साञ्चा' ग्रन्थ द्वारा विद्या विचार किया तथा तदनुरूप अपना उपचार आरम्भ करते हुए उन्हें 'धागा' दिया। कहते हैं उन्हें पहले ही उस 'धागे' से पर्याप्त लाभ हुआ तो वे पूर्णोपचार हेतु तीन बार आकर 'धागा' ले गये व पूर्ण स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया।

5. पं0 मनिराम :- ज़िला सिरमौर की तहसील शिलाई के ग्राम 'खड़कांह' में प्रसिद्ध पाबुच पंडित रहते हैं। यहीं के निवासी हैं पंडित मनिराम जो वंश परम्परया प्राप्त पाबुची साञ्चे का प्रयोग करते रहे हैं। कुछ ही उदाहरण देते हुए इन्होंने बताया-

(क) ग्राम धिराइना (नैनीधार) की भागदेवी पुत्री श्री मौलूराम पागल हो गई। सरकारी चिकित्सालय में पर्याप्त उपचार के पश्चात् भी जब स्वास्थ्य लाभ न हुआ तो डाक्टरों ने वापिस घर भेज दिया। तब वे पंडित जी के पास आये जिससे तान्त्रिक पूजा-पाठ आदि पूर्णोपचार के बाद वह पूर्ण स्वस्थ हो गई तथा गृहस्थ आश्रम में सन्तति लाभ भी प्राप्त किया।

पंडित जी ने आगे बताया कि उनके पास ऐसे अनेक उदाहरण हैं। सिरमौर, शिमला व आस-पास के अन्य क्षेत्रों के अतिरिक्त लोग दूर-दूर से भी इनके पास आते हैं, जिनमें (1) शूरवीर प्रधान ग्राम विंदरी, ज़िला देहरादून, उत्तर प्रदेश, (2) यश पाल भगत, जूस भण्डार- शाहबादपुर कुरुक्षेत्र (3) गुलाबसिंह प्रधान ज़िला

टिहरी गढ़वाल तथा (4) रामसिंह ज़िला उत्तरकाशी उत्तर प्रदेश आदि उदाहरण द्रष्टव्य हैं।

ग्राम खड़कांह के सुविज्ञ पण्डित हैं- श्री देवीराम पाबुच जो सुदूर क्षेत्र तक ख्याति अर्जित किये हुए हैं। भाषा अकादमी द्वारा साञ्चा सम्बन्धी इस सर्वेक्षण कार्य में भी इनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। साञ्चा ग्रन्थ की करामात बारे पूछने पर इन्होंने बताया कि इस ग्रन्थ की करामात का वर्णन नहीं किया जा सकता। यदि इस ग्रन्थ व विद्या में करामात न होती तो उनके पास सैंकड़ों लोग क्यों आते ? इनका कथन है कि इनके पास लोगों का तारतम्य निरन्तर बना रहता है।

सारांश :- उपर्युक्त वर्णन के अनुसार कुछ पण्डितों से प्राप्त जानकारी के आधार पर कहा जा सकता है कि साञ्चा ग्रन्थ निःसन्देह मन्त्र-तन्त्र विद्या का अनुपम भण्डार है। ऐसे अनेक उदाहरण लेखक ने स्वयं भी देखे व अनुभव किये हैं कि किसी व्यक्ति को किसी रोग की स्थिति में चिकित्सालय में उपचार के अन्तर्गत उसके सभी टेस्ट परीक्षण बिल्कुल साफ निकल आते हैं। उस स्थिति में शारीरिक चिकित्सा विज्ञान कुछ ढीला पड़ने लग जाता है। ऐसी आधिदैविक अथवा आध्यात्मिक पीड़ा का उपचार तब दैवी शक्ति अथवा तन्त्र-मन्त्र शक्ति से करवाया जाता है और लाभ भी होते देखा गया है। प्रस्तुत आलेख में दर्शाये गये उदाहरणों से स्पष्ट है कि न केवल हिमाचल अपितु अन्य राज्यों तक से लोग इन पण्डितों के पास आते रहे हैं और अभीष्ट लाभ प्राप्त करते रहे हैं।

सारांशतः कहा जा सकता है कि 'साञ्चा' अनेक चमत्कारिक विद्याओं का अनुपम आकर है तथा इसकी वास्तविक करामात को एतद् विषय विशेषज्ञ पण्डित ही जान सकते हैं।

❑

पाबुची लिपि में प्राप्त प्राचीन साञ्चे

देवराज शर्मा

हिमाचल प्रदेश में ज़िला सिरमौर के ग्राम खड़कांह में पाबुच पण्डित रहते हैं। इस ग्राम में पाबुचों के बयालीस परिवार व घर हैं। ये पण्डित एक ही गोत्र के हैं। इन पण्डितों के पास गणना करने के 96 सांचे हैं और तीन मूल सांचे। मूल साञ्चों को गणना सम्बन्धी कार्यों के लिए बाहर नहीं ले जाया जाता। केवल पूजा के लिए ही विशेष अवसरों पर इन्हें बाहर निकाला जाता है। पाबुच पण्डितों के कुछ परिवार हिमाचल प्रदेश के ज़िला शिमला में तथा कुछ परिवार उत्तर प्रदेश के ज़िला देहरादून, तहसील चकरौता में रहते हैं। इस प्रकार इन परिवारों की संख्या 200 के लगभग बनती है। इसके अतिरिक्त इस लिपि को जानने वाले पाबुचों के शिष्यों के हिमाचल और उत्तर प्रदेश में बड़ी संख्या में गांव पाए जाते हैं जो इस लिपि के सांचों से पहाड़ी क्षेत्र का ब्रह्मकर्म पुश्तों से करते आ रहे हैं।

1. पाबुची लिपि में अब तक प्राप्त सबसे प्राचीन सांचा विक्रम संवत् 1503 का लिखा मिलता है। सांचा लेखक श्री धना पाबुच हैं। सांचे का आकार 7''X6½'' X2½'' है। इसमें गणना, खुजित्रा, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र तथा पुराणों का विवरण उपलब्ध है।

2. दूसरे नम्बर के प्राचीन सांचे का संवत् तथा लेखक का नाम जो प्राप्त सांचे में उपलब्ध है, इस प्रकार है:- "सांचा लिखा बगण पाबुचे ज्योतिषिए, संवत् साल 1543 के, म्हीना माघ गते सात, जीववार, श्रवण नक्षत्र शुक्ल, पक्ष द्वादशी तिथि, अमृत बेला पर। उगत बांचणे का, चिरी बणाणे का। चिरी के सिवा एसी सांचे दो उको किएं न लिखणो जी। रामसत माने जी।" इस प्रकार विक्रम सम्वत् 2051 में इस सांचे को लिखे 508 वर्ष हो गए हैं। इस सांचे का आकार 10''X7½''X3''

है। यह सांचा उगत, पुराण, यन्त्र, मंत्र-तन्त्र तथा फलादेश से सम्बन्धित है।

3. तीसरा सांचा विक्रम सम्वत् 1555 में श्री सूरदास पाबुच द्वारा लिखा मिलता है। सांचे का आकार 5''X4''X3'' है। यह भी उगत का सांचा है तथा इससे पञ्चांग तैयार किया जाता है।

4. सांचा लेखक जोगी पाबुच, सम्वत् 1559। सांचे का आकार 6''X2½''X½'' है। इस सांचे में मकान का मुहूर्त, विवाह मुहूर्त, मकान की मिट्टी इत्यादि देखना, हर प्रकार के शकुन व फलादेश आदि विषय हैं।

5. सांचा लेखक श्री सूरदास पाबुच, सुपुत्र श्री छणी पाबुच। यह सांचा संवत् 1603 का लिखा पाया जाता है। "सांचा लिखा सूरदास पाबुचे, छणी के बेटे, सम्वत् 1603 की कात्ती म्हीने गते 20, बार चन्द्र, नखत्र अनराज, 9 घड़ी, तीथ नौमी, 44 घड़ी। उगत का सांचा, चिरी बणाणे का।। ग्रह सुपाष्टु और सारणी और सम्वत् बणाणे का।। यह सांचा सम्वत् 2051 में 448 वर्ष पुराना हो चुका है। यह उगत का सांचा है। इसके अनुसार चिरी (पञ्चांग) तैयार की जाती है। इस सांचे में दोष आदि फलादेश नहीं हैं। सांचे का आकार 7''X7''X1'' है।

6. सांचा लेखक श्री रामदिया पाबुच, सम्वत् 1666। "सांचा लिखा रामदिया पाबुचे ज्योतिषिए, सम्वत् साल 1666 की म्हीना चईत, गते बारह, शुक्रवार नखत्र तीश, घड़ी 37, तिथ पूरण माशी, घड़ी 24, अमृत की घड़ी, लाभ वेला।।"

इस सांचे में पुराण, पूजन, गणित, मुहूर्त चिन्तामणि, मन्त्र जोगणाअ, खुजित्रा आदि विषय हैं। यह सांचा आम सांचे की तरह गणना के लिए प्रयुक्त नहीं होता।

7. सांचा लेखक श्री हरभजन पाबुच, सुपुत्र श्री रामदिया। "सांचा लिखा हरभजन पाबुचे, रामदिया के बेटे, शीरी सम्वत् साल 1704 की, म्हीना माघ, गते चौबीस, बार जिव, नखत्र हस्त, तिथि एकादशी को सम्पूर्ण किया। आज यह सांचा 346 वर्ष पुराना है। यह सांचा ब्राह्मण कर्म करने के लिए बाहर ले जाया जाता है। इसे 'पोथी-पाशा' भी कहते हैं।

8. सांचा लेखक राजमल पाबुच, सुपुत्र दुर्गू ज्योतिषी, संवत् 1810 "सांचा लिखा राजमल पाबुचे हरभजन के बेटे दुर्गू ज्योतिषी, संवत् 1810 की, म्हीना माघ गते 17, रेउती नक्षत्र, बसन्त पञ्चमी का दिन है जी।।"

सांचे का आकार 7½" X6½" X2½" है। यह सांचा गणना, पुराण तथा यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र से सम्बन्धित है।

9. सांचा लेखक श्री जोगी पाबुच। सांचा लगभग 150 वर्ष पुराना है। सांचे का आकार 7½" X6½" X3" है। यह सांचा गणना, खुजित्रा तथा यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र से

सम्बन्धित है।

10. सांचा लेखक बस्तीराम सुपुत्र श्री वीरसिंह पाबुच। यह सांचा लगभग 150 वर्ष पुराना है। सांचे का आकार 7" X6½" X2" है। इसमें गणना, पुराण, मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र आदि विषय हैं।

11. सांचा लेखक श्री खुशालमणि। सम्वत् 1985 में लिखित। सांचे का आकार 7"X6½" X4" है। यह सांचा देवनागरी लिपि में उपलब्ध है। इस सांचे में गणना, ज्योतिष, फलादेश तथा यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र विषय हैं।

12. सांचा लेखक श्री हीरा सिंह। सांचा लगभग 140 वर्ष पुराना है। इसका आकार 6''X4''X½" है। सांचे में गणना, फलादेश तथा साठ व्याधि-यंत्र हैं।

13. सांचा लेखक श्री छणीराम पाबुच। लेखन वर्ष संवत् 1987। आकार 7''X6½"X3½'' है। सांचे में गणना, यन्त्र-मंत्र-तंत्र आदि विषय हैं।

14. सांचा लेखक ख्याली राम, सुपुत्र श्री कलीराम। लेखन वर्ष संवत् 1987। आकार 6"x3"x1" है। सांचे में हवनविधि, देवी पूजा, गोदान व बालक जन्म इत्यादि विषय हैं।

15. सांचा लेखक देवीराम पाबुच। लेखन वर्ष संवत् 2031। सांचे का आकार 7''X6''X1'' है। सांचा फलादेश से सम्बन्धित है।

ये पन्द्रह सांचे श्री देवीराम पाबुच, सिरमौर के पास उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त इनके पास दो सांचटु (छोटे सांचे) देवनागरी लिपि के तथा दो सांचटु पाबुची लिपि के हैं। इनमें देवी पूजा, गोदान, छागदान, बछड़ादान इत्यादि की पूजा विधि उपलब्ध है।

16. सांचा लेखक पं0 मदन सिंह। सांचा लेखन वर्ष संवत् 1963 है। सांचे का आकार 7''X6''X4'' है। गणना, खुजित्रा और मुहूर्त आदि विषय इस सांचे में उपलब्ध हैं। यह सांचा अब सिरमौर के श्री नानडुराम के पास है जो इन्हें दान में मिला था।

17. सांचा लेखक पं0 महिराम। सांचे के लेखन की तिथि अज्ञात है। सांचे का आकार 8''X6''X4'' है। सांचे में गणना, खुजित्रा, मकान का मुहूर्त इत्यादि विषय हैं। यह सांचा ग्राम खड़कांह के पं0 भगतराम के पास उपलब्ध है।

18. सांचा लेखक स्व० पण्डित नानडु राम पाबुच। सांचे का लेखन वर्ष संवत् 2019 है। सांचे का आकार 8''X6''X3'' है। सांचे में गणना, मुहूर्त तथा यन्त्र-मंत्र-तंत्र विषय संकलित हैं। यह सांचा अब अनन्तराम शास्त्री के पास उपलब्ध है।

19. सांचा लेखक श्री नरपत पाबुच। सांचा लगभग 250 वर्ष पुराना है। इसका आकार 6''x6''x1½'' है। सांचा अब अनन्तराम शास्त्री के पास है।

20. सांचा लेखक श्री परमसिंह पाबुच। सांचा लगभग 200 वर्ष पुराना है। सांचे का आकार 7''X5''X3'' है। इस सांचे से गणना इत्यादि का कार्य किया जाता है। सांचा अनन्तराम शास्त्री के पास उपलब्ध है।

21. सांचा श्री अनन्तराम शास्त्री के पास उपलब्ध है जिसमें लेखक का नाम नहीं है। यह लगभग 300 वर्ष पुराना है। इसका आकार 7''X5''X1½ है। यह सांचा गणित का है जिससे पंचाङ्ग बनाया जाता है।

22. सांचा लेखक पं० नानडुराम पाबुच। लेखन वर्ष संवत् 1996 है। इसका आकार 7''X6½''X1½ है। यह उगत का सांचा है।

23. सांचा लेखक पं० सुनु पाबुच। सांचा लगभग 250 वर्ष पुराना है। इसका आकार 7''x5''X1½'' है। इस सांचे में यजमानों की वंशावली लिखी है। सांचा श्री अनन्तराम के पास उपलब्ध है।

24. सांचा लेखक श्री परमसिंह पाबुच। सांचा लगभग 100 वर्ष पुराना है। सांचे का आकार 5''x5''x1'' है। इस सांचे में पूजन और कर्मकाण्ड की विधि लिखी है। सांचा श्री अनन्तराम के पास उपलब्ध है।

25. सांचा लगभग 200 वर्ष पुराना है जिसमें लेखक का नाम नहीं है। सांचे का आकार 10''x6''x1'' है। सांचे के आखिरी पृष्ठ फटे हैं। इस सांचे के अतिरिक्त श्री अनन्तराम के पास 5 सांचटु हैं जो गणना, उगत और कर्मकाण्ड के हैं।

26. सांचा लेखक श्री वीरसिंह पाबुच रमदायक। लेखन वर्ष सं० 1951। सांचे का आकार 8"X7½"X3½" है। सांचा गणना, खुजित्रा, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र से सम्बन्धित है।

27. सांचा लेखक पं० टशिया पाबुच। लेखन वर्ष सं० 1970। सांचे का आकार 7"x6½"x2" है। सांचे में गणना, खुजित्रा तथा यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र से सम्बन्धित विषय संकलित हैं।

28. सांचा लेखक पं० अछ्बु पाबुच। लेखन वर्ष संवत् 1990 है। सांचे का आकार 6"x 3"x½" है। इसमें गऊ दान तथा अन्य दान करने की विधि बताई गई है।

29. सांचा लेखक पं० अछ्बु पाबुच। सांचे का लेखन वर्ष संवत् 1994 है। सांचे का आकार 7"x6"x3" है। सांचा गणना, खुजित्रा और यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र से सम्बन्धित है।

30. सांचा लेखक पं० बलीराम पाबुच। सांचे का लेखन वर्ष सं0 2045 है। सांचे का आकार 6½" X5"X2" है। सांचा गणना आदि से सम्बन्धित है।

31. सांचा (सांचटु) लेखक पण्डित सुरताना पाबुच। लेखन वर्ष संवत् 2020 है। सांचे का आकार 8"X7"X½" है। इसमें खुजित्रा इत्यादि के बारे में लिखा है।

क्रमसंख्या 26 से लेकर 31 तक के सांचे अब पं० बलीराम पाबुच के पास उपलब्ध हैं।

32. सांचा लेखक पं० हरभजन। सांचा लगभग 250 वर्ष पुराना है। सांचे का आकार 8½"X6"X2½" है। सांचे में गणना पुराण, खुजित्रा, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र आदि विषय संकलित हैं।

इस सांचे की यह विशेषता है कि इसमें संसार की उत्पत्ति के बारे में बताया गया है तथा ऋषि कश्यप की तेरह रानियों के सम्बन्ध में लिखा है। कर्मपुराण का भी उल्लेख है तथा कर्म समात के सम्बन्ध में भी बताया गया है। पाण्डवों के स्वर्गारोहण तथा हरिवंश पुराण का भी हवाला है। यह सांचा पं० मोहिन्द्र सिंह रमदायक के पास है।

33. सांचे में लेखक के नाम का उल्लेख नहीं है। सांचे का लेखन वर्ष सं. 1887 है। इसका आकार 9''X7''X2½ है। इसमें गणना तथा खुजित्रा आदि विषय हैं।

34. सांचा लेखक पं० मोहिन्द्र सिंह रमदायक। सांचे का लेखन वर्ष संवत् 2049 है। सांचा देवनागरी लिपि में लिखा गया है। सांचे का आकार 7''X5''X1½ है। सांचे में कुल 355 पृष्ठ हैं। सांचा गणना, खुजित्रा से सम्बन्धित है।

35. सांचा लेखक पं० मोहिन्द्र सिंह रमदायक। लेखन वर्ष संवत् 2022 है। सांचे का आकार 7''X4''X2½ है। सांचे में गणना, खुजित्रा, पुराण आदि विषय संकलित हैं।

36. सांचा लेखक पं0 मोहिन्द्र सिंह रमदायक। सांचे का लेखन वर्ष संवत् 2040 है। सांचा देवनागरी लिपि में लिखा गया है। इसका आकार 8''X7''X1'' है। इसमें गणना, खुजित्रा आदि विषय हैं।

37. सांचा (सांचटु) लेखक पं0 मोहिन्द्र सिंह रमदायक। लेखन वर्ष संवत् 2020 है। सांचटु का आकार 5''X3''X1'' है। इसमें हर प्रकार की पूजा विधि दी गई है। यह कर्मकाण्ड से सम्बन्धित है।

38. सांचा लेखक पं0 अनन्तराम रमदायक। सांचा संवत् 1950 में लिखा

गया है। सांचे का आकार 7''x6''x3'' है। इसमें गणना, खुजित्रा तथा यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र विषय संकलित है।

39. सांचा लेखक पं० वेणीप्रसाद। सांचा लेखन वर्ष संवत् 2026। सांचे का आकार 6''x4''x2'' है। सांचा गणना, खुजित्रा तथा कर्मकाण्ड से सम्बन्धित है।

40. सांचा लेखक पं० वेणीप्रसाद। लेखन वर्ष सवत् 2025। सांचे का आकार 7''x6½''x3'' है। सांचे में गणना, खुजित्रा, हवन विधि, देवी पूजा, गऊ दान, तूम्बा चलाने की विधि आदि विषय संकलित हैं।

41. सांचा लेखक वीरसिंह तथा अजबू पाबुच। लेखन वर्ष संवत् 1840। सांचे का आकार 7''x6½''x2½'' है। इसमें गणना, खुजित्रा, तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र, वंशावली, चतुर्घटी वेला, दिन-रात के शुभाशुभ मुहूर्त आदि विषय हैं।

क्रम संख्या 39,40,41 सांचे पं० मनीराम पाबुच रमदायक के पास हैं। इसके अतिरिक्त इनके पास 3 सांचटु उपलब्ध हैं। एक में पितृशोधन, गणना, हवन आदि विषय हैं। दूसरे में दान तथा जप आदि के विषय में बताया गया है। तीसरा सांचा कर्मकाण्ड से सम्बन्धित है।

इनके पास पुराने सांचे (पुराण वाले) में सिरमौर के राजाओं की सन् 1152 से आगे की वंशावली उपलब्ध है।

42. सांचा लेखक श्री कलीराम पाबुच। सांचा 150 वर्ष पुराना है। सांचे का आकार 7"x6½"x2½" है। इस सांचे में गणना, खुजित्रा तथा यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र सम्बन्धी विषय हैं।

43. सांचटु लेखक पं० विजयराम पाबुच। सांचा संवत् 1987 में लिखा गया है। सांचे का आकार 5''x4'' है, जिसमें कुल 60 पृष्ठ हैं। इस सांचटु में ग्रहपूजा तथा ग्रह चक्र आदि विषय हैं।

44. सांचटु लेखक पं० सीताराम। लेखन वर्ष संवत् 2015। आकार 8''x6½"'' है तथा पृष्ठ 70 हैं। इसमें बाण पूजा तथा हवन आदि की विधि लिखी है।

45. सांचटु लेखक पं० सीताराम पाबुच। लेखन वर्ष संवत् 2016। 50 पृष्ठ के इस सांचटु का आकार लगभग 8''x7'' है। इसमें गणना तथा नव ग्रह पूजन की विधि लिखी है।

46. सांचटु लेखक रतीराम पाबुच। लेखन वर्ष संवत् 1992। 30 पृष्ठ के इस सांचटु का आकार 7"x6½" है। इसमें गऊदान, पूजा और गणना आदि विषय हैं।

क्रम संख्या 42 से 46 तक के सांचे पंडित सीताराम पाबुच के पास उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त इनके पास तीन सांचटु और हैं।

47. सांचा लेखक श्री धंगुराम पाण्डेय। लेखन वर्ष संवत् 1970 है। सांचे का आकार 7½"X6"X3" है। इसमें गणना, खुजित्रा तथा यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र आदि विषय हैं। यह सांचा पं० दिउडू राम पाबुच के पास है।

48. सांचा लेखक पं0 मोतीराम। लेखन वर्ष संवत् 1903 है। सांचे का आकार 7½"X6"X3½ है। इसमें गणना, खुजित्रा और यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र विषय संकलित हैं। यह सांचा पण्डित रत्नसिंह पाबुच के पास उपलब्ध है।

49. सांचा लेखक का नाम अज्ञात है। सांचा लगभग 250 वर्ष पुराना है। इसका आकार 6"X5½"X2" है। यह उगत का सांचा है जिसके आधार पर चिरी तैयार की जाती है। यह सांचा भी पण्डित रत्नसिंह पाबुच के पास है।

50. सांचा लेखक श्री मूलचन्द पाबुच। लेखन वर्ष संवत् 1875। सांचे का आकार 7''X6''X2½" है। सांचा गणना, खुजित्रा और यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र से सम्बन्धित है।

51. सांचा लेखक पं0 भजुराम व गुलाबु राम। लेखन वर्ष संवत् 2002। सांचे का आकार 7''X6''X2½''। यह सांचा भी गणना, खुजित्रा व यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र का है।

उपर्युक्त दोनों सांचे पं0 गुलाब सिंह पाबुच के पास उपलब्ध हैं।

52. सांचा लेखक श्री राजमल पाबुच रमदायक। सांचा लगभग 250 वर्ष पुराना है। सांचे का आकार 7''X5½"X2½" है। सांचे में गणना, खुजित्रा तथा यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र विषय संकलित हैं। यह सांचा पं0 रत्न चन्द पाबुच के पास उपलब्ध है।

53. सांचा लेखक पं0 मुलचुराम पाबुच। सांचा लगभग 200 वर्ष पुराना है। सांचे में गणना, खुजित्रा और मन्त्र-तन्त्र विषय हैं।

54. सांचा लेखक मूशा पाबुच। लेखन वर्ष संवत् 1985 है। सांचे का आकार 7"X6½"X2½" है। सांचा गणना, खुजित्रा व यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र से सम्बन्धित है।

55. सांचा लेखक श्री शिवराम पाबुच। सांचे का लेखन वर्ष 2010 है। सांचे का आकार 7''X7''X3'' है। सांचे में गणना व खुजित्रा आदि विषय संकलित हैं।

56. सांचटु लेखक पं0 चुहां पाबुच। यह लगभग 110 वर्ष पुराना है। सांचटु का आकार 4''X3'' है जिसमें 40 पृष्ठ हैं। इसमें गोदान व हवन विधि दी

गई है।

उपर्युक्त चार सांचे पं0 सनियाराम पाबुच के पास उपलब्ध हैं।

57. सांचा लेखक पं0 रतीराम। लेखन वर्ष संवत् 1902। सांचे का आकार 7"x6½"x2½" है। यह गणना, खुजित्रा आदि से सम्बन्धित है।

58. सांचटु लेखक पं0 रतीराम। यह लगभग 60 वर्ष पुराना है। इसमें गऊ पूजन और हवन विधि इत्यादि दी गई है।

59. सांचा लेखक पं0 नखटू पाबुच व टौंसिया पाबुच। सांचा लगभग 80 वर्ष पुराना है। सांचे का आकार 7"x6½"x2½" है। यह गणना का सांचा है और पं0 मोहिराम के पास उपलब्ध है।

60. सांचा लेखक श्री नकटू राम। सांचा लगभग 80 वर्ष पुराना है। सांचे का आकार 7"x6½"x2½" है। सांचा गणना, खुजित्रा व यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र से संम्बन्धित है। यह सांचा पं0 शिवराम पाबुच के पास उपलब्ध है।

61. सांचा लेखक श्री रतीराम पाबुच। लेखन वर्ष सं0 2025 है। सांचे का आकार 7"x6½"x2½" है। यह गणना व खुजित्रा से सम्बन्धित है तथा पं0 जंगलीराम पाबुच के पास उपलब्ध है।

62. सांचा लेखक श्री विजयराम पाबुच। सांचा लगभग 80 वर्ष पुराना है। इसका आकार 7"x6"x2½" है। इसमें गणना और खुजित्रा आदि विषय हैं। यह पं0 दयूडु राम पाबुच के पास उपलब्ध है।

63. सांचा लेखक पं0 विजयराम पाबुच। सांचा लगभग 75 वर्ष पुराना है। इसका आकार 6½"x6"x2½" है। इसमें गणना, खुजित्रा आदि विषय हैं। यह सांचा पं0 लालचन्द पाबुच के पास उपलब्ध है।

64. सांचा लेखक पं0 भजुराम पाबुच। सांचा लगभग 80 वर्ष पुराना है। सांचे का आकार 6½"x6"x2½" है। इसमें गणना, खुजित्रा व पुराणों का विवरण उपलब्ध है।

65. सांचा लेखक का नाम अज्ञात है। यह लगभग 90 वर्ष पुराना है। सांचे का आकार 6½"x6"x2½" है। इसमें गणना व खुजित्रा विषय हैं।

उपर्युक्त दोनों सांचे पं0 रत्न चन्द पाबुच के पास हैं।

66. सांचा लेखक श्री जसमत पाबुच। सांचा लगभग 150 वर्ष पुराना है। इसका आकार 6½"x6"x3" है। यह गणना, खुजित्रा तथा जन्त्र-मन्त्र-तन्त्र का सांचा है तथा पंडित बहादुर सिंह पाबुच के पास उपलब्ध है।

67. सांचा लेखक पं0 हरभजन पाबुच। सांचा लगभग 200 वर्ष पुराना है। इसका आकार 6½"x6"x2½" है। यह सांचा अब पं0 बंशीराम पाबुच के पास है। इसमें गणना, खुजित्रा आदि विषय हैं।

68. सांचा लेखक बाजुराम पाबुच। लेखक वर्ष संवत् 1843। सांचे का आकार 7"x7"x1½" है। यह उगत का सांचा है जिसमें पंचाङ्ग बनाने की विधि है।

69. सांचा लेखक पं0 बस्तीराम पाबुच। लेखन वर्ष संवत् 1960। सांचे का आकार 7"x6½"x3½" है। यह गणना, खुजित्रा और यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र का सांचा है।

70. सांचा लेखक का नाम अज्ञात है। यह सांचा लगभग 400 वर्ष पुराना है और फटी हालत में है। इसका आकार 7"x6½"x1½" है। इस सांचे में गणना व खुजित्रा विषय संकलित हैं। उपर्युक्त तीनों सांचे पं0 जगतराम पाबुच के पास हैं। इनके अतिरिक्त इनके पास 3 सांचटु पूजन विधि तथा दान इत्यादि सम्बन्धित हैं तथा एक सांचटु गणना करने का है।

71. सांचा लेखक श्री हरभजन पाबुच। सांचा लगभग 350 वर्ष पुराना है। सांचे का आकार 7"x6"x2½" है। सांचे में गणना, खुजित्रा, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र तथा पुराणों का विवरण है। यह सांचा पण्डित शिवंराम पाबुच के पास है।

72. सांचा लेखक श्री मीनाराम पाबुच हैं और सांचा लगभग 60 वर्ष पुराना है। इसका आकार 7"x6"x2½" है। यह गणना और खुजित्रा का सांचा है। यह सांचा पं0 तुलसीराम पाबुच के पास उपलब्ध है।

73. सांचा लेखक पं0 सई राम। सांचा लगभग 80 वर्ष पुराना है। सांचे का आकार 7"x6"x2½" है। यह गणना और खुजित्रा इत्यादि का सांचा है तथा पं0 जगतराम पाबुच के पास उपलब्ध है।

74. सांचा लेखक पं0 सई राम। सांचा लगभग 100 वर्ष पुराना है। सांचे का आकार 7"x6"x3"। सांचा पं0 हीरा सिंह पाबुच के पास उपलब्ध है।

75. सांचा लेखक का नाम अज्ञात है। सांचा लगभग 250 वर्ष पुराना है। इसका आकार 7"x6½"x2½" है। यह उगत का सांचा अब पं0 सन्तराम पाबुच के पास उपलब्ध है।

76. सांचा लेखक बस्तीराम। सांचा 150 वर्ष पुराना है। सांचे का आकार 7"x6½"x2½"। यह गणना, खुजित्रा, व तन्त्र-मन्त्र का साञ्चा है जो अब पं० सन्तराम पाबुच के पास उपलब्ध है।

77. सांचा लेखक श्री परमसिंह पाबुच। सांचा लगभग 150 वर्ष पुराना है।

इसका आकार 7"x6½"x2" है। गणना, खुजित्रा आदि का यह सांचा पं0 देवीराम के पास उपलब्ध है।

78. सांचा लेखक श्री रतीराम। सांचा लगभग 50 वर्ष पुराना है। इसका आकार 7"x6"x2½" है। यह सांचा भी पं0 देवीराम के पास है।

79. सांचा लेखक का नाम उपलब्ध नहीं है। सांचा लगभग 100 वर्ष पुराना है। इसका आकार 7"x6"x2½" है। इस सांचे में गणना, खुजित्रा व पूजन विधि दी गई है तथा पं0 देवीराम के पास उपलब्ध है।

80. सांचा लेखक श्री मोहिन्द्रसिंह। लेखन वर्ष संवत् 2030। सांचे का आकार 6½"x6"x2½" है। इसमें गणना, खुजित्रा और पूजन विधि दी गई है। यह सांचा पं0 मंगीराम पाबुच के पास उपलब्ध है।

81. सांचा लेखक पं0 जसमत पाबुच रमदायक। लेखन वर्ष अज्ञात है। सांचे का आकार 7"x6"x2½" है। यह गणना का सांचा है जो पं0 ढौंटु राम पाबुच के पास उपलबघ है।

82. सांचा लेखक श्री राजमल। सांचा लगभग 200 वर्ष पुराना है। इसका आकार 7"x7"x2½" है। यह गणना का सांचा है जो पं0 सुरेश पाबुच के पास उपलब्ध है।

83. सांचा लेखक श्री जसमत रमदायक। सांचे का आकार 7"x6½"x2" है। गणना का यह सांचा पं0 किरपा राम पाबुच के पास उपलब्ध है।

84. ग्राम धुम्बाड़ी के पं0 मोहिराम के पास दो सांचे उपलब्ध हैं जिनमें गणना, खुजित्रा, तन्त्र-मंत्र-यंत्र विषय हैं। ये सांचे लगभग 150 वर्ष पुराने हैं।

85. पं0 नन्दराम के पास एक सांचा गणना, खुजित्रा तथा तन्त्र-मन्त्र से सम्बन्धित है। यह लगभग 100 वर्ष पुराना है।

पं0 जीतराम, पं0 खत्रीराम, पं0 रतीराम ग्रा0 धुम्बाड़ी पं0 रतीराम पं0 आशाराम, पं0 कांशीराम, पं0 मोतीराम ग्रा0 नैनीधार के पास भी पाबुची लिपि का एक-एक सांचा उपलब्ध है जो गणना, खुजित्रा व यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र से सम्बन्धित है।

पुराणों का सांचा

लेखक रामदेव पाबुच (रामदिया)। सांचा लगभग 400 वर्ष पुराना है। आकार 14"x9"x4"। यह सांचा पं0 मनीराम जी के पास उपलब्ध है। इसे वर्ष में जन्माष्टमी के दिन मन्दिर में ले जाया जाता है और उसका पाठ सब गांव वालों को सुनाया जाता है। यह सांचा हर व्यक्ति को नहीं दिखाया जाता।

सांचा ग्रंथ : विषय सूची

बादशूल का मन्त्र 106 ज्वर-ताप नाश चक्र 107 स्त्री का गर्भ स्यम्भ चक्र 108 गर्भ खुलने का चक्र 109 ज्वर तोड़ने का मन्त्र 110 चौथिया ताप का यन्त्र 111 अपस्मार नाश चक्र 112 चौंसठ योगिनी नाश चक्र 113 माण्ड का चक्र 114 हलजर नाश चक्र 115 रोड़ा मान्द का यन्त्र 116 पैर थम्भ चक्र 117 वास्तु बारे विभिन्न ज्ञान 118 मड़घाट का चक्र 119 विवाह में मंगल विचार

सभी साञ्चा ग्रन्थों में प्राय: ये ही विषय निबद्ध हैं परन्तु क्रम सभी ग्रन्थों में अलग-अलग देखने को मिलता है।

❑

साञ्चा : लिपि और भाषा

डॉ० श्यामा ठाकुर

साञ्चा विद्या व्यवसाय में अत्यन्त गोपनीयता परिलक्षित होती है। यह व्यवसाय वंशानुगत परम्परा से चला आया है, जिसमें वृद्ध सांचा पण्डित अपने पुत्रों को इसकी शिक्षा-दीक्षा देता रहा है। इसलिए इस विद्या को हर स्थिति में अपने तक सीमित रखने के प्रयत्न रहे हैं। अत: सांचा-विद्या अनुयायियों ने इसके लिए ऐसी लिपि अपनाई है जो सामान्य जनता को तो समझ न ही आये प्रत्युत् इस व्यवसाय में जुड़े दूसरे पाण्डितों को भी इसके ज्ञान से वंचित रखने के प्रयास रहे हैं। सांचा विद्या बहुत प्राचीन समय से आ रही है, इसमें तो संदेह नहीं है, परन्तु जब-जब मौखिक रूप से आ रही विद्या को लिखित रूप में प्रतिष्ठित करने की आवश्यकता अनुभव हुई है, तब-तब विभिन्न सम्प्रदाय के पण्डितों ने विद्या को अपने तक सीमित रखने के लिए भिन्न प्रकार की लिपि का आविष्कार किया है।

हाल ही तक इस क्षेत्र के रियासती राजाओं के राज-काज की भाषा के लिए टांकरी लिपि का प्रयोग होता रहा है। सम्भवत: तथा कथित अध्ययन-अध्यापन की लिपि भी टांकरी रही होगी। परन्तु सांचों की लिपियां टांकरी नहीं है भले ही इन का स्वरूप टांकरी से मिलता ज़रूर है, जिससे इनके टांकरी लिपि के साथ एक स्रोत के होने का प्रमाण मिलता है। इस समय उपलब्ध और प्रयोग में लाये जाने वाले सांचों को देखने से प्रतीत होता है कि यहां सांचा-पद्धति विद्या व्यवसाय के प्रमुखत: चार घराने रहे हैं- पाबुची, पंडवाणी, भटाक्षरी और चंदवाणी। मोटे रूप में पंडा रूप में धर्मकृत्य करने वाले ब्राह्मण सम्प्रदाय ने इस विद्या के लिए जो लिपि अपनाई है उसे 'पंडवाणी' कहा गया है। भाट सम्प्रदाय द्वारा चलाई और अपनाई गई लिपि और पद्धति को भटाक्षरी कहा गया है तथा स्थानीय चंदवाण

और पाबुच ब्राह्मणों द्वारा प्रयुक्त लिपि पद्धति क्रमश: चंदवाणी और पाबुची के नामों से प्रतिष्ठित हुई है। इनके संचालन के बारे में इन्हीं पण्डितों में कुछ किंवदन्तियां प्रचलित हैं। पाबुची के सम्बन्ध में प्रचलित अनुश्रुति का सन्दर्भ इसी पुस्तक में प्रकाशित श्री ओमप्रकाश राही के लेख "साञ्चा पृष्ठभूमि एवं स्थिति-एक सर्वेक्षण'' में उल्लिखित है। जहां तक चंदवाणी का सम्बन्ध है इस पर निम्न रूप से प्रकाश डाला जा सकता है-

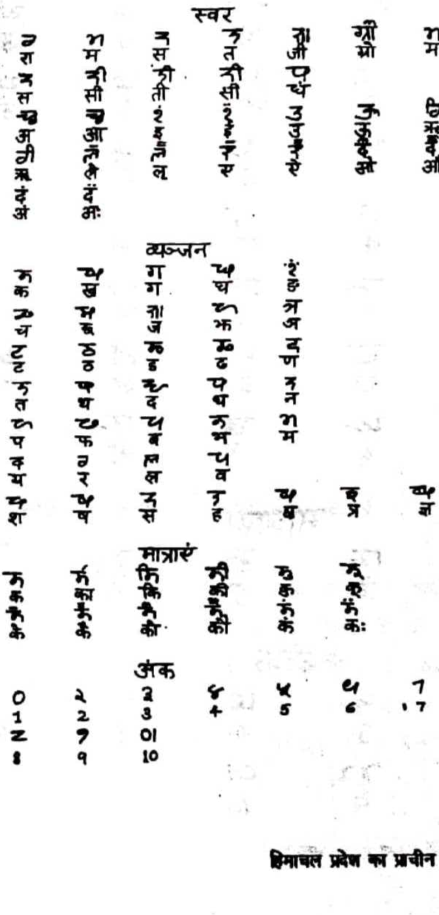
पण्डित तुलसी राम, गांव मंडोचली, तह0 चौपाल के पास चंदवाणी लिपि में लिखा सांचा प्राप्त है और पण्डित जी इसी ग्रन्थ द्वारा प्रश्नों से ब्रह्म कार्य करते आये हैं। चंदवाणी लिपि क्या है और इसका उद्भव कहां और कैसे हुआ ? यह पूछे जाने पर पण्डित जी ने बताया कि इससे सम्बन्धित कोई लिखित इतिहास उपलब्ध नहीं है तथापि कर्ण परम्परया सुरक्षित इतिहास के अनुसार तहसील चौपाल के ग्राम भटयूड़ी में चंदाण वंश के लोग रहते थे। चंदाण वंश में कोई दानी तथा भक्त पुरुष हुआ करता था। वह सम्पन्न न हो कर निर्धन एवं दयनीय अवस्था में अपना जीवन यापन कर रहा था। ईश्वरीय प्रेरणा से उसे स्वप्न हुआ कि तू रात्रि को अपने कमरे में मिट्टी बिछा कर सो जा। वैसा करने पर प्रात: जागकर उसने देखा कि उस मिट्टी पर कुछ चिह्न अंकित हुये हैं। अब ईश्वरीय प्रेरणा एवं कृपा से अनायास ही वह उन लिपि चिह्नों का उच्चारण करने लगा। पाबुची लिपि के समान ही यहां भी आद्यक्षर 'राम सत जी' ही माने जाते हैं। उन लिपि चिह्नों को ईश्वर कृपा से पढ़ने के बाद वह व्यक्ति उस लिपि का विद्वान् माना गया और उसने अन्य शिष्यों को भी इसका ज्ञान कराया। 'चंदाण' वंश से उद्भूत इस लिपि को 'चंदवाणी' नाम से जाना जाने लगा। आज इस लिपि के सांचे चौपाल में अनेक पण्डितों के पास प्राप्त होते हैं। चंदवाणी लिपि पाबुची से सर्वथा भिन्न है। इसी कारण एक लिपि विशेषज्ञ दूसरी लिपि को नहीं पढ़ पाते।

चंदवाणी लिपि में प्राप्त सांचे की विषय-वस्तु ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड से सम्बन्धित पाई जाती है। ऐतिहासिक पक्ष इस सांचे में उपलब्ध नहीं होता। यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र का भरपूर विवरण इस सांचे में उपलब्ध है। पंडित जी अपनी इस विद्या के फलादेश के प्रति पूर्ण आश्वस्त नज़र आये हैं। उनका कथन है कि उदाहरणार्थ नि:सन्तान व्यक्ति के बारे विद्या विचार के पश्चात् तत्सम्बन्धी उपाय किये जाने से प्रभु कृपा से सन्तान प्राप्ति हो जाती है। तान्त्रिक कार्य सम्बन्धी विवरण पूर्णत: उपलब्ध होता है।

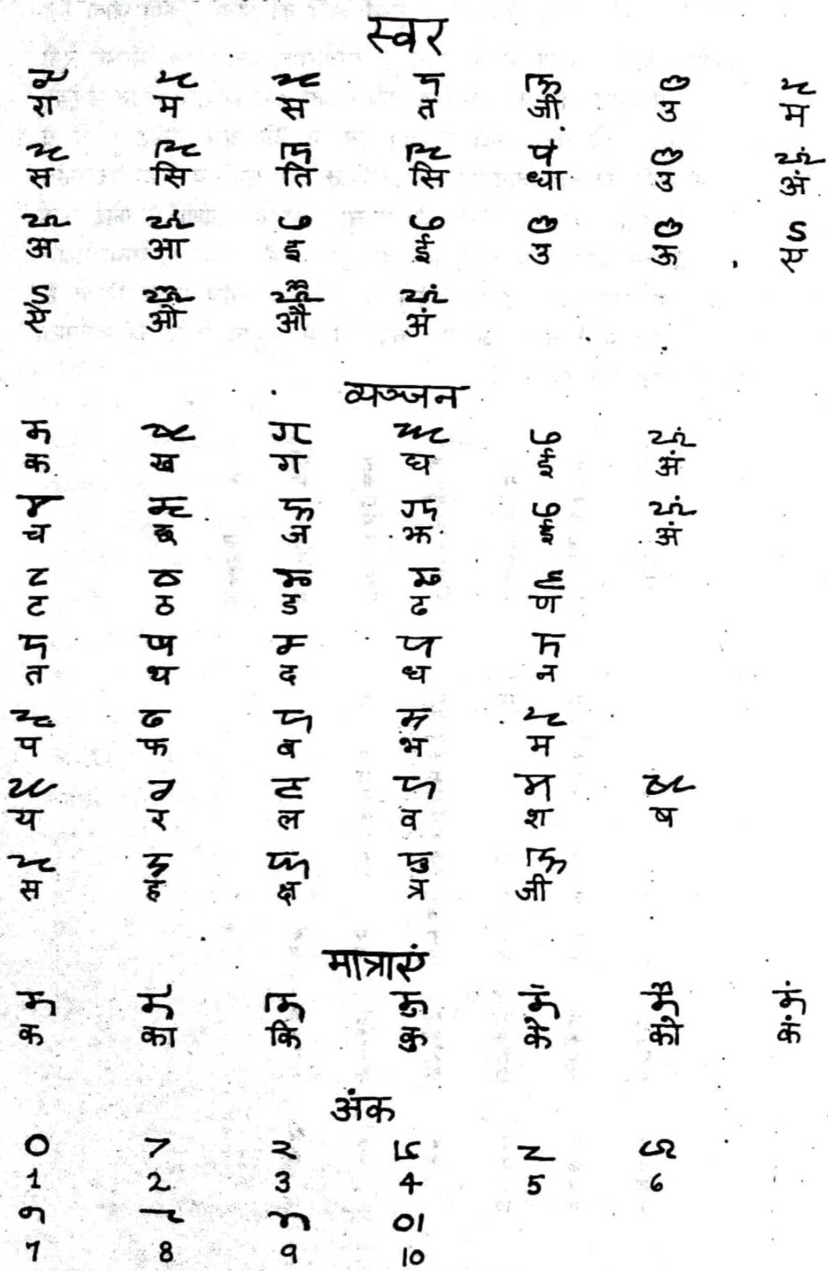
ग्राम भटयूड़ी में चंदवाणी लिपि के मूल सांचे भी प्राप्त होते हैं, जिनसे ये लोग भी चिरी (जन्त्री) बनाते हैं। भटयूड़ी में भी केवल एक ही घर ऐसा है,

जहां चिरी निर्माण किया जाता है। उन्हीं की बनाई चिरी अन्य लोग खरीद लेते हैं और इससे ही नक्षत्र, तिथि, योग, लग्न, मुहूर्त आदि का विचार किया जाता है।

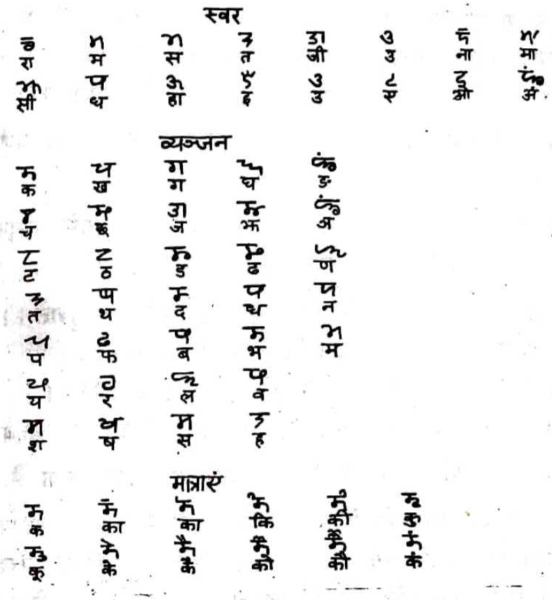
उपर्युक्त चारों लिपियां केवल अपने से सम्बन्धित घराने तक सीमित रही हैं। पाबुची पंडित पंडवाणी लिपि को पढ़-लिख नहीं सकता तथा पंडवाणी पंडित पाबुची, भटाक्षरी या चंदवाणी को नहीं समझ सकता। ऐसे ही जैसे अन्य पंडित अपने से भिन्न किसी भी लिपि को नहीं जानता। इस प्रतिष्ठित और सुप्रसिद्ध विद्या पर गहन अध्ययन और अनुसंधान की आवश्यकता है, परन्तु अभी इस दिशा में कोई कार्य नहीं हुआ है। वर्तमान अध्ययन के बीच भी केवल पाबुची और चंदवाणी सांचा पद्धति पर कुछ ध्यान आकर्षित हुआ। अन्य लिपियों से सम्बन्धित सांचे ज़रूर मिलते हैं, परन्तु अभी उन पर कार्य नहीं हुआ है। चंदवाणी में प्रयुक्त लिपि की वर्णमाला व दस तक के अंक इस प्रकार हैं -



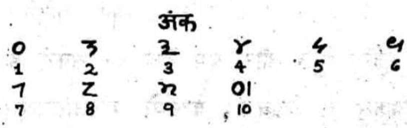
पाबुची लिपि की वर्णमाला तथा दस अंक इस प्रकार हैं-



पण्डवाणी की वर्णमाला तथा अंक निम्न प्रकार हैं-



पाण्डवाणी लिपि में आ के लिए दो मात्राएं हैं। जो ऊपर दर्शाई गई हैं।



जहां तक भाषा का सम्बन्ध है, इस व्यवसाय में तीन तरह की भाषाओं का समावेश है:-

1. सामान्य बोलचाल में सांचा पण्डित प्राय: स्थानीय भाषा का प्रयोग करते हैं। यह पहाड़ी भाषा का सिरमौरी-महासुई रूप है। सांचा लिखते समय लेखक और सांचे का परिचय भी इसी भाषा में लिखा और प्रदर्शित है, यथा-

सांचा लिखा बगण पाबुचे ज्योतिषिए, संबत् साल 1543 की म्हीना माघ, गते सात जिबवार, शरण नखत्र, शुकिला पक्ष दुआदशी तिथि अमृत वेला पर, उगत बाचणे का चिरी बणाणे का। चिरी के सुआ ऐसी सांचे दो उको किएं ना लिखणो

जी।।।। राम सत माने जी।।

आज के सम्वत् 2050 में इस सांचे को लिखे 507 वर्ष हो गए हैं।

सांचा लिखा सूरदासे पाबुचे छणी के बेटे सम्बत् 1603 की कात्ती म्हीने गते बीश वार चन्द्र नखत्र अनराज घड़ी तीथ नौमी (44) घड़ी।। उगत का सांचा चिरी बणाणे का।। ग्रह सुपाष्टु और सारणी और सम्बति बाणणे का।

सूरदास पाबुच ज्योतिषी का लिखा सांचा सम्वत् 2050 में 447 वर्ष पुराना हो चुका है। इस सांचे में दोष आदि फलादेश नहीं हैं।

2. मूल सांचों की भाषा उपर्युक्त भाषा से भिन्न है। इसमें संस्कृत भाषा की प्रधानता है, परन्तु उसमें कुछ विकार आया है, यथा :-

त्रिकम् द्वीकम् चतुकम् तु चेइब।। शुक्लम् चेइब तु दृशते।।
आद्रा पुत्राणि तु सगमे।। धनपति कारणम् दृशते।।
कल्याणी चिन्ता ततो शुभा।। राजते वृद्धि यान प्रीति।।
जायते भविखन्ती।। गृह चिन्ता कुलना बन्धु वृद्धि सह चेइब।।

सम्बन्धित पाबुच पण्डित ने इसका अनुवाद इस प्रकार किया है :-

तीन दो चार की होरा कहती है कि प्रश्न सही है। स्पष्ट बताया जाता है कि आपकी अगली सन्तान है, सो मानता आदि करते हैं। आपको अच्छा फल लेने की इच्छा है। ऐसा देखा जाता है कि आपका सारा कार्य शुभ रहेगा। किसी भी सम्बन्ध में अगर आपका कोई सरकारी कार्य होगा तो वह पूर्ण होगा। भविष्य का यह वचन है। घर की जो चिन्ता है वह बन्धन करने से ठीक होगी। अपनी बिरादरी वालों से विरोध न करें। बाकि राम जी कृपा करेंगे।

इसके अनुवाद सहित कुछ और रूप देखे जा सकते हैं-

323 त्रिकम् द्वीकं त्रिकम् तु चेइब।। कष्टयो पतितातवम्।।
आमित्र से अर्थलाभं भवे चेइब।। सर्व भयम् भविखन्ती।।
पराए आस मन भवे चेइब।। अर्थ गृह पूजे कारयेत।।

हिन्दी अनुवाद

तीन दो तीन की होरा कहती है कि आपको कठिनाई तो बहुत झेलनी पड़ेगी, परन्तु बाद में अपने सम्बन्धी से लाभ होगा। सारे भय का नाश होगा। दूसरे की बात में न आकर देवता की पूजा करें। आगे राम जी की कृपा।

331 त्रिकं त्रिकं प्रदम् तू चेइब, ककस्ती पतितातवम्।।
वैर चेइब निअर्थकम्।। असीधात प्राण संहारणं सुता दृष्टा।।

भूमि ते कारज सी बृधन्ते।। सुथान गुमान चेइब भवीसं तथा।।
बन्धु जोजनाम समस्थिताम्।।

हिन्दी अनुवाद

तीन तीन और एक की होरा का फल है कि ताने पर ताना देने से दुश्मनी होती है जोकि निषेध फल है। फिर ऐसा होने के बाद अगला क्लेश पाकर अपना संस्कार डालेगा जो आपको प्राणघातक भी हो सकता है। भूमि आदि का अगर कोई विवाद है या कोई ऐसी वस्तु है जिसपर आपका और आपके पड़ोसियों या सम्बन्धियों का विरोध है तो आपको शान्त रहना चाहिए तभी सुखी रहोगे। आगे राम जी की कृपा है।

332 त्रिकम् त्रिकम् द्वीकम् तू चेइब।। बृखयो पतितातवम्।।
वृधनम् सुख क क्षयं पाती।। न ता क्षय दुर्जण सुख।।
दुख कुल्ल चिन्तते।। कन्या पातर तु दृशति।।
कुल्ल संवृधि सह अचिर्ण सफल्लम्।। कुल्ल देवता तत पूछे।।
राज वा राज मानवा।। सर्वसुख प्रिया नीती सं तथा।।

हिन्दी अनुवाद

तीन तीन दो की होरा का फल है कि जिस प्रकार लगाया हुआ पौधा क्षतिग्रस्त होता है उसी प्रकार विरोध करने से दुःख प्रकट होता है। दुर्जन क्षति पहुंचाते हैं। सज्जन अच्छे कार्य करते हैं जिससे दुःख के स्थान पर सुख प्राप्त होता है। कुल की कन्या का पितर भी है जो परिवार के आपसी विरोध से असन्तुष्ट होकर दुःखी करेगा। अपने कुलदेवता की मानता करो। इसी से आपका मान सम्मान होगा और सारे सुख प्राप्त होंगे। बाकी राम जी कृपा।

333 त्रिकं त्रिकं त्रिकं तु चेइब।। सुर गुणी पतितातवम्।।
प्रीति याती से कल्यार्थम्।। समा प्रति मुक्ती संतथा।।
तत्र पर जायते।। तत्र गृह दक्षिण सिद्धि।। समफलं भवेखन्ती।।
सिध्यति पूजये तु शंकरो देवा।। थान कृति विपुला देही आसनम्।।
तत सर्वसुखं च तथा।। पुत्र च तु दृशति तथेइब च।।

हिन्दी अनुवाद

तीन तीन तीन की होरा कहती है कि अपने देवता के साथ पूजा याचना करके प्रेम सहित अधिक से अधिक मानता करके कठिनाइयों से मुक्ति प्राप्त होती है। तब घर की भी सिद्धि होकर शुभ फलिभूत होता है। शंकर भगवान तथा स्थान

देवी की पूजा करने से सर्व सुख प्राप्त होगा। बाकी राम जी की कृपा है।

341 त्रिकम् चतुकम् प्रदम् तु चेइब।। अनमनयो पतितातवम्।।
पर वक्ष सुख तु संप्रदा।। वृधिस्तथा सुखं तु दृशते।।
धनलाभं च जायते।। अकम् पच लाभं च भवि चेइब।।
विजयो कार्ज अर्थलाभं च।। इदं चिन्त देव ज्ञानम्।।
सपिने दृशते तिलमाशकम्।।

हिन्दी अनुवाद

तीन चार एक की होरा का फल है कि सदाचार में आनाकानी करने से सुख की क्षति होती है और दुःख झेलना पड़ता है। धन आदि का लाभ रह सकता है। अगर विवाद विरोध छोड़ेंगे तो आपको धनलाभ हो सकता है। जय-विजय की प्राप्ति होगी। ईश्वर की आराधना करें ताकि दुःस्वप्नों का फल भी शुभ हो।

342 त्रिकम् चतुकम् द्विकम् तु चेइब।। भद्राणी पतितातवम्।।
स्वजनयो प्रीति चिन्ता।। हृदयो चेइब परवर्जते।।
थान ते गुमान इष्ट देव सं तथा।। वृधन बन्ध समास्थितम्।।
अचिर्णन संदेही तु गमन कृत्वा।। कुलदेवता तत पूजे प्रिया।।
अचिर्णन संदेही तु गमन कृत्वा।। कुलदेवा तत पूजे प्रिया।।
निति सं तथा।।

हिन्दी अनुवाद

तीन चार दो की होरा का फल है कि भगवती आदि शक्ति का सहारा लेकर अपने निकट सम्बन्धी के लिए अपने मन में कभी बुरा नहीं सोचना। इस विषय को त्याग कर पड़ोसियों से विरोध नहीं करना चाहिए। अपने इष्ट देव की मानता करना तथा सम्मान करना। ऐसा करने से आप निःसन्देह परेशानी से छूट जाएंगे। कुलदेवता की पूजा अर्चना आदि करते रहें ताकि शुभ हो। बाकी राम जी की कृपा।।

312 त्रिकं प्रदं द्वीकं तु चेइब।। उदगयं पतितातवम्।।
मन चिन्ता मृत्यु भयं।। उदय प्राणम् सक्षयम्।।
अर्थ हानं च चिन्ता तते कार्जं पूछते।। तहां सति पद्म जीवतम्।।
कल्याणं पापदुहि सनानम्।। इति न सफलं भवे ब्राह्मण तत्र पूजे तु न।।

शुभकर्म भविखन्ति वृहस्पति भवे पूजा।। सर्व ग्रह भविखन्ति।।
शुभम स्यातु दृशते।। महातम मासे प्रवक्ष्यामि सं तथा।।
इष्ट पूजयते चेइब।। सर्व रोग प्रणाशनम्।।

हिन्दी अनुवाद

तीन एक और दो की होरा कहती है कि मन अशान्त रहता है। अकालमृत्यु का भय तथा हर प्रकार की हानि होने से मन चिन्तित रहता है इसलिए कार्यसिद्धि हेतु व स्वकल्याण के लिए ब्राह्मण और देवता की पूजा करके व शुभ कर्म करके सभी ग्रहों के अरिष्ट की शान्ति होती है। किसी महात्म मास में अपने इष्ट देव की पूजा करके सर्व सिद्धि होगी, बाकी राम जी कृपा रखें।

3. मन्त्रों की भाषा उक्त दोनों भाषाओं से भिन्न है। यह प्रायः हिन्दी है, परन्तु कुछ शब्द अपरिचित भी हैं, यथा-

1. भूत प्रेत भगाने का मन्त्र-

जमकी नगरी जमकी छ़ाती
तुम बसे बारह ज़ाती
तुम बसे छूरी पांखुड़ी के घरे।
खास फास मेरे पास, काली कुकड़ी रतवा स्याल़
तुमकी मुखे जमका जाल
काली काली महाकाली, इन्दर की बेटी ब्रह्मे की साली
जांकू भेजूं वहां कू जाली
जिसको भेजूं उसको खाली
आकाश को भेजूं आकाश का काम सुधारे
पाताल को भेजूं पाताल का काम सुधारे
मेरी भक्ति मेरे गुरु की शक्ति
फूर मन्त्रा ईश्वर की बाचा

2. बच्चे द्वारा दूध न पीने पर मन्त्र–

काईले भैंरू काईली रात भैंरू जगाऊ आधी रात
ऐसा भैंरू कौन है मेरे भैंरू की पूजा मिटे
आठ मशाण खाये सोलह मशाण फिरे

कोल्हू का तेल कुम्हार का हाण्डा
पकड़ के लाओ हजूर
दुश्मण को पटवारी, भोन जान को बन्द करो
खेचरी भोचरी को बन्द करूं
लोग लगाये को बन्द करूं
डागी जोगणी को बन्द करूं
खेचरी भूचरी को बन्द करूं
मड़ मशाण को बन्द करूं
इतने बन्धन बन्धू देहणा बन्धू पांव
मेरा मन्त्र झूठा जाओ
फूर मन्त्रा ईशर की बाचा

❑

साञ्चा ग्रन्थों का आधार और उनमें ज्योतिष सार

प्रो० केशव शर्मा

वेदों और उत्तरकालीन भारतीय साहित्य में समस्त सृष्टि चक्र के सर्वविध ज्ञान और ईश्वरीय गुप्ततम रहस्यों का सर्वदा विवेचन होता रहा है। वेद, उपनिषद्, ब्राह्मण, आरण्यक, स्मृति, रामायण, महाभारत और पुराण तदुत्तरकालीन साहित्य-जो प्रायः संस्कृत में उपलब्ध है- में समस्त सृष्टि सानन्द जीवन यापन कर सके इसी का अनुसन्धान समुल्लेख और व्याख्या है। ईश्वर आनन्दमय है, उसी आनन्दमय से इस सारी सृष्टि का विकास होता है। सारी सृष्टि में दुःख नाम की किसी वस्तु का दर्शन न हो एतदर्थ ही सारे भारतीय शास्त्र, समस्त भारतीय विद्याएं सर्वदा मानव का पथ प्रदर्शन करती रही हैं। विश्वजनीन आनन्द के दर्शन के लिए ही तो भारतीय महर्षियों ने यह उद्घोषणा की किः-

भ्रातरो मनुजाः सर्वे स्वदेशो भुवनत्रयम्।।

अर्थात् समस्त मानवमात्र परस्पर भ्रातृत्व का बर्ताव करें और तीनों भुवनों को अपना देश समझें। विश्व शान्ति, विश्व-सुख और विश्व आनन्द का यह मूलमन्त्र है। यह सब लिखने का आशय यह है कि भारतीय वेदों, शास्त्रों, पुराणों, स्मृतियों आदि ने मानव को सुखी करने हेतु सर्वदा विधियों का और उपायों का विधान किया है। हां कुछ ऐसी बातें भी स्मृति पुराणादिकों में आई जो सामयिक थीं या इतिहास के अतिदीर्घ काल के चक्र परिवर्तन के साथ उनमें समय-समय पर विद्याओं को भ्रष्ट करने के लिए क्षेपक भी सम्मिलित होते रहे। तो भी भारतीय शास्त्र और भारतीय विद्याएं कुल मिलाकर सत्यं शिवं और सुन्दरम् से ओत प्रोत रही हैं।

साञ्चा ग्रन्थ क्या

इन्हीं भारतीय विद्याओं की एक छोटी सी कड़ी है साञ्चा ग्रन्थ। हो सकता है कि ये साञ्चा ग्रन्थ भारत के अन्य पहाड़ी राज्यों में भी हों या इनसे मिलते जुलते हों पर अभी हम केवल हिमाचल की बात लिख रहे हैं। प्रदेश के शिमला, सिरमौर और सोलन ज़िलों में इन ग्रन्थों का या साञ्चा विद्या का प्रचार आज भी किसी न किसी रूपमें विद्यमान है। यद्यपि चौथी और छठी शताब्दी तक के कोशों में साञ्चा शब्द उपलब्ध नहीं तो भी इसका अभिप्राय सत्य विद्या से है अथवा साञ्चा यानि सूत्र। संक्षेप सिद्धान्तों में, जिसमें विद्या या ज्ञान का विवरण है वह है साञ्चा। साञ्चा अर्थात् सच्चा परन्तु साञ्चा विद्या के पण्डित सूर्य को ही साञ्चा मानते हैं। इसे महासू अर्थात् महाशिव के रूप में भी माना जाता है। ये साञ्चा ग्रन्थ पाबुची और भटाक्षरी लिपियों में लिखे हुए हैं। यह लिपि शारदा से उद्भूत टांकरी से मिलती जुलती है। कुछ एक साञ्चों का अब देवनागरी लिपि में भी लेखन हो चुका है।

वैदिक ज्ञान या मन्त्र तीन भागों में विभाजित हैं जिसे त्रिकाण्ड कहते हैं। ज्ञानकाण्ड, कर्मकाण्ड और उपासना। इन तीनों काण्डों के विषयों के संचित भण्डार इन साञ्चों में उपलब्ध हैं।

वैसे मेरे विचार में साञ्चा शब्द वैदिक काल में प्रयुक्त शब्द है जिसका अर्थ सञ्चय है। हिमाचली भाषा में साञ्जणा-इकट्ठा करना या साञ्चा-इकट्ठा किया। इस प्रकार साञ्जा शब्द का प्रयोग पूर्णतः संग्रह के लिए ही होता है। यह साञ्जा शब्द साञ्चा का ही रूप है। इस बात से यह पूर्णतः सिद्ध होता है कि साञ्चा अर्थात् संग्रह। उपलब्ध साञ्चों में अनेक विषयों का संकलन है। मध्य युग में जब संस्कृत के ऊपर उसके विनाश के लिए विदेशियों के असंख्य प्रहार हुए तो देश में भी उथल-पुथल होती रही। पण्डित लोग विभिन्न वेद पुराण, आयुर्वेद, ज्योतिष और दूसरी आवश्यक जनोपयोगी विद्याओं के संस्कृत ग्रन्थों से दैनिक उपयोग के विषय इन साञ्चों में यहां की तत्कालीन प्रचलित लिपियों में करते रहे होंगे। एक अदाहरण देखिए:- प्रदं प्रदं प्रदं तु चे इव अक्षाणि पतिता तवम्। पुत्र जन्म धनलाभ।। इष्ट सुखागम।। सर्व सुख इञ्च कल्याणम्।। जते मनसे वतति।'' यह सब संस्कृत का अशुद्ध रूप है जो शनैः शनैः एक ग्रन्थ से दूसरे में प्रतिलिपि करते ग्रहण कर लेता है। अतः संस्कृत ग्रन्थों से दैनिक जीवनोपयोगी अनेकानेक विषयों का जिन ग्रन्थों में संग्रह किया गया ये ही साञ्चा नाम से आज प्रख्यात हैं और भारतीय संस्कृति की रक्षा में इनका अत्यन्त उपयोगी योगदान है।

साञ्चा में विषय विन्यास

जैसे ज्ञानकाण्डः- सत्व, रजः, तमस्- ये तीन गुण हैं। प्रकृति-इच्छा, क्रिया,

ज्ञान ये इनकी शक्तियां हैं और इनसे सृष्टि का विस्तार आदि। ज्ञानकाण्ड से ही सम्बद्ध है त्रिकाल ज्ञान अर्थात् ज्योतिष। इसी प्रकार कर्मकाण्ड-अर्थात् सोलह संस्कार आदि और उपासना के अन्तर्गत मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र के प्रयोग। ये सभी वैदिक विषय साञ्चों में उपलब्ध होते हैं।

जो साञ्चे भ्रमण या यात्रा में ले जाए जाते हैं उनमें तीनों काण्डों का मिश्रण पाया जाता है। इसके अतिरिक्त पञ्चाङ्ग बनाने का साञ्चा पुराण का साञ्चा, और पूजन का साञ्चा। इन साञ्चों को बाहर नहीं ले जाते। आधि दैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक ये त्रिताप के नाम से शास्त्रों में अभिहित हैं। साञ्चों में भी इन तीनों प्रकारों को ओपरा, पराया और देहजन्य इस प्रकार स्थानीय भाषा में स्थापित किया गया है।

अत: स्पष्ट है कि संस्कार जिनके करने से मानव दानवत्व से छूटकर सचमुच मानव बनता है साञ्चों में अपने कुछ पृथक् ढंग से हमारे सामने आते हैं। जब मानव संस्कृत हो जाता है तो उसे सर्वसुख सुविधा पूर्ण जीवन जीने की इच्छा होती है। उसी के लिए साञ्चों में यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र आदि का विधान है। इन सब वस्तुओं के लिए है महत्वपूर्ण कालज्ञान जिसका साञ्चों में विस्तृत वर्णन है।

साञ्चा ग्रन्थों का काल निर्धारण

साञ्चा पोथियां कितनी प्राचीन हैं इस पर अभी काफी अनुसन्धान की आवश्यकता है। चौथी से छठी शताब्दी तक के कोशों में साञ्चा शब्द का न होना इस बात का प्रमाण है कि उस काल के बाद ये साञ्चा ग्रन्थ प्रयोग में आने लगे होंगे। कुछ विद्वान ऐसा भी मानते हैं कि यह पौराणिक युग की देन है जिसका काल ईसा से एक हज़ार वर्ष पूर्व से लेकर एक हज़ार वर्ष बाद तक माना जाता है। बौद्धजैन कालीन साञ्चे भी उपलब्ध होते हैं। वैसे सहदेव का साञ्चा, पाण्डवों के काल तक भी इन्हें ले जाता है परन्तु इस सब पर अभी अनुसंधान की पर्याप्त आवश्यकता है। नाथ सम्प्रदायकालीन प्रभाव इन ग्रन्थों पर अधिक दिखाई देता है। अत: गुरु गोरखनाथ के समय के साथ भी इनका प्रादुर्भाव जोड़ा जाय तो युक्ति युक्त लगता है। पाबुच विद्वानों के साथ वार्तालाप के एवं विचार विनिमय के समय आज से 300 वर्ष पूर्व के किसी बुजुर्ग विद्वान् द्वारा प्रदेश में साञ्चा के आगमन को या प्रादुर्भाव को जोड़ सकते हैं। जो भी हो ऐतिहासिक दृष्टि से इस पर अलग से विचार की एवं अनुसन्धान की आवश्यकता है।

ज्योतिष और साञ्चा ग्रन्थ

भारतीय ज्योतिष के विषय में कहा गया है कि **प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ।** ज्योतिष शास्त्र इतना सत्य और प्रामाणिक है कि इसके साक्षी स्वयं

सूर्य तथा चन्द्रमा हैं। मैंने यह पहले ही प्रतिपादित किया है कि वैदिक ज्ञान से कुछ अछूता नहीं। हमारे महर्षियों ने मानवकल्याण हेतु अतिसाधारण जीवन व्यतीत करते हुए अनूठे और अनोखे रहस्य हमारे सामने अपनी साधना के बल से रखे। ज्योतिष शास्त्र भी इन्हीं रहस्यमय ज्ञानों में से एक है। स्थूल रूप से ज्योतिष के गणित और फलित ये दो अंग हैं। वैसे आज तक ज्योतिष पञ्च स्कन्धात्मक बन गया है और उसकी भी अनेक शाखा प्रशाखाएं हैं। ज्योतिष शास्त्र के आधार पर काल गणना भारत की अपनी विशिष्ट खोज है और अंक शास्त्र यहीं से अरब और योरूप तथा अमेरिका तक पहुंचा। गणित की सूक्ष्मता का एक उदाहरण प्रस्तुत है: ऋषियों ने कहा कि कमलदल के भेदन में एक तीक्ष्ण सूचि का जितना समय लगता है उसे एक त्रुटि कहा जाता है। एकसौ त्रुटियों का एक 'लव' और तीस 'लव' का एक निमेष होता है। 27 निमेषों का एक 'गुरु अक्षर', 10 गुर्वक्षरों का एक प्राण और 6 प्राणों की एक विघटिका। 60 विघटिका की एक घटिका अर्थात् दण्ड और साठ दण्ड का एक दिन रात। लिखने का अभिप्राय यह है कि (17496000000) एक दिन रात में सत्रह अरब, उनचास करोड़ और साठ लाख त्रुटियां होती हैं। अंग्रेज़ी हिसाब के अनुसार एक दिनरात में (86400) छयासी हज़ार चार सौ सैकण्ड होते हैं। ज्योतिष में एक गणना और भी है:- जैसे

60 तत्परस	=	1 परस।
60 परस	=	1 विलिप्ता।
60 विलिप्ता	=	1 लिप्ता।
60 लिप्ता	=	1 विघटिका।
60 विघटिका	=	1 घटिका।
60 घटिका	=	1 दिनरात।

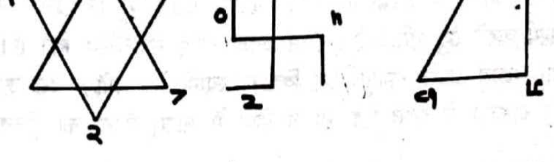
अर्थात् एक दिन रात में (4665600000) छ्यालीस अरब पैंसठ करोड़ साठ लाख तत्परस होते हैं। इस कारण एक सैकण्ड में (54000) चौवन हज़ार तत्परस हुए। यह तो रही ऋषियों द्वारा ज्योतिष में दी गई कालगणना की सूक्ष्मता। इसके साथ ही उन्होंने सृष्टि के आरंभ से लेकर आज तक की काल गणना भी दी है जो प्रतिवर्ष प्रकाशित पञ्चाङ्गों में लिखी होती है। कल्प मन्वन्तर एवं युगों की काल गणना यह सब भारतीय ज्योतिष शास्त्र का ही चमत्कार है। आधुनिक वैज्ञानिक अनुसन्धानों की कुञ्जी भी गणित ही है। इस समय जो खगोल का अध्ययन हो रहा है और विभिन्न उपग्रह जो आकाश में भेजे जा रहे हैं उनका मूल मन्त्र भी यह गणित है जिसने सूक्ष्म से सूक्ष्मतर काल को पकड़ने का कार्य किया है।

यह पहले लिख चुका हूं कि यद्यपि ज्योतिष की आज अनेक शाखा प्रशाखाएं फैल चुकी हैं तो भी उनका स्थूल रूप गणित और फलित विशेषकर सर्वत्र प्रचलित है। मध्यकाल में जब लोग संस्कृत के सम्पर्क से एवं ज्ञान से हीन हो गये थे तो इस अद्‌भुत ज्योतिष शास्त्र के ज्ञान को भी पण्डितों ने साञ्चों में अपनी-अपनी बुद्धि और ज्ञान के अनुसार संग्रह करके सुरक्षित रखा।

सिरमौर मण्डल में खड़कांह नामक ग्राम है, यहां के पाबुच पञ्चांग बनाते थे जिसका रूप कुछ इस प्रकार का है:- सम्वत्सर वैशाखी से आरंभ होता है। इस दिन इस क्षेत्र में एक स्थान पर विशाल मेला होता है जिसमें कई ग्रामों के लोग एकत्रित होते हैं और पञ्चाङ्ग के फल का अर्थात् नव वर्ष के फल का श्रवण सामूहिक रूप से करते हैं। सामूहिक पूजा भी होती है। लोग पण्डित से अपना भविष्य पृथक्-पृथक् रूप से भी पूछते हैं। पाबुच चैत्र वैशाख संक्रान्ति के दिन को नववर्ष का प्रथम दिन मानते हैं। इस दिन दाएं स्वर के चलते हुए दिन के बारह बजे के लगभग (9) नौ अंगुल का एक शंकु आंगन या बरामदे में गाड़ते हैं। जब उसकी परछाई ऊपर के सिरे तथा नीचे के सिरे की सीध में आएगी तो उसे पलभा माँना जाता है अर्थात् यह नए वर्ष का पहला पल होता है। तदुपरान्त 'धुड़योट' (एक प्रकार का फट्टा) जो लगभग 20 इंच लम्बा और चौदह इंच चौड़ा होता है, लिया जाता है। माघ की बसन्त पञ्चमी के दिन देवस्थल से ली हुई, अभिमन्त्रित की हुई मिट्टी छानकर पहले ही रखी होती है। इसे अभिमन्त्रित करने के लिए मन्त्र के आरंभिक अक्षर ऊँ धदूं .... आदि हैं और उसके सम्पुट के आरंभिक अक्षर नीङरी ग आदि हैं। देवस्थल में देवता के पूजा के पारायण स्थल (गाडू) की मिट्टी ही पूजा के उपयुक्त मानी जाती है। इस मिट्टी को लकड़ी के तख्ते पर बिछाया जाता है। उस पर एक चक्र पाबुची लिपि में बनाया जाता है। इस चक्र को 'मिट' कहते हैं। इस पर तेरह कोष्ठक बनते हैं। जिस पर पिछले वर्ष का ध्रुवांक (भगण) के अंक अहर्गण करके "खोखू जुतानु किरत्वा'' आदि कार्य से पञ्चाङ्ग का श्री गणेश होता है। चक्र इस प्रकार का होता है :-

अ ऊ म बिन्दु सूर्य को भी इंगित करता है और इनके संयोग से ओं भी बनता है जो सृष्टिकर्ता का प्रतीक है।

चक्र :-



"अ उ म" अ=5 उ=4 म=4 इस प्रकार यह चक्र 13 अहर्गण को बताता है। ओं का बिन्दु सूर्य का चिह्न माना जाता है। चक्र में जो अंकसन्निवेश हैं वह नववर्ष निर्धारण हेतु इंगित करते हैं। सर्वप्रथम इन अंकों के जोड़ के आधार पर ध्रुवांक निकाले जाते हैं। सम्वत् का नामकरण शंकर काल या शाका की गणना के आधार पर होता है। शाका गिनती का मूल आधार होता है। गणना का साञ्चा अलग है। यह साञ्चा "उगत का साञ्चा" कहा जाता है। यह गोपनीय है और खड़कांह में उपलब्ध है।

नामकरण की दृष्टि से वर्षों के नाम 28 हैं जो इस प्रकार है:- अग्नि, बब, आदि। पर इनके नामों को भी साञ्चा वाले पण्डित गुप्त बताते हैं।

इसी प्रकार साञ्चा के अनुसार छांविसर (सम्वत्सर) साठ हैं। इनके नाम विरूपाक्ष, परवर्द्ध, गज, रोहित, च्याम, वायु आदि हैं। वायु के वर्ष में कौन सा वायु प्रबल रहेगा यह भी निर्धारित किया जाता है। वायु सम्वत्सर में हरू, भुभू आदि प्रसिद्ध हैं। मेघ चार माने जाते हैं। ये दाणियर, प्रहकर आदि हैं। सम्वत्सर इनके नाम से भी है। इन्हीं के फलादेश के अनुसार सम्वत्सर की प्रकृति निर्धारित होती है। चक्र बनाने के पश्चात् पूजा का विधान है। इस पूजा में आनो (आवाहन), क्रिया (न्यास), मानणो, (ध्यान) चुकाणो ढाल सहित विनियोग आदि प्रक्रिया से पूजा आगे बढ़ती है। ढाल (पारायण) के पश्चात् गणित का आरंभ किया जाता है। इस पूजा विधान का देवता ईशुर (ईश्वर) है। यही ईश्वर शिव के नाम से भी यहां अभिहित है क्योंकि इनकी पिण्डी के रूप में पूजा होती है। इनके पूजा मन्त्र के आरंभिक अक्षर इस प्रकार हैं– ईशरे खूदी जूड़ी....... अर्थात् ईश्वर ने आकाश, आन्तरिक्ष बनाया। आकाश में वायु को रखा। वायु के वेग से अग्नि पैदा हुई। अग्नि के आपस में टकराव से जल उत्पन्न हुआ। जल के आपसी टकराव से मिट्टी बनी। यह मिट्टी ही शंकर है (ईशुर) यही इन्द्र (मिघों का राजा) है। यही वरुण (पानी) है। यही वागुर (वायु) है, यही आग है और यही गोयण (आकाश या अन्तरिक्ष) है। सम्वत्सर घटने पर 26 पक्ष अर्थात् 26X15=390 दिन होते हैं। परन्तु पक्ष 13,14 अथवा 15 दिन के होते हैं अतः वर्ष के कुल दिन 365 या 363 हो जाते हैं। जब बढ़ते हैं तो सम्वत्सर में अपक्ष हो जाते हैं और दिन 365 हो जाते हैं।

साञ्चा भी वर्ष में बारह मास मानता है जिनके नाम इस प्रकार हैं:- वेशाऊ (विशाख), जेठ (ज्येष्ठ), शाड़ (आषाढ़), शाओण (श्रावण), भौज्ज (भाद्रपद), शउज (आश्विन), काते (कार्तिक), मुंगशेर (मार्गशीर्ष), पूश (पौष), माहग (माघ), फागण (फाल्गुण), चोएतर (चैत्र) साञ्चा में माघ मास को सबसे पवित्र माना जाता है। इसके सम्बन्ध में साञ्चा में लिखा है कि "माघे" तू धरमों को नामी, बरमा, विशणु सूपौतिशठते" अर्थात् माघ मास धार्मिक कार्य करने हेतु प्रसिद्ध है। इसमें ब्रह्मा, विष्णु सुप्रतिष्ठित होते हैं। पाबुच पण्डितों के अनुसार महासू अर्थात् महासूर्य इस विद्याका स्वामी है। क्योंकि इस ज्ञान का आदिदेव महासू है। खड़कांह में स्थित एक साञ्चा पोथी में महासू देवता का पूजन स्थानीय भाषा

में अंकित है। साञ्चे में शुधा पितर, जो गणना की कुञ्जी है, वह भी महासू देवता को समर्पित है।

पाबुच सूर्य सिद्धान्त के अनुसार अपने पञ्चाङ्ग का गणित करते हैं और चन्दाण और मण्योटी के पण्डित चान्द्रमान से गणित करते हैं। इनके अनुसार चान्द्र मान से पञ्चाङ्ग बनाने की रीति को पण्डवाणी भी कहते हैं। चन्दवाणी और पण्डवाणी भटाक्षरी के ही रूप हैं। चान्द्रमान के अनुसार प्रथम नवरात्र से नव वर्षारम्भ ये लोग मानते हैं। चन्दवाणी में भी चिरी अर्थात् पञ्चाङ्ग निर्माण का प्रचलन रहा है। अभी भी भट्योड़ी (चौपाल तह0) और मण्योटी (चौपाल तहसील) में इसका प्रचलन है।

उल्लिखित विवेचन से यह पूर्णतः स्पष्ट है कि साञ्चों में जो ज्योतिष सम्बन्धी बातें हैं वे सब वैदिक आर्ष ज्योतिष का ही सार है जैसे सात बार पक्ष दो शुदि और बदि सम्वत्सर और उसके दिन आदि की गणना सब भारतीय ज्योतिष पर आधारित है। सर्वप्रथम जब पञ्चाङ्ग निर्माण कार्य आरम्भ होता है तो साञ्चा की पूजा आदि की जाती है और जनता मेले में इकट्ठा होती है। जब पञ्चाङ्ग पूर्ति हो जाती है और लोग पण्डित से अपने नए वर्ष का भविष्य भी पूछते हैं। भारतीय ज्योतिष या आर्ष ज्योतिष में भी नववर्ष पर नए वर्ष के फलादेश को पढ़ना और सुनना आवश्यक और कल्याणकारी माना गया है। शास्त्रकार लिखते हैं :-

ये चैत्र शुक्ल प्रतिपत्तिथौ फलं
शृण्वन्ति भक्त्या प्रतिवार्षिकं नराः।
ते दुःख दारिद्र्यरुगादि वर्जिताः।
नन्दति लोके धन धान्य संकुलाः।।1।।
शाकस्य श्रवणात् सुपुण्य जननं।
सम्वत्सर स्याद्व्यताम्।
राज्ञां राजकुले जयो विजयते।
मन्त्रीफलं बुद्धिदम्।।
धान्यं धान्यपते रसं रसपतेः।
क्षेत्रेषु बृद्धिस्तथा।।
सस्यं सर्वसुखञ्च वत्सर फलं
संशृण्वता सिद्धिदम्।।2।।
इति सम्वत्सरादि फलश्रुतिः।

अर्थात् जो चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को भक्ति पूर्वक सम्वत्सर का फल प्रतिवर्ष सुनते हैं उनके दुःख दारिद्र्य और रोगों का नाश होता है। वे धनधान्य से परिपूर्ण होते हुए संसार में वर्ष भर आनन्दमय जीवन बिताते हैं। सम्वत्सर का फलश्रवण

करना सुपुण्य तथा सम्पन्नता को प्रदान करता है। वर्षराट् का फल श्रवण से राजकुल में जय प्राप्त होती है। मन्त्री का फल सुनने से बुद्धिबल में वृद्धि होती है। धान्यपति का फल सुनने से धान्य प्राप्ति तथा रसेश का फल सुनने से रस और क्षेत्र में वृद्धि होती है। इस प्रकार सम्वत्सर का फल श्रवण करने से सुनने वालों को धान्य, सर्वसुख और सिद्धि प्राप्त होती है। इसी परम्परा का पालन हिमाचल में साञ्चा विद्या के माध्यम से आज भी सार्वजनिक रूप से हो रहा है।

वर्तमान पञ्चाङ्गों में भी विभिन्न स्थानों की पलभा शंकु के माध्यम से ही बनाई या स्थिर की जाती है जिसका उल्लेख साञ्चा में है। तो वह भी आर्ष ज्योतिष का ही सार है। फिर पञ्चाङ्ग निर्माण से पूर्व जो यन्त्र लकड़ी के फट्टे पर पवित्र मिट्टी को बिखेर कर बनाए जाते हैं वे षट्कोण, स्वस्तिक और त्रिकोण हैं। षट्कोण अनादि काल से सूर्य का या शक्ति का प्रतीक है, स्वस्तिक कल्याण का और त्रिकोण त्रिगुणात्मक सृष्टि का। जो इस ओर इंगति करता है कि पञ्चाङ्ग का आधार सूर्य है और यह संसार त्रिगुणमयी सृष्टि है। इसमें ज्योतिष विद्या के या काल ज्ञान के द्वारा सबका कल्याण हो। यह भी पूर्णतः आर्ष ज्योतिष पर ही आधारित है। और विद्वानों में ऐसी परम्पराएं रही हैं, आज कम्प्यूटर के शोर में चाहे वे बेशक विलुप्त हो रही हों। इन चक्रों में 13 अंक अंकित किए जाते हैं और ओं लिखा जाता है। जिसका रहस्य यह है कि तेरह का तीन त्रिगुणात्मक सृष्टि है। और तीन से पहला एक का अंक एक ईश्वर अर्थात् ओंकार। याने त्रिगुण मयी सृष्टि का कर्ता है ओंकार, परब्रह्म साञ्चा भी षष्ठि सम्वत्सर को ज्योतिष के समान ही मानता है। वायु और मेघों के नाम और उनका ज्योतिष में जो महत्व है वही साञ्चा में भी है। पूजा विधान स्थानीय भाषा में है पर आर्ष ही इसका भी मूल है। साञ्चा शिव को आदि देव मानता है जो वैदिक है। पक्षका छोटा बड़ा होने का सब विधान ज्योतिष में है और उसी का सार साञ्चों में भी है क्योंकि तिथि क्षय से पक्ष में वृद्धि और न्यूनता होती रहती है।

आर्ष ज्योतिष में जैसे बारह मास हैं वे ही साञ्चे में हैं। माघ मास को आर्ष ज्योतिष भी सब धार्मिक कृत्यों के लिए शुभ मानता है और साञ्चा में भी वही है। साञ्चा के अनुसार सौर और चान्द्रमान से पृथक्-पृथक् पञ्चाङ्ग निर्माण भी ज्योतिष पर ही आधारित है। आज भी पञ्चाङ्ग सौर और चान्द्र मानों से ही बनते हैं। अतः जैसा आर्ष ज्योतिष के अनुसार चान्द्र मान से नवरात्र से तथा सौर मान से वैशाखी से नव वर्षारंभ होता है तदनुसार ही साञ्चा भी दोनों को मानकर ही चलता है। पञ्चाङ्ग निर्माण में थोड़ा सा अन्तर यह है कि आर्ष ज्योतिष तिथि, वार, नक्षत्र, योग और कर्ण इन पांच अंगों को लेकर पञ्चाङ्ग की संज्ञा प्राप्त करता है और साञ्चा के अनुसार तिथि, वार और नक्षत्र इन तीन बातों को लेकर पञ्चाङ्ग बनाया जाता है जिसे स्थानीय हिमाचली में चिरी कहा जाता है, जिसको त्रि कह

संकते हैं, त्रिसे चिरी अपभ्रंश हो गया और जिसका अभिप्राय यह कि तीन बातों पर आधारित है यह चिरी।

इस सन्दर्भ में एक अन्य बात भी सामने आई है। हमारे पास पण्डित देवीराम ज्योतिषी की चिरी (जन्त्री) का एक नमूना है। जिसे हम यहां प्रस्तुत कर रहे हैं:-

"शिरी सम्वत् 2024 सम्वत्सर चित्र भानु नाम है। वर्षाधिपति चन्द्रमा है। सामाधिपति बुद्ध है। राजा बुध मन्त्री शनि। रसाधिपति चन्द्रमा। नाग का राजा पोहकर। मेघ का राजा चक्रहस्त, बाऊ राजा रु रु नाम का है। वर्ष अहीर नाम है। जुग इन्द्र नाम है।

कलियुग 432000 वर्ष की आयु, गतवर्ष 5065, शेष कलि प्रमाण 426932 वर्ष। गंगा की आयु 7 विश्वा, यमुना की आयु 11 विश्वा। वर्षा 13 विश्वा, धन 15 विश्वा, तृण 9 विश्वा, शान्ति 1 विश्वा, वायु 5 वि., तेज 12 वि., सुख 13 वि, विरोध 15 वि., विग्रह 11 वि., खपति 15 वि., अग्नि 3 वि., चूहा 3 वि., सर्प 2 वि. ओले 2 वि., रोग 3 वि., दाढ़ (बाघ या शेर) 4 वि., बाढ़ 6 वि., निद्रा 5 वि., स्त्री 11 वि., पुरुष 7 वि., पाप 15 विश्वा, पुन्न 5 वि., उद्यम 15 वि., आलस 5 वि., सम्वत्का वास धोबी के घर में। रोहिणी निवास समुद्र के किनारे। स्तम्भ दो हैं। दो अशुभ। चन्द्र ग्रहण एक, सूर्य ग्रहण एक। समय वर्ष भर का निष्कर्ष समय मध्य रहेगा जी।।

सम्वत् 2024 में द्वादश राशि का

लाभ व खर्च

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	राशि
11	5	11	5	8	11	5	11	8	2	2	8	लाभ
14	8	5	2	14	5	8	5	5	3	8	5	खर्च

जब हम 2024 का मार्तण्ड पञ्चाङ्ग देखते हैं और दोनों का तुलनात्मक अध्ययन करते हैं तो दोनों पञ्चाङ्गों में पर्याप्त अन्तर यत्र तत्र दृष्टिगोचर होता है। जैसे 2024 की प्रस्तुत चिरी में सम्वत्सर का नाम चित्रभानु है। इधर पञ्चाङ्ग में रौद्र नाम सम्वत्सर है। चिरी में राजा बुध मन्त्री शनि है। जबकि पञ्चाङ्गों में राजा चंद्र और मन्त्री गुरु है। चिरी में सम्वत्सर का निवास धोबी के घर में लिखा है। जबकि इसी वर्ष के पञ्चाङ्ग में सम्वत्सर का निवास माली के घर में है। चिरी में एक चन्द्र ग्रहण और एक सूर्य ग्रहण बताया गया है और इधर पञ्चाङ्ग

में सूर्य ग्रहण तीन तथा चन्द्र ग्रहण एक का उल्लेख है।

इसी प्रकार इस सम्वत्सर में क्या वस्तुएं कितने विश्वा हैं इस फलादेश में भी कहीं-कहीं अन्तर है।

चिरी में	पञ्चाङ्ग में
शान्ति 11 विश्वा	शान्ति 5 विश्वा
वायु 5 विश्वा	वायु 13 विश्वा
तेज 12 विश्वा	तेज 5 विश्वा
अग्नि 3 विश्वा	अग्नि 2 विश्वा
मूषक 3 विश्वा	मूषक 7 विश्वा
निद्रा 5 विश्वा	निद्रा 3 विश्वा

इसके अतिरिक्त चिरी में दो स्तम्भों का उल्लेख इस वर्ष में किया गया है और पञ्चाङ्ग में चार स्तम्भों का लेख है। लाभ व्यय चक्र में स्वल्प अन्तर दृष्टिगोचर होता है जैसे:- वृश्चिक में $^{11}/_{14}$ पञ्चांग में तो चिरी में $^{11}/_{5}$ तथा मकर में पञ्चाङ्ग में $^{2}/_{8}$ तो चिरी में $^{2}/_{3}$।

सम्भव है यह लेखनी दोष हो। अस्तु, इस समस्त अध्ययन से यह तो स्पष्ट सिद्ध होता ही है कि साञ्चा पोथियों में अन्य अनेक विद्याओं के समान आर्ष ज्योतिष भी है। काल निर्णय हेतु पञ्चांग निर्माण पद्धति भी है, मुहूर्त आदि का पूर्ण विचार इस चिरी के आधार पर ही किया जाता है। मुहूर्त विधान के नियम आर्ष ज्योतिष को ही आधार मान कर रखे गए हैं। फलित के लिए भी प्रश्न ज्योतिष के आधार पर कार्य किया जाता है। प्रश्न ज्योतिष आर्ष ज्योतिष का ही एक अंग है जिसका साञ्चा ग्रन्थों में भरपूर प्रयोग होता है। इसमें पाशे का प्रयोग होता है। पाशों पर गोलाकार चिह्न बने हुए होते हैं। पाशा फैंकने पर गणित के आधार पर ही फलादेश कहते हैं। अत: नि:सन्देह साञ्चा ग्रन्थों में ज्योतिषसार विद्यमान है।

महाभारत युग के पश्चात् भारतीय विद्याओं को एक बहुत बड़ा आघात लगा। फिर भी समय-समय पर कुछ राजाओं और सम्राटों के शासन काल में वैदिक ज्ञान और संस्कृत का प्रचार प्रसार होता रहा। पर ऐसे भयंकर और अशिक्षा के युग में जब विदेशी शासकों ने भारतीय संस्कृति, साहित्य, संस्कार और संस्कृत को समूल नष्ट करने के प्रयास किए तो इन साञ्चा ग्रन्थों में टूटी-फूटी संस्कृत का रूप देखने को मिलता है। क्योंकि मूल ग्रन्थ कहीं कहीं पर उपलब्ध थे। उनसे इन विद्याओं की प्रतिलिपि की जाती थी या कराई जाती थी। लिपिकार यदि स्वयं विद्वान नहीं होते थे तो त्रुटियां रहना लेखन में स्वाभाविक था। अत: संस्कृत का विकृत रूप

बन गया। फिर शनैः शनै वह स्थानीय बोलियों में भी परिवर्तित हो गया। यह तो ऐतिहासिक घटनाओं के कारण हुआ। परन्तु साञ्चा ग्रन्थों ने अन्य विधाओं के साथ-साथ ज्योतिष की जो रक्षा की है उसके लिए विद्वत् समाज आज इन ग्रन्थों का ऋणी है। अभी इस विषय पर कार्य आरंभ ही हुआ है। इस पर आगे अनुसन्धान और खोज की परमावश्यकता है। पञ्चांग निर्माण की कुञ्जी आदि पर ज्योतिर्विद् विचार करें और देखें कि यह विधि कहीं अधिक सुगम तो नहीं है। अतः इन साञ्चा ग्रन्थों पर आगे अधिक अनुसंधान परमावश्यक है। प्रदेश की ओर से संस्कृत और संस्कृति तथा संस्कारों की रक्षा के लिए महान् भारत को यह महानतम योगदान है इसमें कोई मतभेद नहीं होना चाहिए।

❑

साञ्चा में प्रश्न लगाने की विधि

भारतीय संस्कृति में ज्योतिष शास्त्र का विशेष महत्त्व रहा है। सुख की प्राप्ति और दुख से मुक्ति पाने के लिए मानव सर्वदा लालायित रहा है। इस प्रयोजन से वह आदिकाल से महान शक्तियों की आराधना करता रहा है। वैदिक काल में उसने वैदिक मन्त्रों द्वारा विभिन्न देवताओं की आराधना करके अपनी मनोकामना की सिद्धि की है। धीरे-धीरे मंत्र के साथ तन्त्र विद्या का भी प्रचलन हुआ।

पहाड़ी समाज में कष्ट के निवारण और सुख विस्तारण के लिए अनेक तरह के साधन और उपचारों का प्रचलन रहा है। उसमें मंत्र, तंत्र, यन्त्र सभी तरह के उपायों का संमावेश रहा है। ऐसे साधनों में साञ्चा विद्या का विशेष महत्त्व है। साञ्चा ऐसी संचित निधि है जिसे पहाड़ी समाज के प्रबुद्ध पंडितों ने अकथ्य साधना से ग्रहण करके हस्तलिखित पोथियों में सुरक्षित रखा है। ये ऐसी विद्या के भण्डार हैं जिसके द्वारा पहाड़ी समाज आदिकाल से अपने दु:खों और कष्टों का समाधान करता रहा है।

साञ्चा वस्तुत: भोजपत्र (आजकल सामान्य कागज़ पर भी) पर लिखे पत्रकों का संग्रह है जिनमें मन्त्र, तन्त्र और यन्त्र विधाओं का उल्लेख है। ये साञ्चा पांडुलिपियां दो तरह की हैं एक मूल और दूसरी गणक। हस्तलिखित मूल साञ्चे अधिक विस्तृत और बड़े हैं, जिन्हें बाहर नहीं ले जाया जाता तथा गणक सांचे पंडित लोग अपने साथ भ्रमण करते हुए बाहर ले जाते हैं। उनके आधार पर सामान्य उपचार करते और बताते हैं और आवश्यक हो तो लोगों को मूल साञ्चा के अध्ययनार्थ और अवलोकनार्थ घर पर बुलाते हैं। ऐसे पण्डितों को, जो पाबुची लिपि में लिखे साञ्चे के ज्ञाता हों पाबुच, पण्डवाणी लिपि के ज्ञाता को पण्डवाण तथा चन्दवाणी के विशेषज्ञ को चन्दवाण

कहते हैं। ये पण्डित प्रमुखतः शिमला ज़िले के मण्योटी, भ्राणा, टिक्करी, बलग, कलार, बथोण, चानणाधार, कौंथाल, बाहल, साम्वर, मातली, क्लीण्ड, बठलौत, शड़ी, धरेच, चड़ोली, पौची, हाटकोटी, बटाड़, नौणा, गुम्मा, टोड़सा, मसली, पौली, खशकंडी, पारसा, चिउणी, घगोली, रांवीं तथा कोटी गांवों में, सिरमौर ज़िले के खड़कांह, च्याना, कुमली, काण्डो, सिद्धयोटी, थुम्बाड़ी, टटयाना, मण्डवाच, बाम्बल, खदराड़ी, जबलोण, बगनोल, भट्योड़ी, बंगाठा, नाहन तथा उत्तर प्रदेश के ज़िला देहरादून के कुछ गांवों में निवास करते हैं। साञ्चा के प्रमुख पंडितों का विवरण इस प्रकार है :-

1. पं. अनन्त राम, गांव च्याना, डा० शिलाई, ज़िला सिरमौर।
2. पं. उदै राम, ग्राम व डा० काण्डो, तह० शिलाई, ज़िला सिरमौर।
3. पं. कण्ठी राम शर्मा, ग्राम व डा० टटयाना, तह० शिलाई, ज़ि० सिरमौर।
4. पं. ग्यारू राम, गांव बांबल, डा० कोटी उत्तरौ, तह० शिलाई, ज़िला सिरमौर।
5. पं. जगत राम, गांव च्याना, डा० शिलाई, ज़ि० सिरमौर।
6. पं. जय राम, गांव मंडवाच, डा० सांदना, तह० संगडाह, ज़िला सिरमौर।
7. पं. जाती राम, गांव सिद्धयोटी, डा० पनोग, तह० शिलाई, ज़िला सिरमौर।
8. पं. जाती राम, गांव बांबल, तह० शिलाई, ज़िला सिरमौर।
9. पं. जालम सिंह, गांव कुमली, डा० जामना, तह० पांवटा, ज़िला सिरमौर।
10. पं. जोती राम जोशी, गांव थुम्बाड़ी, डा० रोणहाट, तह० शिलाई, ज़िला सिरमौर।
11 पं. तुलसी राम, गांव च्याना, डा० शिलाई, ज़ि० सिरमौर।
12 पं. दया राम, गांव भट्योड़ी, डा० बकरास, तह० शिलाई, ज़िला सिरमौर।
13 पं. देवी राम पाण्डेय, ग्राम खड़कांह, डा० नैनीधार, तह० शिलाई, ज़िला सिरमौर।
14 पं. देवी राम शर्मा, गांव मण्डवाच, डा० सांगना, तह० संगडाह, ज़ि० सिरमौर।
15 पं. बिंदल सिंह, गांव खड़कांह, डा० रोणहाट, तह० शिलाई, ज़िला सिरमौर।
16 पं. भगत राम शर्मा, गांव एवं डा० खड़कांह, तह० शिलाई, ज़िला सिरमौर।
17 पं. भजनू, गांव बांबल, डा० कोटी उत्तरौ, तह० शिलाई, ज़िला सिरमौर।
18 पं. मनशा राम, गांव बांबल, डा० कोटी उत्तरौ, तह० शिलाई, ज़िला सिरमौर।
19 पं. मनी राम, गांव खड़कांह, डा० नैनीधार, तह० शिलाई, ज़िला सिरमौर।
20 पं. महेन्द्र सिंह, गांव खड़कांह, डा० नैनीधार, तह० शिलाई, ज़िला सिरमौर।

21 पं. मोती राम, गांव मंडवाच, डा० सांगना, तह० संगडाह, ज़िला सिरमौर।

22 पं. मोही राम, गांव खदराड़ी, डा० कोटी धमान, तह० शिलाई, ज़िला सिरमौर।

23 पं. रति राम, गांव कुमली, डा० जामना, तह० पौंटा, ज़िला सिरमौर।

24 पं. शोभा राम, गांव च्याना, डा० शिलाई, ज़िला सिरमौर।

25 पं. सुरताना, गांव खड़कांह, ज़िला सिरमौर।

26 श्री ईश्वरी नन्द, गांव गुम्मा, डा० टिक्करी, तह० रोहड़ू, ज़िला शिमला।

27 श्री ईश्वर सिंह, गांव पारसा, तह० रोहड़ू, ज़िला शिमला।

28 पं. कांचन, गांव मण्योटी, ज़िला शिमला।

29 पं. कुंभ दास, गांव व तह० चौपाल, ज़िला शिमला।

30 पं. चैत राम, गांव मण्योटी, ज़िला शिमला।

31 पं. जवाहरलाल, गांव चिउणी, तह० रोहड़ू, ज़िला शिमला।

32 पं. झतुराम, गांव डडकांह, डा० झिकनी पुल, तह० चौपाल, ज़िला शिमला।

33 पं. ठाकुर लाल शर्मा, गांव टोड़सा, तह० रोहड़ू, ज़िला शिमला।

34 पं. तुलसी राम शर्मा, गांव बटाड़, तह० रोहड़ू, ज़िला शिमला।

35 पं. तुलसी राम, गांव मण्डोचली, डा० भराणु, तह० चौपाल, ज़िला शिमला।

36 पं. तुलसी राम, गांव नलोग, डा० देवगढ़, तह० कोटखाई, ज़िला शिमला।

37 पं. देवी राम पाण्डेय, गांव मण्योटी, डा० मंघोल, तह० चौपाल, ज़िला शिमला।

38 पं. दौलत राम, गांव मण्योटी, ज़िला शिमला।

39 पं. धनी राम झोलटा, गांव बोराड़, डा० नेरवा, तह० चौपाल, ज़िला शिमला।

40 पं. परमानन्द शर्मा, गांव मसली, तह० रोहड़ू, ज़िला शिमला।

41 पं. पूर्ण चन्द, गांव कलाहर, डा० क्यार, तह० ठियोग, ज़िला शिमला।

42 पं. फुलाचन्द पुरोहित, गांव पौली, तह० रोहड़ू, ज़िला शिमला।

43 पं. मंगत राम शर्मा, गांव भड़ेच, डा० हिमरी, तह० कोटखाई, ज़िला शिमला।

44 पं. मस्त राम, गांव कौंथाल, डा० केदी, तह० चौपाल, ज़िला शिमला।

45 पं. मोहन लाल शर्मा, गांव शकराणा, डा० केदी, तह० चौपाल, ज़िला शिमला।

46 पं. राजाराम, गांव खशकंडी, ज़िला शिमला।

47 पं. रामानन्द, गांव मण्योटी, ज़िला शिमला।

48 पं. लछमन दास शर्मा, गांव नौणा, तह० रोहडू, ज़िला शिमला।

49 पं. लायक राम, गांव मण्योटी, ज़िला शिमला।

50 पं. संत राम, गांव बाहल, डा० दयोथ, ज़िला शिमला।

51 पं. सीता राम, गांव खर, डा० धार चांदना, तह० चौपाल, ज़िला शिमला।

52 पं. सुन्दर राम, गांव भटयोड़ी, डा० दयोथ, तह० चौपाल, ज़िला शिमला।

53 पं. सूरत राम, गांव गुम्मा, डा० टिकरी, ज़िला शिमला।

54 पं. सेन राम शर्मा, गांव व डा० गुम्मा, ज़िला शिमला।

55 पं. झाडू राम, गांव कुला, डा० मंघोल, तह० चकराता, ज़िला देहरादून, उ०प्र०।

56 पं. फतेह सिंह, गांव कुला, डा० मंघोल, तह० चकराता, ज़िला देहरादून, उ०प्र०।

57 पं. मूर्ति राम ज्योतिषी, गांव फेड़ज, डा० हटाल, तह० चकराता, ज़िला देहरादून, उ०प्र०।

58 पं. मास्टर मेहर चन्द, गांव एवं डा० मंघोल, तह० चकराता, ज़िला देहरादून, उ०प्र०।

साञ्चा ग्रन्थ ग्रह नक्षत्रों की गति, स्थिति आदि का विचार करने वाला तथा ग्रह नक्षत्रों आदि के शुभ अशुभ फल बताने वाला शास्त्र है। इस ग्रन्थ का उपयोग विशेषत: प्रश्न फलादेश तथा आधिदैविक कष्टों के निवारण हेतु किया जाता है। प्रश्न लगाने के लिए 'पाशा' का प्रयोग किया जाता है। 'पाशा' मूलत: हाथी दांत का बना होता है, लेकिन इसके अलावा साही, कक्कड़सींगी व सियार आदि पशुओं की हड्डी का भी बनाया जाता है। 'पाशा' जुए के पासे से मिलता है, जो आकार में लगभग डेढ़-दो इंच लम्बा होता है और अंगुलि के बराबर चौकोर चौड़ा होता है। प्रत्येक पृष्ठ पर क्रमश: एक, दो, तीन, चार बिन्दु (0,00,000,0000) अंकित होते हैं जिन्हें दा, दुआ, त्रीक तथा चौक कहा जाता है। इन अंकों को पाशे पर शुभ मुहूर्त में ही अंकित किया जाता है। इस विद्या के विद्वानों का कहना है कि शुभ मुहूर्त के लिए कभी-कभी सालों प्रतीक्षा करनी पड़ती है, क्योंकि शुभ मुहूर्त में तैयार पाशा ही फलादेश देने में सक्षम होता है। पाशे के सिरों में भी बिन्दु चिह्नित होते हैं, परन्तु उनका कोई महत्त्व नहीं है।

जब प्रश्नकर्ता प्रश्न करता है तो पण्डित पाशे को सांचे की ज़िल्द पर लगभग चार इंच ऊपर से निम्न प्रकार उच्चारण करके फेंकता है:-

"देख विद्या सरस्वती कालज्ञानी वाग्भवानी विद्या मां जिस विषय पर तुझसे प्रश्न पूछा जा रहा है उसका फल उस दु:ख के अनुसार बाधा व्याधि का उच्चारण

भूत, प्रेत, स्थान देवता, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी, देव दोष, ग्राम देवता, पितर, ईष्ट देव, कुलदेव, पितर, ग्रह दोष आदि अन्य दोषों की दुखती बोल और रास्ता लगा। सतयुग की सरस्वती, कलियुग की कालज्ञानी, सत बोले वैकुण्ठ चढ़े, झूठ बोले महापापे गले, लगन न चोरे विद्या शगुन बिचारें।'' 'पाशा' तीन बार फेंका जाता है। जब पहली बार फेंका जाता है उसे एक पाशटी कहते हैं, दूसरी बार फेंकने पर दो पाशटी तथा तीसरी बार फेंकने पर तीन पाशटी। तीन पाशटी के बाद अर्थात् तीन बार पाशा फेंकने के उपरान्त साञ्चा खोला जाता है जिसमें फलादेश पढ़ा जाता है। तीन अंकों के फलादेश को "इकहरी होरा'' कहा जाता है। उदाहरणार्थ तीन बार पाशा फेंकने पर यदि क्रमशः त्रीक, दुआ, दुआ अर्थात् 3,2,2, आये तो होरा होगी:-

322 त्रिकम् द्वीकं द्वीकं तु चेइब।। कारणम् पतितातवम्।।
स्वजनयो प्रीति चिन्ता।। बाऊ बन्धु सुपाषणाम्।।
अगन त्रीण चेइब तु।। धनध्यान प्रियानित।।
धनश्रय बहु वृद्धि तु।। दिन कर्ण तु कर्मणि।।
न तु द्रिशते।। इदं चिन्ता अभिज्ञानम।। न दिनम् अमभिक्ता।।
जलराग सर्व भली चेइव कपिली कलह मन्त्री ते रमणम् तथा।।

कुछ अन्य अंकों के फलादेश निम्न प्रकार हैं:-

बड़ी कालज्ञानी फलादेश

111 प्रदं प्रदं प्रदं तु चेइब।। अक्षाणी पतितातवम्।।
पुत्र जन्म धन लाभ।। ईष्ट सुख समागम।। सर्ब सुख इंच।।
कल्याणम्।। जते मनसे वतति।। आदित्या तीरीया वर्षाणि द्रीशते।।
नात्रीया वर्षाणि द्रीशते।। इदं चिन्ता अविज्ञानम्।।
सपिने तु देवा बन्धवा।।

112 प्रदं प्रदं दुकम् तु चेइब।। बहुलाइयो पतितातवम्।।
सर्वसु गया सुपानम्।। सोभनम्।। प्रदेश वा।।
वस्त्र लाभ।। अरथ लाभ।। बृधनं च।। निरर्थकं।।
इदं चिन्ता अभिज्ञानं।। सुख इंच रक्षकम्।।
सपिने इंच द्रीशते।। सर्वदुख विनिर्मुक्ति।। हा हा महा प्रहस्थितम्।।

113 प्रदं प्रदं त्रिकम् तु चेइब।। शापटी पतितातवम्।।
अरथसम् प्रितिभागम्।। वीनरभागम्।। चेइब।। क्षेम भवे।।
मासे मात्रिणम्।। तीरधन्या आपघात।। भवि सं तथा।।
शावणे शुकिले पक्षे।। पंचम् दिने आदितं च तु द्रीशते।।

घटिकं पंचविशे खान्ति।। तत शिरीय भवे खान्ति।।

114 प्रदं-प्रदं चतुकम् तु चेइब।। मंगलयो पतितातवम्।।
कुल बृधि भविसं तथा।। संत्रणम् सर्वनिवृतम्।।
भूमि लाभं च।। अर्थ लाभं च।। धन कारणम्।। कल्याणम्।।
गणसमपते।। पुत्र दारा तथेइव च।। इदं चिन्ता अभिज्ञानम्।।
विमुक्ति कुल्ल हस्ते।। सत्रं च तु द्रीशते।। जते मन परबतति।।

121 प्रदं दुकं प्रदं तु चेइब।। कारणम् पतितातवम्।।
दिशा रोगतो चिन्ता।। अते कष्ट तु जायते।।
दिशा तरो भवे न चेइब।। आगे मनसी निअर्थकम्।।
अनन्त भय भवे चेइब।। कल्ल काञ्च कृत्वा भवे तथा।।
अचिर्णनेव कलह सर मन।। पदम सुख संप्रदा।।

122 प्रदं दुकं दुकं चेइब।। पंचते सुख संप्रदा।।
अर्थ लाभम् भविष्यन्ति।। सुजने सह संगते।।
कार्जभ च काणं च रथ मन्त्री सही गतो।।
चैव अद्य त्रियवर्ष च गतो चेइब।। अर्थ हानंच तु दृशते।।
कलह बृधी तु महापीड़ा।। तेई नन्त्री तु सुखम्।।
इदं चिन्ता अभिज्ञानम् देवता तु दृशते।।

123 प्रदं दुकं त्रिकम् तु चेइब।। दुंदुभि पतितातवम्।।
राजगुमान तु भवे कृत्वा।। ववृद्धि चेइब स्तथा।।
सुख पुत्र लाभं सिकं वसत्रणम्।। रतन की चेइब।।
सर्ब चेइब वृद्धि गुमान चेइब।। भवेखान्ती।।
धन ध्यानम् विवादम् चिन्ता।। अर्थ ससाहम हानं विप्र नंच।।
बासुपतते कल्याणम्।। वसुदेवता तत्र पूजये।। कुल्लदेवता पर पूजये।।
सर्व शिरियो भवेखान्ती।। क्षेत्रपाल तत पूजिए।। कुल्ल देवता पर पूजये।।

133 प्रदं त्रिकं त्रिकं तु चेइब।। कार्णी पतितातवम्।।
हानच अरथ गृह पूजे।। अरथ जायते धन हानं च निअरथकम्।।
प्राण सहारणं कर्लव्यं।। दुरजणम् नैव संगते।। आसमन् सर्वप्रिय।।
सरीज सम वेद क्षदा।। सरीज प्राण प्रण पसतितम् धन विनाशते।।
सर्वद्रष्टा प्रसादते।। कुलदेवता पूजये।। देव ब्राह्मण पर पूजते।
गृह पूजे करतव्यम्।। तत्र सिद्धी भवीखन्ती।। चैवस्तथा।।

134 प्रदं त्रिकं चतुकं तु चेइब।। सकुल्लं च पतितातवम्।।

अभिज्युग तप पापं।। अर्थहानं च तथैब च।। सरिज पीड़ा भुक्तंच।।
पूर्व देहि व्याधि सर्व दक्षिण चेइब।। वई गृहा पीड़ा भुक्तं च।।
वई गृह पीड़ा रिषि मंगलयो।। अर्थलाभं इशु बन्धु लाभं चेइब।।
परबक्ति।। रोग इशु इशु सहो संगते।। इदं चिन्ता अभिज्ञानम्।।
सुपिने अर्थ न पुनो सतो।। देव पूजे गृह दो पर पूजये।।

144 प्रदं चतुकाम् चतुकाम् तु चेइब।। कार्णी पतितातवम्।।
धन सर्व संपते।। धन ध्यान समागम।। जते दयात् चिन्तते कार्ज्ज।।
तत्र श्री भवेखान्ति।। क्षत्रपाणि वसुदेवा।। पुत्रण पूजते।।
ब्रह्मणम् भोजनं तु दीयते।। कुलदेवा पूजिएसी।। तत्र शिरीय भवेखान्ति।।
इदम् ते अभिज्ञानं श्रावणे घटिकम् दशा।

211 दुकं प्रदं प्रदं तु चेइब।। ज्जदा चिन्तते कार्जे चिन्ता पृछकम्।।
भविखन्ति।। धन संप्रदा सन्देही।। तत्र चतुकल व्याधिनी।।
जीवराशि तत वक्षतु।। सरीज रक्षतु सम्प्रदा।।
परवतु सपिने प्रीति न सपिने दुखं च तु दृशते।।
परसाद मेहि वचम्।। इदं चिन्ता अभिज्ञानं नास्तीते तिल माशकम्।।

212 दुकं प्रदं दुकं तु चेइब।। पंचाली पतितातवम्।।
कारणम् पुत्र पुत्रणम्।। पुत्रलाभं च चिन्तते कार्ज्ज।।
अस्त्री जल्म सगुमान बन्धुलाभं च।। सर्व तत्र भविष्यन्ति।।
आगे मन नास्तिते।। सुख प्रवास गुमान गच्छते।।
अतो मन सर्व कार्ज सिद्धि।। नन्त्र सह प्रियानिति।।

213 बृखयो पतितातवम्।। गृह बन्धु लाभं च।।
इशु-इशु सह संगते भविखन्ति।। तत्र सर्व कल्याणम्।।
अर्थ सम्प्रदा।। हरिण च वस्त्रलाभं च।। सर्व समयो भविखान्ति।।
इदं चिन्ता अभिज्ञानम्।। गोपशु परवता।।
सपिने देवा गन्धर्व तु चेइब द्रीशते।।

214 दुकं प्रदं चतुकं तु चेइब।। आमक्सम पतितातवम्।।
निमतम् चैव भवि सं तथा।। इश थापए परगतो ते।।
भद्राणी पतितातवम्।। लभते सर्प भवि कृत्वा।।
इदं समा इष्ट तु विघनम्।। च स्वजने सही।।
सगते कुमारी भोजनं प्रवक्षता।। सिद्धि दद्वा नन्त्री चेइब।
सह सायम् तथा।।

221 दुकं दुकं प्रदं तु चेइब।। पंचाल्ली पतितातवम्।।
चल्ला चल्ली।। मन्दा कार्ज तत्र कार्ज जायते।।
अर्धत्रियं वर्ष तु द्रिशते।। नास्तिते सुख संप्रदा।।
इदं चिन्ता अभिज्ञानं।। नास्ति ते तिलमाशकम्।।
अगनी दग्धो भवे तत्र।। दक्षिण देशे मे वच।।
शान्ति कार्ज भवे चेइब।। नान्त्री कारण भवे स्तथा।।

222 द्विकम् द्विकम् द्विकम् तु चेइब।। नास्ति बृधि इदं गुरु उत्र कारन संदेही।।
तू जेव तस्यातू सर्वद्रीश तेरे चेइब विघन।। स्वजनये कुमारी भोजनस्तथा।।
ना संदेही दद्वातत्र सिद्धि भविखन्ति।। जलमुखी तु करते पूजा।।
तत शिरीयं भविखान्ति।।

223 द्विकम् द्विकम् त्रिकं तु चेइब।। स्वजनयो पतितातवम्।।
प्रभातलाभं च अर्थ दुंदु दारिद्रा।। न द्रीशते गण शुभ मया देसु अधनीच कर्मणि।।
प्रापते तु देवता चेइब।। तु द्रीशते।। इदं चिन्ता अभिज्ञानम्।।
पूजा चेइब तु सिद्धते।।

224 द्विकम् द्विकम् चतुकं तु चेइब।। दुंदुभि पतितातवम्।।
पराए कार्जे खूनो पूर्नो चिन्ता।। पुत्र अर्थ विवाद हानं च।।
अचीर्णी नैव कल्ल सिद्धी।। नत्र ससायम्।।
धन ध्यान भवेचिन्ता।। सिद्धते तु भवेसं तथा।।

231 शापटी पतितातवम्।। पराए कारजे पर पूजते।।
पर हस्तु धन सम्प्रदा।। आपे दाता धनं ध्यानम्।।
सह सापम् अते पदमतु दृश्यते।। सर्व सम्प्रदा।।
नीच सिद्धि भविखन्ति।। विनायकम्।। जते देवा तथा पुनम्।।
च उमहा रथम्।। इदं चिन्ता अभिज्ञानं।।
सपिने देवा तु दृश्यते।। देवता घर भन्ता पूजयेत।।

232 द्विकम् त्रिकम् द्विकम् तु चेइव।। पचाल्ली पतितातवम्।।
देशान्तरगतो चिन्ता।। द्वपर बन्धु भवीखन्ति।।
धन गुमान मे वच।। बृध कल्याणम् समापसते तम्।।
विमानं अर्थ लाभं च।। इति वर्षाणि आसमन।। ततः शिरिय भवेस्तथा।।

233 द्विकं त्रिकं त्रिकं चेइब।। पुनरयो पतितातवम्।।
जत दया चिन्तते कार्जे धनं च सं तथा।। गृह चेइब।।
प्रवि कृत्वा सत्रणम् सही विगृहर्णम्।। राजकुल्ल जायते।।
वृद्ध व्याधि वेश्वा इदं चिन्ता अभिज्ञानं।। सपिने द्रिशते तु देवता।।

पर्वणम् अर्थध्यानम्।। जायानम् मरणं च दृश्यते।।
ध्रुवम् पाती समातितम्।।
[234] कार्णी पतितातवम्।। आयो रोगं।। मासं देही।।
व्याधि वेश्वा आध धनम्।। नीच कर्माणि कर्म कृत्वा।।
प्रीति सह सायम्।। इदं गुरु उत्तर कार्ज।।
सेद जेयेती तपस्या।। न अभ्या कारज विहानम्।।
तत्र सिद्धि भविखन्ती।। इदं चिन्ता अभिज्ञानं गृहं चेइब पर पूजते।।
[241] द्विकम् प्रदं चतुकं तु चेइब।। अक्षाणी पतितातवम्।।
चिन्तते विवाद चेइब आगनम चेइब भवि सं तथा।।
धन ध्यान समागम।। मित्र चिन्तते कार्ज तत्र सर्व भवे चेइब।।
सफल्ला भवे इदं चिन्ता अभिज्ञानं वीण मित्रणम् भवी कृत्वा।।
सर्व मित्र समा पतितम् तत् शिरीय भवीखन्ति।।
[242] द्विकम् चतुकम् द्विकम् तु चेइब।। कुटयोपतितातवम्।।
चीर पर कृत्वा वान अगुमान।। चिन्तते।। कार्ज यथा चिन्ता तु चिन्तते।।
कार्ज सुख बहुथानम्।। चेइब न बृद्धि पापते।। नत्र सह सयं भविखन्ति।।
न संदेही मन चिन्तते।। नात्री कार्ज थानच प्रापते सविघ्नम्।।
नन्ते चिन्ता निअर्थकम्।। देवपूजा विनायकम्।। पूजये तु चन्द्रिका।।
इदं चिन्ता अभिज्ञानं।। चिन्तते तु देव हिरणकम्।।
[243] द्विकं चतुकं त्रिकं तु चेइब।। अक्षयो पतितातवम्।।
थान पापस्ते तु सिद्धते अस्त्री पाप दुही लाभते।।
लाभं च जायते चेइब।। शत्रणम् गुमान चैब विकृयते।।
इदं चिन्ता अभिज्ञानं।। सपिने द्रीशते तु शत्रणम्।।
पर पूजते शीरदेव उमंच।। विलाभंच तदा मित्रम्।।
कार्ये सिद्धि प्रियानिति।। देवता तु पूजते।।
[244] द्विकम् चतुकम् चतुकम् तु चेइब।। वक्षमी पतितातवम्।।
धन ध्यान प्रवक्षता पुत्रणम्।। कल्याणं चेइव तु द्रीशते।।
पराए कार्जे खोई चिन्ता।। पुत्र अरथ भवे चेइब।।
हृदयोपरिवर्जति।। सन्देहु जायते मृतु।। सरीज रक्षते प्रदा।।
महाभयं तु द्रीशति।। गृह सते कर्तव्यम्।। तत् शिरियो भवेखान्ति।।
पुत्र दारा जिते लाभं च तु द्रीशते।। सजने सही कल्लनम् चेइब भविखन्ति।।
[312] त्रिकं प्रदं प्रदं तु चेइब।। दुंदुभि पतितातवम्।।

गृह बन्धु लाभं च।। इशु इशु सुखं च।।
सह संगते भवे स्तथा। सर्व कल्याणं समास्थितम्।।
हृदयो वस्त्र लाभं च वचै सतु चेइब।। अचीर्णनेव कल्लहानि भवेस्तथा।।

कदाचित यह भी सम्भव हो कि प्रश्न कर्ता का प्रश्न प्रथम बार में सही नहीं आए। इस दशा में पाशा पुन: फेंका जाता है और फलादेश पढ़ा जाता है। तदुपरान्त भी प्रश्नकर्ता का संशय बना रहे तो तीसरी बार इसी प्रक्रिया को दोहराया जाता है। इस प्रकार एक ही प्रश्न के लिए नौ बार पाशा डाला जाता है। ऐसा प्रश्न यदि सूर्योदय से दोपहर के मध्य पूछा जाये तो तीनों बार फेंके गये पाशे के अंकों के जोड़ को 4 से भाग किया जाता है और भाग का जो शेष रहता है उसके अनुसार फलादेश देखा जाता है, यदि प्रश्न अपराह्न से सूर्यास्त तक पूछा जाये तो योग को 7 से और अगर प्रश्न सूर्यास्त के बाद प्रथम प्रहर में पूछा जाये तो योग को 4 से भाग दिया जाता है। यदि दूसरे प्रहर में पूछा जाये तो उसे 7 से भाग दिया जाता है तथा शेषांक से फलादेश आंका जाता है।

ये पण्डित प्रश्न कर्ता के कार्य की सिद्धि को जानने के लिए साञ्चों के अतिरिक्त पन्नों का भी प्रयोग करते हैं। ये पन्ने अड़तीस हैं, जिनका आकार 4 इंच x$2\frac{1}{2}$ इंच का होता है। सभी पन्ने खुले रहते हैं तथा प्रत्येक के सिरे के मध्य में डोरी बन्धी होती है। इन पर देवी-देवता, पशु-पक्षी के चित्र बने होते हैं। प्रश्न कर्ता जब प्रश्न लगाता है तो साञ्चा विशेषज्ञ सभी पन्नों को अपने दोनों हाथों के मध्य में रख कर प्रश्न कर्ता को मन में प्रश्न सोच कर पन्ने को डोरी से पकड़ कर खींचने को कहता है। इस प्राकर तीन बार पन्नों को खींचने के उपरान्त उसमें चित्रित चित्रों के अनुसार फलादेश बताता है। चन्दवाणी लिपि के विशेषज्ञ श्री तुलसी राम द्वारा इन पन्नों पर चित्रित चित्र तथा उनके फलादेश निम्न प्रकार बताये गये:-

1. घुड़सवार	जिसका अर्थ है कार्य सफल होगा तथा यात्रा योग बनेगा।
2. आकाल धेनु	सुख-समृद्धि।
3. कान्हदेवता	प्रभु की कृपा दृष्टि रहेगी।
4 कालिका माई	उलझनों से छुटकारा मिलेगा।
5 धतरी धमराज	सूर्य के समान तेजस्वी।
6 अष्टभुजी दुर्गा	भूत-प्रेत का नाश होगा। बल एवं बुद्धि दात्री।
7 राजा दुयोधन	झगड़ा यीग।
8 श्री कृष्ण	शुभ फल की प्राप्ति होगी।

9 गागाना खेत-पा धाया	शुभ कार्य योग।
10 बाला बाब रिख	युद्ध में विजय होगी तथा दुश्मन का नाश होगा।
11 अमीराती केड वासुकी नाग	कठिनाई का सामना करना पड़ेगा।
12 श्री रामचन्द्र जी तथा हनुमान	युद्ध में विजय होगी तथा कार्य सफल होगा।
13 कुन्ती माई	धार्मिक कार्य में प्रवृत्ति।
14 अर्जुन	शत्रु की पराजय होगी।
15 खब्दी गरुड़-वासुकीनाग	दुश्मन का नाश होगा।
16 बुद्धि नारायणी	सद्‌बुद्धि।
17 फलदी बाड़ी सफला कार्ज	शुभ फलदायक।
18 द्रोणाचार्य	उलझनों का सामना करना पड़ेगा।
19 भीमसेन	विजय मिलेगी।
20 सहदेव	जादू-टोने के प्रकोप की शान्ति।
21 राजा युधिष्ठिर छत्र फीरे	धर्म की विजय।
22 चूहा बिल्ली	युद्ध होगा।
23 पार्वती	शुभ फलदायक।
24 नरसिंह, प्रल्हाद, हिरण्याक्ष	दुश्मन का नाश होगा।
25 सर्वसिद्धि-योगवासी	सारे कार्य सिद्ध होंगे।
26 नवग्रह	अशुभ।
27 केदारीथानी	शुभ कर्म योग।
28 दुर्पता	झगड़ा होगा।
29 गणपति	कल्याण होगा।
30 शिव	शुभ फलदायी।
31 बाघ बकरी	युद्ध होगा।
32 नकुल	शुभ कार्य।
33 लक्ष्मण	शुभ फल की प्राप्ति।
34 भीमसेन बाला बाबरिष	पिता-पुत्र में झगड़ा होगा।
35 हनुमान-बजरंगबली	शुभ कार्य होगा।
36 सिंह राज	विजय होगी।
37 नगरकोटी	शुभ फल की प्राप्ति।
38 मान-सरोवर तलाई	मंगल दायक।

पं० देवीराम व पं० तुलसीराम से डॉ० श्यामा ठाकुर द्वारा लिया गया साक्षात्कार

❑

लोकसंस्कृति व लोकसाहित्य पर साञ्चा साहित्य का प्रभाव

सूनृता गौतम

षोडश संस्कार और साञ्चा ग्रन्थ

वेद ज्ञान-विज्ञान का भण्डार है और ब्रह्मा की आदिवाणी। वेद और मानव की आदि भूमि भी भारत है ऐसा प्राचीन ग्रन्थों के गहन अध्ययन से सिद्ध होता है। वेदानुसार मानव जीवन के रात्रि दिवस के कार्यों का एक अति अनुशासित विधान किया गया है जिसमें उसके दैनिक जीवनयापन की व्यवस्था है।

इसी प्रकार जैसे सोना संस्कारों से अर्थात् बार-बार शुद्ध करके साफ, चमकीला और बहुमूल्य हो जाता है, जिस प्रकार खान से निकले हुए पाषाण साफ करने पर रत्न बन जाते हैं इसी प्रकार मानव की शुद्धि के लिए, उसे दीर्घ, स्वस्थ और मानवोचित जीवन प्राप्त हो एतदर्थ वेदों में संस्कारों की ओर इंगित किया गया और तदनुसार उसकी विधियां बनीं। इसी बात को सिद्ध करता है यह स्मृतिवाक्य :-

जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते

अर्थात् मनुष्य जन्मता तो शूद्र याने बिल्कुल घटिया रूप में है परन्तु संस्कारों से उसे शुद्ध किया जाता है और तब वह द्विज कहलाता है अर्थात् उसका दूसरा वास्तविक मानव जन्म होता है। भारतीय परम्परा के अनुसार मनुष्य का जीवन धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इस लक्ष्य चतुष्टय के इर्द-गिर्द घूमता है। भारतीयों का जीवन लक्ष्य है इन चारों को सिद्ध करना, प्राप्त करना। इन महान् लक्ष्यों की पूर्ति के लिए संस्कार एक प्रबल और सशक्त साधन है।

यूं तो कई स्मृतिग्रंथों में चालीस तक संस्कार बताए गए हैं परन्तु (1) गर्भाधान, (2) पुंसवन, (3) सीमन्त, (4) जातकर्म, (5) नामकरण, (6) निष्क्रमण, (7) भूमि उपवेशन, (8) अन्नप्राशन, (9) चूड़ाकर्ण, (10) कर्णविध, (11) उपनयन (12) वेदारम्भ, (13) केशान्त, (14) विवाह, (15) चतुर्थीकर्म, (16) अन्त्यकर्म यही संस्कार हैं। प्रथम अर्थात् गर्भस्थापन के समय गर्भाधान संस्कार, गर्भाधान से तीसरे मास पुंसवन, 8वें मास सीमन्त, सन्तान उत्पन्न होने पर जातकर्म, जन्म के ग्यारहवें दिन नामकरण, चौथे मास में निष्क्रमण होना चाहिए। पांचवें मास भूमि उपवेशन छठे मास अन्नप्राशन, कुल की रीति के अनुसार तीसरे, पांचवें या सातवें वर्ष में मुण्डन और मुण्डन के पश्चात् कर्णविध संस्कार होता है। गर्भारम्भ से 8वें वर्ष ब्राह्मण का, ग्यारहवें वर्ष क्षत्रिय का और बारहवें वर्ष वैश्य का यज्ञोपवीत होना चाहिए। 16 वर्ष तक ब्राह्मण का, 22 वर्ष तक क्षत्रिय का और 24 वर्ष तक वैश्य का जनेऊ हो सकता है। यदि इसके भीतर यज्ञोपवीत संस्कार न हो तो ये लोग उपनयन संस्कार और वेद से रहित 'व्रात्य' हो जाते हैं। ऐसा होने पर इन्हें व्रात्यस्तोम यज्ञ करना चाहिए।

महाभारत काल के बाद देश में अनेकों अघटित घटनाएं घटीं। अनेकों साम्राज्य आए गए। असंख्य परिवर्तन हुए परन्तु इन वैदिक संस्कारों को इस पावन प्रदेश हिमाचल में किसी न किसी रूप में अशिक्षा के घोर अंधकारमय काल में भी यहां के लोगों ने आज तक जीवित रखा। वेदों तथा साञ्चा ग्रन्थों में संस्कारों का विधान निम्न प्रकार से है :-

(1) गर्भाधान :- द्विज को उचित है कि स्त्री के प्रथम ऋतु के चौथे दिन के पश्चात् श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पुनर्वसु, स्वाति, मूल, आश्लेषा, ज्येष्ठा, आर्द्रा, अश्विनी, कृत्तिका और विशाखा नक्षत्र, श्राद्ध के दिन-दोनों पक्ष की चौथ, नवमी और चतुर्दशी को छोड़कर समदिन में गर्भाधान का विधान करे। प्रातः काल की उपासना कर भूमि लीपकर और स्वस्तिवाचन करके नान्दीमुख श्राद्ध करे। चरु से प्रजापति को एक आहुति देवे, उसके पश्चात् 'विष्णुर्योनि' और 'नेजमेष' इन मन्त्रों से छः और प्रजापति को एक आहुति देवे। पूर्वाभिमुख बैठी हुई अपनी भार्या का सिर खड़े होकर हाथ से स्पर्श करे। 'अपनश्च' और 'वधेन च' इन दो सूक्तों को जपे। पश्चात् सूर्य की स्तुति करे। अश्वगन्धा औषधि का रस वस्त्र से छानकर 'उदीर्ष्व' इस मन्त्र को पढ़कर पत्नी के नाक के दाहिने छिद्र में डाले। उसके पश्चात् स्विष्टकृत आदि कर्म करके स्त्री-पुरुष नवीन वस्त्र पहने और फल के मन्त्र से पति भार्या की गोद में विरोजा, नींबू, नारियल, केला, खजूर, सुपारी, नारंगी आदि फल देवे। होता ब्राह्मण को बैल, गौ और स्वर्ण दक्षिणा में दे। गर्भाधान संस्कार कर्म में प्रातःकाल उपासना की आग में स्थालीपाक, आग्रयण और अग्निकरण कर्म करे। उसके पश्चात्

प्रसन्नचित्त होकर उसी रात्रि को गर्भारोपण करे।

सांचा ग्रन्थों के अनुसार स्त्री के रजस्वला होने के पश्चात् सातवें दिन शुद्धि के बाद पुरोहित शुभ दिन को दूध, गोमूत्र तथा गंगाजल से ब्रह्मा की पूजा करवाए। तदुपरान्त पति-पत्नी गर्भ धारण की रुचि के अनुसार सांसारिक धर्म में प्रवृत्त हो।

(2) पुंसवन :- गर्भ रहने पर उसके तीसरे महीने में पुंसवन संस्कार करे। इस संस्कार की विधि सीमन्तोन्नयन की तरह ही है जो गर्भधारण के चतुर्थमास में करवाया जाता है यदि उक्त समय पर ये दोनों संस्कार न हो सकें तो इन्हें छठे अथवा आठवें महीने में करना चाहिए। साञ्चा ग्रन्थों में इस संस्कार का उल्लेख नहीं है।

(3) सीमन्तोन्नयन :- यह संस्कार गर्भ के चौथे महीने में करवाया जाता है। पुष्य, पुनर्वसु, अश्विनी, हस्त, अभिजित्, मूल, तीनों उत्तरा, मृगशिरा, श्रवण, रेवती और अनुराधा नक्षत्र पुंसवन व सीमन्तोन्नयन संस्कार करने के लिए शुभ हैं। आभ्युदयिक श्राद्ध करके पुरुष निज पत्नी की अंजलि में दही, दो उर्द और एक यव रखे। पुरुष स्त्री से कहे, 'त्रि:पिबेत्किं पिबसि' और स्त्री कहे 'पुंसवनम्'। उसके पश्चात् जल से प्रोक्षण करके तीन बार आचमन करे। 'आतेगर्भ' इन दो सूक्तों को पढ़कर स्त्री के दाहिने नाक के छिद्र में दूब का रस डाले। 'प्रजापतये स्वाहा' ऐसा उच्चारण कर चरु की आहुति देकर 'यंत्ते' मन्त्र को उच्चरित कर गर्भिणी स्त्री का हृदय स्पर्श करे। 'धाता ददातु' दो मंत्र, 'राकामहम्' दो मन्त्र, 'नेजमेष' तीन मन्त्र और 'प्रजापते:' एक मन्त्र, इन आठ मंत्रो से घी की आठ आहुति दे। साहिल का शुक्ल चिह्न वाला कांटा, कुशा और गूलर के दो कच्चे फलों का एक गुच्छा और पूर्णसूत के सहित तकुले का एक गुच्छा बनाकर पुरुष स्त्री की मांग को तीन बार निकाले। इसी प्रकार से केशों के विभाग करने को सीमन्त कहते हैं। यह सधवा स्त्री का चिह्न है और सदा सौभाग्य देने वाला है। अग्नि के पश्चिम खड़े होकर 'भूर्भुव:स्वरोम्' उच्चारण करे। सामवेद के स्वर से 'सोमं राजानम्, इस मन्त्र का उच्चारण कर ग्राम के समीप की नदी का स्मरणकर उसे प्रणाम करे व आचार्य को दक्षिणा देवे।

(4) जातकर्म :- सन्तान उत्पन्न होने पर विधिपूर्वक नान्दीश्राद्ध करके संतान के कल्याणार्थ जातकर्म संस्कार करे। स्वर्ण, चांदी अथवा कांसे के पात्र में मधु व घृत रखकर उसमें स्वर्ण रगड़े। उस मधु और घृत को अंगूठी आदि किसी स्वर्ण की वस्तु से जातक को चटावे ; उसके दोनों कानों पर सोना रखकर दोनों कानों के पास पवित्र मंत्रों को जपे; पश्चात् उस बालक के दोनों कन्धों का स्पर्श करके हृदय का स्पर्श करे। कन्धे स्पर्श करते समय 'अश्मा भव', 'इन्द्र: श्रेष्ठनि' और 'यस्मै

प्रयन्धिः' इन तीन मन्त्रों को जपे। पुत्र का जातकर्म मन्त्रों सहित और पुत्री का जातकर्म मंत्र रहित करना चाहिए।

साञ्चा ग्रन्थ के अनुसार बच्चे के जन्म के बाद तीसरे दिन ब्राह्मण से बच्चे की जन्मकुण्डली बनवाई जाती है जिसे "राश खुजणी शब्द करवाणा" कहते हैं। कुल पुरोहित जच्चा के हाथ में दूर्वा देकर दूध, गोमूत्र व चावल से सूर्य की पूजा करवाता है। इस दिन बच्चे को कपड़े भी पहनाए जाते हैं जिसे 'खिलकी' कहते हैं। नौवें दिन घर की सफाई करके सूतक की शुद्धि के लिए गंगाजल, गोमूत्र और दूध का मिश्रण लेकर घर में छिड़काव किया जाता है। दसवें दिन ब्राह्मण, कन्या और गौ को खाना खिलाया जाता है। सत्ताईसवें दिन नक्षत्रपूजा होती है, जिसमें बच्चे के शुभाशुभ ग्रहों की पूजा होती है। यह पूजा ग्रहों के अनुसार होती है।

(5) नामकरण :- बालक के जन्म के ग्यारहवें, बारहवें अथवा सोलहवें दिन नान्दीश्राद्ध करके विधिपूर्वक नामकरण संस्कार करना चाहिए। मार्गशीर्ष मास से आरम्भ करके मासनाम रखना चाहिए। जन्म नक्षत्र के सम्बन्धी नाम को जन्मनाम कहते हैं अथवा व्यवहार के लिए पितामह सम्बन्धी नाम रखे। क्रम से इन नामों को लिखकर इनका पूजन करे। पुरुष का सम अक्षर का नाम सुखदायक है यदि विषम अक्षर का नाम हो तो उसके आदि में श्री लगाना चाहिए। आचार्य उसी नामरूप मंत्र से पूजा कराए और पिता उसी से देवता तथा ब्राह्मणों को प्रणाम करावे। एक-एक नाम तीन-तीन बार जातक को सुनावे।

साञ्चा ग्रन्थ के अनुसार कुलपुरोहित से शुभ दिन निकलवा कर प्रथम, तीसरे व पांचवें मास में बच्चे का नामकरण किया जाता है। नामकरण के दिन बच्चे को किसी कन्या की गोद में बैठाकर और बच्चे के हाथ में हथियार देकर बाहर लाया जाता है और सूर्य के सामने कांसे की थाली में चावल, गुड़, तिल, अखरोट और पानी का लोटा लेकर लड़की "आइते पाइते चन्द्रे गांव" मन्त्र का उच्चारण करके सूर्य की पूजा करती है। पूजा के बाद पुरोहित राशि के अनुसार बच्चे का नाम रखता है सम्पूर्ण कार्यवाही के पश्चात् बच्चे को तिलक लगाकर उसके हाथ में धन देकर घर में प्रवेश करवाया जाता है।

(6) निष्क्रमण :- चतुर्थ मास में नान्दीश्राद्ध करके कुमार को गोद में लेकर घर से बाहर निकाले। 'स्वस्ति नोमिमीताम्' इस सूक्त को जपते हुए बालक को देवता आदि के पास ले जावे, 'आशुः शिशानः' इस मन्त्र को जपते हुए अपने श्वशुर के घर अथवा अन्य किसी के घर ले जावे अथवा आंगन में खड़े होकर सूर्य का दर्शन कराए और 'तच्चक्षुः' इस मन्त्र को पढ़कर बालक को सूर्य का दर्शन कराकर अपने घर जावे।

(7) भूमि उपवेशन :- पांचवें मास में पृथ्वी वराह का पूजन करके भौम के पूर्णबल में तीनों उत्तरा, मृगशिरा, अनुराधा, अश्विनी, पुष्य, अभिजित नक्षत्रों में 4,9,14 तथा 30, इन तिथियों को छोड़कर स्थिर लग्न में शुभ दिन में बालक के करधनी का द्विसूत्र बांधकर पृथ्वी पर बैठाएं। पिता 'रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुः प्रमाण सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये' इस मंत्र का उच्चारण करे। इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रखे जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी आजीविका होती है।

(8) अन्नप्राशन :- छठे मास में (कुछ आचार्यों के मतानुसार 8वें, 10वें अथवा 12 वें महीने में बालक का अन्नप्राशन करना चाहिए) पिता शुभ दिन में नान्दीमुख श्राद्ध करके स्वर्ण, चांदी अथवा कांसे के नए पात्र में दूध, दही, मधु और अन्न रखकर 'अन्नपतेन्नस्य' इस मन्त्र को पढ़कर अंगूठीयुक्त हाथ से या स्रुवा से बालक को भोजन कराए। पवित्रीयुक्त हाथ से उसको जल पिलावे, बाद में वह पात्र ब्राह्मण को दे देवे। पुत्री का अन्नप्राशन कर्म बिना मंत्र के करे।

(9) चूड़ाकरण :- जन्म के तीसरे वर्ष सूर्य के उत्तरायण में रहने पर शुभ मास तथा शुभ दिन में बालक का चूड़ाकर्म अर्थात् मुण्डन करना चाहिए। पिता कर्म के दिन से एक दिन पहले अथवा उसी दिन प्रातः काल संध्या आदि कर्म करके नान्दी श्राद्ध करें। प्राणायाम पूर्वक संकल्प करके होम के लिए वेदी और सब वस्तुओं को तैयार कर धान्यों को पात्रों में भरे। अग्नि के उत्तर और पश्चिम से पूर्व तक चार नए ढक्कन रखकर उनमें क्रम से व्रीहि, यव, उर्द और तिल भरे। आगे के ढक्कन में बैल का गोबर रखे और उसके उत्तर के ढक्कन में शमी की पत्तियां भरे। आघार पर्यन्त आहुति करने के पश्चात् पात्रों को सीधा करके भरे, पश्चात् 'अग्निश्च' इत्यादि चार मंत्रों से घी का हवन करे। 'अग्नऽ आयूंषि पवसे' इस मन्त्र से एक आहुति देवे। इसके पश्चात् प्रजापति को एक आहुति दे। माता की गोद में बैठे हुए बालक के पीछे बैठकर पिता हाथ में गर्म जल लेकर कुमार के सिर के दाएं व बाएं भागों पर गिराए। 'उष्णेन वाय' मन्त्र को पढ़कर बालक के दोनों ओर के केशों पर जलधारा लगावे। अनामिका अंगुली से मक्खन और दही लेकर केशों में लगावे। पंडित बालक के दाहिने कान से बाएं कान तक के केशों की लटों में प्रदक्षिण क्रम से तीन-तीन कुशा, जिनके अग्रभाग पूर्व को रहें, बांधे। आचार्य 'औषधे' मंत्र का उच्चारण कर लटों को काटे। 'अदिति' मंत्र को पढ़कर दाहिने कान से बाएं कान तक बालक के केश को तीन बार भिगोए। कटे हुए केश को बालक माता के हाथ में दे। मां उन केशों को शमी के पत्र और बैल के गोबर से युक्त पात्र में रखे। इस प्रकार चार बार बाल काटे। 'यत्क्षुरेण' मंत्र से क्षुरा की धार

को जल से धोकर उसको नाई को दे दे। जिसके जितने प्रवर हों उसके उतनी ही शिखा रखना उचित है। कुमार को उबटन लगा कर और स्नान कराके अग्नि के पास लाए और स्विष्टकृत होम करके होम का बाकी कर्म समाप्त करे। लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है परन्तु पांच वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। ज्येष्ठ पुत्र का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए।

साञ्चा ग्रन्थ के अनुसार मुण्डन संस्कार तीसरे, पांचवे, सातवें वर्ष में किया जाता है। यह संस्कार कुलदेवता के मन्दिर या किसी तीर्थस्थल में करवाया जाता है। कुल पुरोहित पंचगव्य, जो दूध, दही, घी, गोमूत्र व गोबर का मिश्रण है, से सूर्य की अर्चना और देवता की उपासना करता है। इस पूजा को स्थानीय बोली में 'सींज़' कहते हैं। इसमें भूमिशोधन, आह्वान, प्राण प्रतिष्ठा मन्त्रों द्वारा पूजा की जाती है। मन्त्रों के कुछ अंश निम्न प्रकार हैं–

भूमिशोधन मन्त्र :–

भूमियातु भईयत स्वामी पणी पुत्री सुरासुरे
संगसृष्ट सपुरे तंच शान्ति के शुभ लक्ष्मा
गुरू शुक्र पटे सरे तंच तांभुज दाता बहुसुन्दरा
श्री पर्वत्रो तामलो नामी कैलासे मन पर्वता
धामलो धन अस्थाईयो असुराग्नि श्री पूजीता
अग्नि अर्थोरथो रे बिप्रो जग्न शेला विव
जीते तिरण काष्टी विवर जीते अन्धकोपी
जलेस्तथा भूमियातु शुधे शामणी वरुण बाहू तुशुधए
ब्रह्माक्मो शुधे अस्नान संध्या गायत्री
खट कर्मण ब्रह्म शुधे सर्व जात्राणी स्त्री शुधे
उताक्षण तीलोशीर्षे समतपूर्ण ब्रह्मजाती
उदपूर्णिका जेथे ब्रह्म तेथे रे
धर्म जेथे विप्र तेथे अस्नान चतुर फल कुंभ कर्माणी
सर्वविघ्न विनाशयते अठबा मठका कुम्ब
निरते सुनों धारीता बाइबे तू रूपे का कुम्ब
इशाने राइटीस तथा मलस्थाने मोती का कुम्भ

कुम्भ कलश पूर्व बाकी कुम्भक एतीरस भूमिरस
तृण शुधे भूमि माता · हरे भवत्रो नमो रे नमः

आह्वान मन्त्र :- आभाइया मियाउरे देवी खंड नक्षत्र रण जायते वसुन्धरा दूइतो भूमि..............................

प्राणप्रतिष्ठा मन्त्र :- प्रणमियाऊं शिरीश देवी लोक ....

पूजा के पश्चात् पुरोहित बच्चे के बाल काटकर किसी भी फलयुक्त वृक्ष की जड़ के पास फेंकता है।

(10) कर्णबेध :- जन्म से 12वें या 16वें दिन, छठे, सातवें, आठवें मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को शुभ मुहूर्त निकलवा कर करवाया जाता है। इस संस्कार के समय पर करने से हर्निया (अंगवृद्धि) जैसे भयानक रोग की तो जड़ ही कट जाती है। इसी प्रकार कन्या का नासिकाबेध किया जाता है।

साञ्चा के अनुसार तीसरे, पांचवे, सातवें, नौवें वर्ष में कणविध संस्कार किया जाता है। कुलपुरोहित चावल, जल तथा नीले पुष्प से कृष्ण की पूजा करता है और शुभ ग्रहों वाली स्त्री से कान छिदवाए जाते हैं।

(11) यज्ञोपवीत उपनयन :- यज्ञ और उपवीत इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत शब्द बना है। देवताओं की पूजा, संगति और जिसमें दान हो उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत का अर्थ है पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत तंतु विशेष ही यज्ञोपवीत है। सब आचार्यों का मत है कि ब्राह्मण का उपनयन संस्कार 7 वें अथवा 8वें वर्ष में करना चाहिए। संस्कार कर्ता नान्दीश्राद्ध करने के पश्चात् मण्डप में कुलदेवता का आह्वान करके पूजन करे और ब्राह्मणों को भोजन कराए। दूसरे दिन कुमार को उबटन लगाकर स्नान कराए, पश्चात् माता के साथ एक पात्र में उसको भोजन कराए और उसके बाद उसका मुण्डन कराए। कुमार को स्नान कराकर आचार्य के पास बैठाए। पिता पूर्व की ओर मुख करे और कुमार अलंकारयुक्त होकर उसके सामने पश्चिमाभिमुख खड़ा हो। कुमार अंजलि में स्वर्ण व फल ले। उस समय मुहूर्त पर्यन्त कुमार पिता को और पिता कुमार को न देखे। कुमार शुभ मुहूर्त में देवता का ध्यान करके पिता की अंजलि में फल दे और उसके चरण पर सिर रखे। पिता कुमार का सिर स्पर्श करके उसको अपनी गोद में बैठाए। आचार्य ब्राह्मणों के सहित यि यज्ञेन' सूक्त पढ़े। प्राणायाम पूर्वक धृत संस्कार तक कर्म करके नवीन कौपीन और करधनी कुमार को धारण करने को दे। 'युवम्' मन्त्र को पढ़कर एक वस्त्र पहनने और एक वस्त्र ओढ़ने के लिए कुमार को दे। ब्रह्मचारी आचमन करके गुरु के पास से उत्तर की

ओर जाए और पात्र को देखकर लौटकर गुरु के दक्षिण बैठे। बर्हिस्तरणादि कर्म से आहुति तक कर्म करके पूर्व के समान अग्नि के उत्तर गुरु के पास जाए। आचार्य पूर्वमुख से और कुमार पश्चिमाभिमुख से खड़ा हो, आचार्य कुमार की अंजलि में जल भरे। उस जल में प्रथम चन्दन, फूल, फल, सुपारी और यथाशक्ति स्वर्ण डाले। ब्रह्मा ब्राह्मण आचार्य की अंजलि में जल भरे। आचार्य 'तत्सवितुर्वृणीमहे' मन्त्र को पढ़कर अपनी संजलि का जल कुमार की अंजलि में दे, कुमार सूर्य का ध्यान करके अर्घ्यपात्र में अंजलि का जल छोड़े। पिता 'देवस्यत्वा' मंत्र को पढ़कर अंगूठे सहित कुमार का हाथ ग्रहण कर कहे कि अमुक बालक दीर्घायु हो। इसी प्रकार तीन बार कुमार का हाथ ग्रहण करे। कुमार सावित्री मंत्र पढ़कर सूर्य को देखे और आचार्य मन्त्र के पूर्व का आधा भाग कुमार से पढ़वाए। कुमार अपने पिता के आगे पिश्चमाभिमुख से कुशासन पर बैठकर गायत्री मन्त्र को इस प्रकार ग्रहण करे जिसे अन्य कोई न सुने। कुमार फल, अक्षत और स्वर्ण गुरु को अर्पण करे व गुरु के चरण स्पर्श करे। गुरु कुमार के दोनों हाथों को ग्रहण करके और वस्त्र से छाया कर कुमार को गायत्री का उपदेश दे। उसके पश्चात् कुमार प्राणायाम करे। आचार्य ब्रह्मचारी को मेखला बांधे और दण्ड ग्रहण करवा कर व्रत का उपदेश दे। इसके बाद ब्रह्मचारी सर्वप्रथम पिता अथवा माता से भिक्षा मांगे। भिक्षा मांगकर आचार्य को समर्पित करे और उसकी आज्ञा से भोजन करे।

साञ्चाकारों के अनुसार यह संस्कार पांच साल से ऊपर सातवें, नौवें, ग्यारहवें, तेरहवें वर्ष में करवाया जाता है। गायत्री मंत्र का उच्चारण करके यज्ञोपवीत धारण करवाया जाता है। इस यज्ञ में ब्राह्मण, कन्या और गौ को भोजन खिलाया जाता है। यह संस्कार कुलपुरोहित द्वारा मंदिर या तीर्थस्थान पर करवाया जाता है।

(12) वेदारम्भ :- यज्ञोपवीत धारण करने के बाद ब्रह्मचारी गुरुकुल जाकर समस्त शास्त्रों का अध्ययन करता है।

(13) केशान्त (समावर्तन) :- वेदाध्ययन के समय रखी गई दाढ़ी व केशों को शिक्षा पूर्ण होने पर काटा जाता है जिसे केशान्त कहते हैं। इसके बाद ब्रह्मचारी गुरु से गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने की आज्ञा मांगकर गुरुदक्षिणा देकर गुरुकुल से घर आता है।

ब्रह्मचारी दो प्रकार के होते हैं। एक ब्रह्मचारी जो विवाह नहीं करते और दूसरे नैष्ठिक ब्रह्मचारी जो शिक्षा पूर्ण होने के उपरान्त भी गुरुकुल से वापस नहीं आते और अध्ययन-अध्यापन व गुरु की सेवा करते हैं।

(14) विवाह :- विवाहकाल के विषय में समय और परिस्थिति के अनुसार

कई परिवर्तन आते रहे। अधिक समय तक बालविवाह की प्रथा ही प्रचलित रही। बाल विवाह के दोषों को देखते हुए शास्त्रकारों ने विवाह की अवस्था पुरुष के लिए 20 वर्ष तथा कन्या के लिए 16 वर्ष निर्धारित की है। इस लोक व परलोक में चारों वर्णों के हित तथा अहित करने वाले आठ प्रकार के विवाह कहे गए हैं। (1) ब्राह्म, (2) देव, (3) आर्ष, (4) प्राजापत्य, (5) आसुर, (6) गान्धर्व, (7) राक्षस, (8) पैशाच विवाह।

जब विद्यावान् और शीलवान वर को बुलाकर कन्या को उत्तम वस्त्राभूषणों से अलंकृत करके कन्यादान किया जाता है उसे ब्राह्मविवाह कहते है।

जब यज्ञ के समय यजमान यज्ञ कराने वाले ऋत्विक को अलंकृत करके कन्यादान कर देता है तो वह विवाह दैवविवाह कहा जाता है।

जब किसी धार्मिक कार्य के लिए वर से एक अथवा दो जोड़े गौ-बैल लेकर उसको विधिपूर्वक कन्या दी जाती है उसे आर्ष विवाह कहते हैं।

जब ऐसा कहकर कि वर कन्या तुम दोनों धर्माचरण करो, भूषण आदि से पूजित कर वर को कन्या दी जाती है तो उसे प्राजापत्य विवाह कहा जाता है।

कन्या के पिता अथवा कन्या को यथाशक्ति धन देकर जब कोई इच्छापूर्वक कन्या ग्रहण करता है तब उसे आसुर विवाह कहते हैं।

कन्या और वर का परस्पर प्रीति से जो मिलन होता है उसे गान्धर्व विवाह कहते हैं।

जब कन्यापक्ष के लोगों को मारकाट कर तथा गृह को बेध कर रोती हुई कन्या का हरण करके विवाह किया जाता है उसे राक्षसी विवाह कहते हैं।

जिस विवाह में सोती हुई अथवा मदपान से मतवाली या उन्मत्त कन्या को एकान्त में मैथुनपूर्वक ग्रहण किया जाता है उसको सब विवाहों में अधम पैशाच विवाह कहते हैं।

विवाह वैदिक विधि से सम्पन्न किया जाता है।

साञ्चाग्रन्थ के अनुसार विवाह संस्कार ग्यारहवें, तेरहवें या पंद्रहवें वर्ष में किया जाता है। कुलपुरोहित शुभ दिन निकाल कर, लड़के के किसी सम्बन्धी के साथ लड़की के घर जाकर एक रुपया शगुन जिसे 'साई' कहते हैं, देता है। उसके पश्चात् वर व कन्या दोनों के प्रतिनिधि पुरोहित के पास जाकर शादी का शुभमुहूर्त निकलवाते हैं। विवाह के दिन प्रथम पूजा कन्या के घर में की जाती है, उसके बाद विदाई की जाती है और विदाई के बाद लड़के के घर पहुंचकर पूजा की जाती है। पूजा में पंचगव्य, धूप, अक्षत, चन्दन, डोरी, पानी का घड़ा, गुड़ आदि सामग्री प्रयोग में

लाई जाती है। पूजन समाप्त होने के बाद वर और वधु के हाथ में गुड़ देकर दोनों में बदला जाता है। उसके बाद सभी उपस्थित लोगों में गुड़ बांटा जाता है।

(15) चतुर्थी कर्म :- विवाहोपरान्त विवाह हुए घर में वर-वधु ब्रह्मचर्य नियम से चार दिवस पर्यन्त निवास करे। तीसरे अथवा चौथे दिन के चौथे प्रहर में वर वधु पार्वती-महादेव को नमस्कार करके वंशदान करे। भोजन, शयन, स्नान, तथा इकट्ठा बैठना गृहप्रवेश तक स्त्री-पुरुष एक साथ करें ऐसा मुनियों का मत है। देश, धर्म अथवा गृह्योक्त विधि से वधुसहित वर अपने घर पांचवें दिन जाए। पिता के जीवित रहने पर भी द्विज लोग गृह प्रवेश के आरम्भ में स्वस्तिवाचन नान्दी श्राद्ध करें।

साञ्चा ग्रन्थ के अनुसार शादी के बाद तीसरे, पांचवें या सातवें दिन वधु-वर के साथ मायके जाती है जिसे स्थानीय भाषा में 'पुलटोज़' कहते हैं। उस दिन लड़के के घर से एक रुपया और सवा किलो गेहूं लड़की के मायके ले जाया जाता है। वधु तीसरे, पांचवे या सातवें दिन मायके से ससुराल आती है और वधु का भाई या कोई सम्बन्धी सवा किलो गेहूं और एक रुपया लेकर लड़की के ससुराल आते हैं।

(16) अन्त्यकर्म :- मनुष्य के देहावसान पर अंत्यकर्म संस्कार वैदिक विधि से किया जाता है।

साञ्चा के अनुसार अन्त में पार्थिव शरीर को गंगाजल से पवित्र करके गीता पाठ किया जाता है। उसके पश्चात् पार्थिव शरीर को गांव से बाहर दर्शन के लिए रखा जाता है जहां बन्धुजन कफन डालते हैं। इसके पश्चात् दाह संस्कार हेतु पार्थिव शरीर को श्मशान ले जाया जाता है। गार्गी मन्त्र का उच्चारण करके दाह संस्कार किया जाता है। मृत्यु के दस दिन के भीतर अस्थियां गंगाजल में प्रवाहित की जाती हैं।

तेरहवें दिन घर में हवन करके पितरों को जल तर्पण किया जाता है। छः महीने के भीतर ब्राह्मण को दान दिया जाता है। एक वर्ष बाद वार्षिकी व चार वर्ष बाद चातुर्वार्षिकी की जाती है।

सभी संस्कारों का निम्न महामन्त्र है :-

उत्पत कर ब्रह्मा लेखा न अनन्तः
रीजक दीये विष्णु जिउआ जन्तः
खपत करे श्री महादेव।

यद्यपि आज संस्कारों का प्रायः लोप होता जा रहा है और हमारा शिक्षित वर्ग इस ओर अभी ध्यान नहीं दे रहा। इसी कारण आज का मानव दानव बनता

जा रहा है और अनेक प्रकार के कष्टों, व्याधियों, मानसिक और शारीरिक व्यथाओं से पीड़ित होकर इस भू स्वर्ग को नरक बनाता जा रहा है।

स्पष्ट है कि यदि संस्कारों का देश से लोप हो गया तो मानव की दयनीय दशा होगी इसमें कोई दो मत नहीं हो सकते। अत: वेदों ने जो संस्कार पशु से मनुष्य बनाने के लिए हमें दिए हैं और घोर से घोर अशिक्षा के युग में भी जिनका सांचा ग्रन्थों के रूप में यहां के लोगों ने संरक्षण किया है उनका पुन: शुद्ध रूप से प्रचार-प्रसार होना चाहिए जिससे देश और प्रदेश के लोगों का सब प्रकार से कल्याण और उन्नति हो।

साञ्चा ग्रन्थों में रामकथा

रामकथा का अस्तित्व बहुत प्राचीन है। वेद, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् प्रभृति जितने भी भारतीय साहित्य के प्राचीनतम ग्रन्थ हैं उन सब में सर्वत्र रामकथा की व्यापकता विद्यमान है। कुछ विद्वानों के मतानुसार रामकथा सम्बन्धी आख्यान काव्यों की वास्तविक रचना वैदिक काल के बाद इक्ष्वाकुवंश के सूतों ने आरम्भ की। हिन्दी आख्यानकाव्यों के आधार पर वाल्मीकि ने रामायण की रचना की। सूतों द्वारा प्रोक्त मूलकथा रामकथा सम्बन्धी आख्यानों तथा स्फुट कथाओं की सत्यता और वाल्मीकि रामायण के लिए उसको उपजीव्य बताते हुए फादर कामिल बुल्के का भी यही अभिमत है कि राम, रावण तथा हनुमान के विषय में पहले स्वतन्त्र आख्यान प्रचलित थे जिनके संयोग से रामकथा प्रचलित हुई। महाभारत में भी इस प्रकार की गाए जाने योग्य गाथाओं का उल्लेख मिलता है।

साञ्चा ग्रन्थों में रामायण के चार काण्ड हैं :–

(1) पाताल काण्ड।

(2) अयोध्या काण्ड।

(3) इन्द्र के साथ युद्ध।

(4) लंका काण्ड।

इसके विद्वान् इन कथाओं को गाकर ग्रामवासियों को सुनाते हैं। इसके कुछ अंश जो दन्तकथाओं पर आधारित हैं, हमें चन्दवाणी लिपि के विशेषज्ञ श्री तुलसीराम से प्राप्त हुए हैं जो साञ्चा ग्रन्थों की मूल भाषा से लिप्यन्तरित व हिन्दी अनुवाद सहित प्रस्तुत किए गए हैं।

महाभारत, रामायण एवं रामचरितमानस के रामकथा प्रसंगों से इसमें पर्याप्त अन्तर प्रतीत होता है।

रामायण का पातालकाण्ड

(1) धोबी रे जोबे डेया देवतेया टिकरो केड़ा छड़ा भारथो रा कौरा। खौड़ा बुध बिऊजा नारायणो, बातो रामो छाड़िए चन्दरो खे लाए। आठ शाठे खौरे दारु कौरे देवतेआ धाइर लाखे कौरे तोपे, शिंगणे मुहाला। काश उबो कांबो मण्डलो उदा छौणो बासु रा नागो। लाम्बू जिऊ हालू पृथवी दशो री पाण्डी कांबो दशो पागो।

जब राम धोबी टिक्कर में आए तो सब देवता इकट्ठे हो गए। बोधि नारायण ने श्रीराम से कहा, "महाराज ! रावण को क्या पता चलेगा कि आप आ रहे हैं। आप अड़सठ खार बारूद इकट्ठा करो। जब लाखों तोपों द्वारा ध्वनि होगी और तीनों लोक कांप उठेंगे, तब रावण जागृत होगा।

(2) शीले तौबे डेया दानवा मतारणे, धाओ राणी छाड़ा मदौरी खे लागा। राणिए बोलू मदौरिए शिले, जाए मतारणे खे आए।।

धुरकी छूटे राणिए पाछेओ कि चूटा राणिए इन्द्रौ दो राओ।

तीन जुग लागे कांबदे नादे मेरिया जे देही दे शेआओ।।

रावण ने जब ध्वनि सुनी तो उसका शरीर कांपने लगा। वह अपने रनिवास कि ओर भागा और मंदोदरी को आवाज़ लगाई, "मंदोदरी। जल्दी आओ। यह क्या आवाज़ हुई। या तो पश्चिम दिशा टूट गई या राजा इन्द्र से राहू गिर गया। तीनों लोकों सहित मेरा शरीर क्यों कांप रहा है।''

अयोध्या काण्ड

(1) बातो बुध जबे लाओला नरायणो रामो छाड़ी लखणे खे लाए।

धोबी का जागो देवतेओ टिकरो सातो पुरे जादे समुन्दरो खे जाओ।

सातो देखे भी समुन्दरो, सातो देखे समुन्दरो रे खाए"

बोधिनारायण कहते हैं, 'हे राम और लक्ष्मण ! क्या आप लंका जाना चाहते हो। क्या आपने समुद्र देखा ? क्या आपने समुद्र की गहराई का पता लगाया है? क्या आप उसे लांघ सकते हो।

(2) रामो रे उबे कशो देवतेओ रे पालगे जती कशो लखने रो जफानो। घोड़ा ऊबा कशो हाथिया डांडी रौंदी नी पालगी रे गाणो।।

बोधिनारायण ने देवताओं से श्रीं राम के लिए पालकी व लक्ष्मण जी के लिए जफान तैयार करने को कहा। राम जी के साथ हाथी, घोड़े तथा पालकियों सहित बहुत सी सेना थी।

(3) बारो कोशो दा कांचनी रा लागा तापा।

ठारो कोशो दा चलुओ बे टमका निसाणो।।

घोड़ा चलदा लागा हाथिया।

डांडी रौंदी नी पालगी रे गाणो।

बारह कोस में नाचने वालियां चल रही थीं और अठारह कोस में साज बजाने वाले थे। हाथी, घोड़े, डांडी और पालकी आदि का तो कोई ठिकाना ही न था।

(4) रामो रे जवो उखड़ो फौजो पुरे चले ठारो हजारो।

आगले पाणे पिओले पाखलू पाछले बैठोले चाटणे खे गारो।।

रामचन्द्र जी की सेना जब चली तो वह इतनी बड़ी थी कि आगे वालों को तो नालों में पीने को पानी मिल गया पर पीछे वालों के लिए बहता पानी भी समाप्त हो गया था। उन्हें कीचड़ ही चाटना पड़ा।

(5) साते जबे पुजा देवतेआ समुन्दरो, तांबू सातो छाड़ेओ समुंदरो दे लाओ।

दूरबणे जबे लाओ दानवे लाके दू, धाका पोरा लागा दानवो खे दोहरा।।

जब श्रीराम की सेना समुद्र पर पहुंची तो रावण ने दूरबीन लगाकर सेना को देखा। इतनी बड़ी सेना को देखकर रावण को धक्का लगा और वह गिर गया।

जब श्रीराम समुद्र तट पर पहुंचे तो उसे पार करने के विषय में अति चिन्तित हुए। उन्होंने खाना तक भी छोड़ दिया। उन्होंने समुद्र की शान्ति के लिए उपासना की। समुद्र ने प्रसन्न होकर कन्या रूप धारण किया और श्री राम से कहने लगी :-

(6) बातो साते जबे लाओला, समुन्दरो बातो रामो छाड़िओ बे चन्दरो खे लाओ। छः म्हीने रा करे देवतेआ रे सबरो, म्हीना जाओला बोले धर्मो रा आए। पाणी रा तेथा बणोला देवतेआ पाथरो, तांखे बी पाण्डे देओला रस्ता लाओ।।

कन्या रूप धर कर समुद्र राम के पास गया और उनके मुंदे नेत्र खुल गए। कन्या बोली, 'हे प्रभु ! आप छः मास प्रतीक्षा करो। छठा मास धर्मी मास आ जाएगा। उस समय समुद्र का जल जम जाएगा, तब आप उसके ऊपर से पार चले जाना।

(7) बातो रामे जबे लाओला चन्दरो, बातो छाड़ी देवतेआ समुन्दरो कौणे ऋखिए हिऊंचलो माई टिबड़ी, कौणे माइयो बांगी तिरछी गांगे कौणे ऋखिए पाण्डे सात लौंघे समुन्दरो रौणे कौणे जुझो भारथो दा आगे

बातो साते लाओला समुन्दरो ।।

श्रीराम ने समुद्र से पूछा, "हे समुद्र ! हिमालय की रचना किस ऋषि ने की और किस ऋषि ने गंगा नदी का निर्माण किया है। कौन ऋषि सात समुद्रों को लांघेगा और कौन योद्धा रावण से युद्ध करेगा।

(४) शिवजिए ऋखिए हिऊंचलो उबी माईयो टिबड़ी
भागरथे बांगी माईं तिरछी गांगे।
तेरे बापे जसरथे सात माएं समुन्दरो,
राम रणे जुझो भारथो दा आगे।।

भगवान शिव ने हिमालय की चोटी बनाई। भगीरथ राजा ने गंगा नदी का निर्माण किया। तेरे पिता राजा दशरथ ने समुद्र बनाए और हे राम ! तुम रावण के साथ रण में युद्ध करोगे।

इन्द्र के साथ युद्ध का प्रसंग

(1) कौरो जबे कौरो दानबे कागलो, कौरी हेड़ो कलमो दवातो।
चींठी लिखिञो इन्दरो खे, लिखि हेड़ी आपणी बातो।।
खौरुआ तौबे लिखा दानवे हुकमो, पोरा छाड़ा खरुओ शुणा।
रामचन्दरो साते पुजे समुन्दरो छः म्हीने दी उद्दी बरखा लाओ।।
नादे भूल रामो दे फौजो हाले जाओ रवाने जाओ।।

जब रावण ने श्रीराम की बहुत अधिक सेना देखी तो उसने कलम दवात लेकर देवराज इन्द्र को पत्र लिखा, "हे इन्द्र ! तू छः महीने तक ऐसी वर्षा बरसा कि रामचन्द्र की सारी सेना या तो पानी में बह जाए या भूस्खलन से दब जाए और ये सब समाप्त हो जाएं।"

इस बात का पता जब साही को लगा तो उसने इसकी सूचना श्रीराम तक पहुंचाई। इससे रक्षा करने के लिए श्रीराम ने गरुड़ जी को बुलाया और अपनी सेना के वर्षा से बचाव के लिए कहा। गरुड़ जी ने अपनी गिद्धों की सेना को आकाश में फैला दिया और राम जी की सारी सेना को ढक लिया। उनपर वर्षा की बूंद तक न पड़ी और वर्षा का सारा जल लंका की ओर चला गया। रावण ने देखा कि राम की सेना पर तो वर्षा का कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा तो उसने इन्द्र को ओले की वर्षा करने के लिए पत्र लिखा ताकि ओले की वर्षा से गरुड़ की सारी सेना के पंख टूट जाएं। राम को साही द्वारा जब इस बात का पता चला तो उन्होंने गरुड़ सहित सारी सेना के पंखों पर अपनी सांस छोड़ी और उन्हें वज्रसमान कर दिया। इन्द्र ने ओलों की वर्षा की पर गरुड़ की सेना पर उसका भी कोई प्रभाव

न पड़ा और सारे ओले लंका की ओर चले गए। रावण ने अब इन्द्र को बिजली डालने के लिए लिखा। साही ने यह खबर भी राम तक पहुंचाई तो राम ने गरुड़ को अपनी सेना वापस बुलाने के लिए कह दिया और अपनी सेना से कहा कि अपनी सेना में ऐसा कोई योद्धा है जो बिजली को रोक सके। तब हनुमान जी इस कार्य को करने के लिए तैयार हो गए :-

खौड़ा अंजणी रा तौबे बिऊंजा हणुमान बातो छाड़ी रामचन्दरो खे लाओ।
ढाई घड़ी रा देंदा देवतेआ हुकम, जुध देओला इंदरो खे लाओ।
लोहे री जौबे पड़ोली बिजल़ी साते पुरी देओला समुन्दरे पाई।
इन्दरो जौबे लागो बशदा पृथ्वी लागिओ निआरो जाओ।
एक पौड़ेओ बिजल़ साते बीरे हेड़ेओ हणुए समुन्दरो दे पावे।
दूजे जब पावेओ बिजल़, दूजे हाथे छाड़े टेकणा ला।
साते पुरे हेड़ेओ समुन्दरे पावे।

मेघ के गरजने पर हनुमान जी मां अंजनी का नाम लेकर रण में खड़े हो गए। वह इन्द्र के साथ युद्ध करने के लिए तैयार खड़े थे। उन्होंने कहा जब इन्द्र बिजली छोड़ेगें तो मैं उसे समुद्र में डाल दूंगा। इन्द्र के गरजने पर पृथ्वी कांपने लगी और सब ओर अंधेरा छा गया। जैसे ही इन्द्र ने बिजली छोड़ी वैसे ही हनुमान जी ने उसे अपने हाथों से पकड़ लिया और उसे ठण्डा करने के लिए समुद्र में डाल दिया।

❑

साञ्चा विद्या में मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र

रमेश जसरोटिया

मन्त्र, तन्त्र और यन्त्र, यह पराविद्या अति प्राचीन, परम गोपनीय एवं अत्यन्त शक्तिशाली है। प्राचीनकाल में जो क्लिष्ट कार्य भौतिक साधनों द्वारा सफल नहीं होता था उसे हमारे सिद्ध मनीषी मन्त्रों, यन्त्रों अथवा तन्त्रों द्वारा सिद्ध कर लिया करते थे। निस्सन्देह मन्त्रों की सिद्धि के लिए शुभ संकल्प, दृढ़ निश्चय एवं अटूट श्रद्धा का होना आवश्यक है। स्वयं में निहित शक्तियुक्त वर्णों के समूह का नाम मन्त्र है। व्यष्टि और समष्टि मन की विराट एवं अव्यक्त शक्तियों को क्रियात्मक रूप प्रदान करने का महत्त्वपूर्ण कार्य मन्त्र करते हैं। जो सामग्री यंत्र बनाने के लिए प्रयोग में लाई जाती है अर्थात् जिन वस्तुओं, औषधियों द्वारा वांछित यंत्र तैयार किया जाता है उसे तन्त्र कहते हैं। मन्त्रों की भांति यंत्र भी बड़े प्रभावशाली होते हैं। कुछ यन्त्रों में केवल अंक ही लिखे जाते हैं। जबकि कुछ में सम्पूर्ण मन्त्र अंकित किए जाते हैं। विभिन्न यन्त्र विभिन्न कार्यों की सिद्धि और रोग निवृत्ति के लिए काम में लाए जाते हैं। प्रत्येक यन्त्र साधारणतया भूर्जपत्र पर अष्टगंध से लिखकर तांबे या चांदी के तावीज़ में भरकर गुग्गुल धूप देकर स्त्रियों के बाएं बाजू या गले में तथा पुरुषों के बाएं हाथ या गले में बांधा जाता है। अंकात्मक यंत्र धारण करने के लिए किसी विशेष काल या समय की आवश्यकता नहीं होतीं परन्तु मन्त्रयुक्त यंत्र को चन्द्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण के समय 108 बार जप करके पूजन करवा कर धारण किया या करवाया जाता है।

साञ्चा ग्रन्थ में अथर्ववेद के समान वशीकरण, मोहन, मारण, उच्चाटन, आशीर्वाद, स्तुति और प्रार्थना विषयक मंत्र, तन्त्र और यन्त्र हैं। मन्त्रोच्चारण से किसी देवता की सिद्धि या अलौकिक शक्ति की प्राप्ति होती है। यन्त्र की उत्पत्ति के सम्बन्ध

में ज़िला सिरमौर के पाबुच विद्वानों में एक किम्वदन्ती प्रचलित है कि शंकर भगवान् ही यंत्र के प्रधान देव हैं। गुरु गोरखनाथ ने इसका प्रसार किया। कहते हैं कि एक बार मत्स्येन्द्रनाथ ने विश्वशान्ति के लिए भण्डारा किया और इस हेतु जगह-जगह घूम कर भिक्षा एकत्र की। उस भिक्षा में बहुमूल्य रत्न आदि भी थे। जब मत्स्येन्द्रनाथ भिक्षा लेकर वापस आए तो उनके शिष्य गोरखनाथ ने उनसे पूछा कि यदि वह उनसे सारी भिक्षा छीन ले तो क्या होगा? गुरु ने कहा कि फिर भण्डारा नहीं हो सकेगा। गोरखनाथ ने गुरु से भिक्षा छीनकर पास के एक कुएं में फेंक दी। गुरु को इसपर बहुत दुःख हुआ और उन्होंने भी कुएं में गिरकर अपने प्राण देने चाहे। श्री गोरखनाथ ने कहा, "आप अपने प्राण क्यों देते हैं, इतना सा धन तो मैं पल में पैदा कर सकता हूं।'' फिर गुरु के सामने ही उन्होंने एक चट्टान पर पेशाब किया और उनकी मन्त्रशक्ति से वह चट्टान स्वर्ण की हो गई।

गुरु गोरखनाथ में अपार शक्ति थी। एक बार मां शक्ति ने उनकी परीक्षा लेनी चाही। देवी ने मक्खी का रूप धारण किया और जैसे ही गोरखनाथ ने जम्हाई लेने के लिए मुंह खोला, मक्खी बनी देवी उसके पेट में घुस गई। गुरु गोरखनाथ ने अपान वायु को बंद कर लिया और मक्खी को अपने पेट में ही कैद कर लिया। मक्खी ने अन्दर से कहा-

"तब डाढण लागी खरी पछताउणी
तुएं गुरुआ का संकट आणी
रा रा गोरख मुएं तेरी माई"
माई कहंदी बुचरी जाई
बुचरी सार न जाणे कीएं
जलभर नैणा कृष्ण कालका होई
डांढी वस्त्र गलकी हार
स्वामी शंकर करो विचार
टूठी देवी मंदल ले जो माओ
मांग रे पूता अमें बर दे ज़ाओ।

गोरखनाथः-

आमे देवियो कैनी जाणा
तूएं कियो देवियो आपणा बाणा
रा रा गोरख रोए समाएं

नौ खण्ड पृथ्वी फेरेओ आई
ज़ती सती गुरु गोरख राओ
चंद सरीखा सीतला
सुरजो सरीखा तोपदा
मैं घमालवां बरखुंदा

इस प्रकार गुरु गोरख ने मक्खी बनी देवी को जाने न दिया। देवी बोली-हे गुरु मुझे छोड़ दे। मुझे तुम्हारी मंत्रशक्ति पर विश्वास हो गया है। इसके अतिरिक्त मैं तुम्हें भूत, गंधर्व, पिशाच आदि सबकी शक्ति देती हूं और सदा तेरी वाणी में वास करूंगी। तब गुरु गोरखनाथ ने देवी मां को छोड़ दिया।

एक बार देवी ने पर्वत को उठाया और गुरु गोरख की ओर फेंका। गोरखनाथ ने माश के दो दानों को मंत्रित करके वह चट्टान आकाश में ही थमा दी। उसका लोहा मानकर देवी ने उनकी तुलना महादेव से की।

मंत्र

मूलमंत्र

डंक मातलोगे आशका सदा शिवपुरे हरे भइयो नमो रे नमो
फुहर मंतर फेर सुहाई ईशर गुरु की बाचा
सतगुरु की पड़े दुहाई,
बाचा टोले तां पृथ्वी गोले।

झाड़फूंक-मंत्र

घोर-घोर महाघोर पौण घोर पाणे घोर
छैपनछूरी आगे घोर छैपनछूरी पीछे घोर
होरपाछे कौण चाले राई राणी करणगंधीलन चाले
होरपाछे कौण चाले शिरखी के शौ शाठ सिरदार चाले
का कुछ खाहू के चाले का कुछ पीके चाले
स्वाह सेर तोसा खा के चाले, स्वाह सैर तोसा पीके चाले
देखे बाबा हवा घोरी ऐसे तन का तमाशा
मेरे दुश्मन को दिन तीन में वे पूछ कर मारो
जंतर मंतर तंतर मारे

जादू को बंद करूं ज़ियों रो के ज़ाल को बंद करूं
लाखी बज़ारे के वास को बंद करूं
निरज़ा गुणी के हस्त कीलू, जिभया कीलू
मन कीलू बाधों सकल शरीर
सुहड़ को बंद करूं मुसलमान के खबीस को बंद करूं
हिन्दू के भूत को बंद करूं
उलटे जादू खुलटे सुहड़ उलटे काल्का
उलट के जाओ, चौहाई पर बाणो अपना ढांवों
फुहर मंतर फेर सुहाई, ईशर गुरु की बाचा
गुरु गोरख की पड़े दुहाई, बाचा टले तब पृथ्वी गले

ये यंत्र-मंत्र-तंत्र चन्दवाणी तथा पाबुच सांचे में समान रूप से विद्यमान हैं, लेकिन विशेषता यह है कि एक ही रोग के उपचार के लिए चन्दवाण और पण्डवाण अलग-अलग यंत्र-मंत्र-तंत्र का प्रयोग करते हैं, यथा-बच्चा अगर दूध न पीये तो चन्दवाण पंडित के यंत्र, मंत्र,तंत्र होंगे-

यंत्र :- निम्न यंत्र भोज पत्र पर बनाया जाता है।



मंत्र :-

काईले भैंरू काईली रात
भैंरू जगाऊ आधी रात
ऐसा भैंरू कौन है
मेरे भैंरू की पूजा मिटे
आठ मशाण खाये

सोलह मशाण फिरे
कोल्हू का तेल
कुम्हार का हाण्डा
पकड़ के लाओ हजूर
दुश्मण को पटवारी
भोन जान को बन्द करो
खेचरी भूचरी को बंद करूं
लागे लगाये को बंद करूं
डागी जोगणी को बंद करूं
खेचरी भूचरी को बंद करूं
मड़ मशाण को बंद करूं
इतने बन्धन बन्धू
देहणा बन्धू पांव
मेरा मन्त्र झूठा जाओ
फूर मन्त्रा ईशर की बाचा

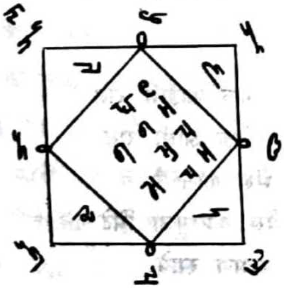
तंत्र :- सरसों के कुछ दाने, कुंकुम या सिंदूर, सांप की खाल का टुकड़ा, भोज-पत्र, लाल कपड़े का टुकड़ा, अष्टगंध या गुगुल, काले सूत की डोरी तथा तीन लाल मिर्च।

विधि :- सरसों के कुछ दाने, कुंकुम, सांप की खाल को मंत्रित कर भोज-पत्र पर यंत्र में बंद किया जाता है। उसके बाद यंत्र को लाल कपड़े के टुकड़े में बांध करके गुगुल का धूप दिया जाता है और बच्चे के गले में सूत की डोरी से बांधा जाता है। जैसे ही यंत्र बांधा जाता है एक या तीन मिर्च बच्चे के सिर पर तीन बार घुमा कर आग में डाली जाती है।

यन्त्र डालने के लिए सोमवार शुभ माना जाता है। इसके अतिरिक्त मंगल और बुध वार को भी यह यन्त्र डाला जाता है।

इसी उपचार के लिए पाबुच निम्न यंत्र, मंत्र, तंत्र का प्रयोग करते हैं-

यन्त्र :-



मंत्र :-

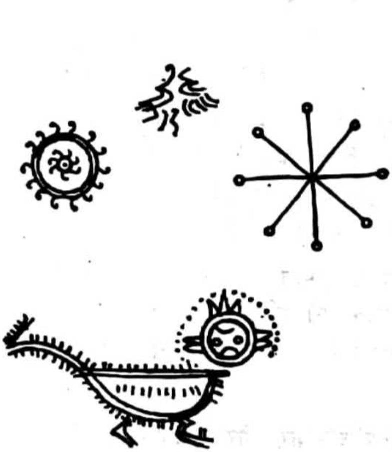
एक टक्का भोगत, दो टक्का पानी
ईशर ने आनी गोरजा रानी
तीन साधु के भीतर लानी
भीतर मंत्र बाहर राग
ज़ाए राग सात समुन्द्र पार
बालक के दुधे मन्त्रै बागै
गुरु गोरख हार
ईशर की बाचा
बाचा टले तो पृथ्वी गले

तन्त्र :- दूध, बर्तन, राखयुक्त कोयला, लाल मिर्च। इन सब को उपर्युक्त मंत्र से अभिमन्त्रित किया जाता है और किसी बर्तन में दूध ले कर बच्चे को पिलाया जाता है। राख भरे कोयले से बच्चे के दायें कंधे, छाती तथा मस्तिष्क में तिलक लगाया जाता है और लाल मिर्च को बच्चे के सिर पर तीन बार घुमा कर आग में जला दिया जाता है। यन्त्र को बच्चे के गले में बांध दिया जाता है।

विशेष :- इस यन्त्र-मंत्र का प्रयोग उस अवस्था में भी किया जाता है जब बच्चा रात को न सोये या बच्चा ज़्यादा रोए।

इसी प्रकार भूत-प्रेत को भगाना हो तो चन्दवाण पण्डित का यन्त्र, मन्त्र-तंत्र है-

यन्त्र :-



मंत्र :-

जमकी नगरी जमकी छाती
तुम बसे बारह ज़ाती
तुम बसे छूरी पांखुड़ी के घरे
खास-फास मेरे पास
काली कुकड़ी रतवा स्याल़
तुमकी मुखे जमका जाल
काली-काली महाकाली
इन्द्र की बेटी ब्रह्मे की साली
जांकू भेजूं वहां कू जाली
जिसको भेजूं उसको खाली
आकाश को भेजूं, आकाश का काम सुधारो
पाताल को भेजूं, पाताल का काम सुधारे
मेरी भक्ति मेरे गुरु की शक्ति
फूर मंत्रा ईशर की बाचा

तन्त्र :- अनार की कलम, पत्थर की स्लेट, घी, गुग्गुल, सूत या बिच्छूबूटी के रेशे की डोरी, चार कंकर, भोजपत्र, लाल कपड़ा।

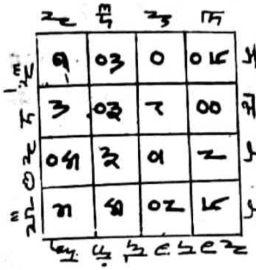
विधि :- यदि किसी घर में कोई भूत वास कर रहा हो तो पत्थर की स्लेट पर कील से यन्त्र खुदवाया जाता है। इसको अष्टगंध या गुग्गुल या गाय के घी का धूप दिया जाता है और सूत की डोरी या बिच्छूबूटी के रेशे की डोरी से इसे बांध कर दरवाज़े में लटकाया जाता है। इसके साथ चौराहे के चार कंकर एक कपड़े में बांध करके इसी स्लेट के साथ लटकाये जाते हैं।

यदि भूत-प्रेत खेत में अर्थात् घर से बाहर हो तो उस खेत के बीचों-बीच एक लक्कड़ गाड़ दिया जाता है और दरिया में जहां पानी कुछ रुकता है वहां से पत्थर ला कर उस पर यन्त्र खुदवा दिया जाता है, उसके पश्चात् इस पत्थर को उक्त लक्कड़ पर स्थापित किया जाता है।

यदि किसी इन्सान या पशु को भूत का प्रकोप हो तो भोजपत्र या कागज़ पर यन्त्र बना करके इसे अभिमंत्रित किया जाता है। उसके बाद यन्त्र को लाल कपड़े के टुकड़े में बांध कर काली डोरी के साथ सम्बन्धित व्यक्ति के गले में बांध दिया जाता है।

यह यन्त्र शनिवार और अमावस्या के दिन बनाया जाता है।

पावुचों द्वारा प्रयुक्त यन्त्र-



मंत्र :-

ओम् नमो: सतो पुनिकालिका

बारह वर्ष कुमार एक माई

पणमेशरी चौदह भवन द्वार

दोनों पंखी निर्मले

तेरह देवी देव

अष्टभुजी कालिका ग्यारह इन्द्रासन

सोलह कला सम्पूर्ण तीन नैन भरपूर

दस दरवाजे निर्मले माई

पांचों जान नौ नाथ

खट्ु दर्शनी पन्द्रह तिथि जान

चारों कोने निर्मले

देवी करे कल्याण

फोर मंत्र फेट सुहाई

ईशर गुरु की बाचा

गुरु गोरखनाथ की पड़े दुहाई

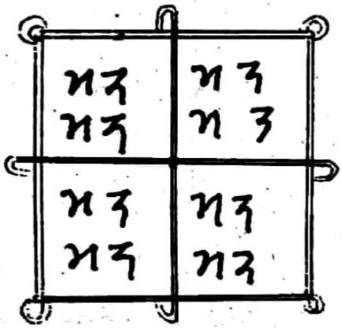
तन्त्र :- ढाई लौंग, अजवायन, सरसों के कुछ दाने, तीन लाल मिर्च, अनार की लेखनी, स्याही तथा कागज़।

विधि :- कागज़ पर अनार की लेखनी तथा स्याही से यन्त्र बनाया जाता है। लौंग, अजवायन तथा सरसों के कुछ दानों को ऊपर लिखित मंत्र से/अभिमंत्रित करके यन्त्र में बंद कर दिया जाता है और मिर्चों की धूनी दी जाती है। यन्त्र को

लाल कपड़े के टुकड़े में लपेट करके सूत की काली डोरी से पुरुष हो तो दायें बाजू में तथा स्त्री हो तो बायें बाजू में बांधा जाता है।

यह यन्त्र रविवार, मंगलवार, शुक्रवार को बनाया तथा पहनाया जाता है। चन्दवाण पण्डित श्री तुलसी राम से प्राप्त कुछ अन्य यन्त्र-

वशीकरण यन्त्र :-



मंत्र :-

सिंधूर बंधू समुंद्री बंधू
कुरी कुआंरी लड़की बंधू व लड़का बंधू
हेडू के शींगे खशिया नार
मेरी बंधी टूटे, बाबा नार सिंह की जटा फटे
फूर मंत्रा ईशर की बाचा

नोट :- यह मंत्र सात बार बोला जाता है।

फूल संगनारी आये, तोड़े फूल की मारे सान
उड़मत गुड़मत गुड़मत लूण गूड़ का झोले घास
जो बंधाये ओ आये मेरे पास
आखी बंधू ओ जाये उसकी साखी
फूर मंत्रा ईशर की बाचा

उक्त मंत्र का उच्चारण भी सात बार किया जाता है।

तन्त्र :- अनार की कलम, भोजपत्र या कागज़, कुमकुम या सिंदूर, सरसों, एक फूल, गुड़ तथा सूत की डोरी।

विधि :- यन्त्र को अनार की कलम से भोज पत्र या कागज़ पर बनाया जाता है। इसके बाद थोड़ा सा गुड़, एक फूल, कुमकुम तथा यन्त्र उपर्युक्त मंत्र के साथ इकट्ठे मंत्रित किये जाते हैं। कुमकुम तथा सरसों को यन्त्र में बंद करके सूत की डोरी के साथ वह व्यक्ति अपने गले में बांध देता है जो किसी को वश में करना चाहता है, जिसको वश में करना हो उसे मंत्रित गुड़ किसी खाने की वस्तु में मिला कर खिलाया जाता है और थोड़ा सा कुमकुम उसके शरीर में कहीं भी लगाया जाता है। फूल स्वयं अपने पास रखा जाता है।

पशुओं के खुरों की बीमारी के निवारण का यन्त्र :-

खुरिया नाश चक्र :-

८	०	८३	०१
००	८०	४	५
३	७	६	२३
२०	०३	५	३

मंत्र :-

काले भेंरू काली रात
भेंरू जगाऊ आधी रात
ऐसा भेंरू कौण है
मेरे भेंरू की पूजा करे
आठ मशाण खाई सोलह मशाण फिरे
कोल्हू का तेल कुम्हार का हाण्डा
पाकड़ के लाओ हजूर
दुश्मण को पटवारी
भौन जान को बन्द कर

खेचरी भोचरी को बन्द कर
रूधी व्याधी को बन्द कर
मड़ मशाण को बन्द कर
धूड़ मशाण को बन्द कर
खेचरी भोचरी को बन्द कर
मेरी बन्धी टूटे
बाबा नार सिंह की जटा फटे
फूर मंत्रा ईशर की बाचा

तन्त्र :- सरसों, सिंदूर, सांप की खाल का टुकड़ा, घी, गुग्गुल, स्याही, पानी, क़ागज़, थाली, अनार की कलम, सूत की डोरी।

विधि :- कागज़ पर अनार की कलम से यन्त्र बनाया जाता है सरसों के कुछ दानें, सिंदूर, तथा सांप की खाल का टुकड़ा मंत्रित कर यन्त्र में बंद किया जाता है। उसके बाद इसे घी तथा गुग्गुल का धूप देकर सूत की डोरी के साथ बीमार पशु तथा संक्रमण के भय से सभी पशुओं की पूंछ में बांधा जाता है। इसके साथ इस यन्त्र को स्याही से एक थाली में बनाया जाता है और घी तथा गुग्गुल का धूप देकर इस यन्त्र को मंत्र का उच्चारण करते हुये पानी से घोला जाता है। इस घोल को सभी पशुओं को पिलाया जाता है।

यह यन्त्र रविवार, मंगलवार तथा अमावस्या के दिन बनाया जाता है।

गाय जब दूध न दे तो उपचार हेतु प्रयुक्त यन्त्र :-





मन्त्र :-

लिल्ली लिल्ली महा लिल्ली
जगत राम की उब्भा किलू, डांकणी किलू शांकणी किलू,
लागे लगाये को किलू, चलदी केरे पैर किलू,
उड़दी केरे नैर किलू, देखदी केरे आंख किलू,
खशणी किलू खनारी किलू, भाटणी किलू पुजारी किलू,
चूहड़ी किलू चमारी किलू, फूंर मंत्रा ईशर की बाचा

तन्त्र :- एक काग़ज, अनार की कलम, फेगड़ा (अंजीर प्रजाति का एक पौधा विशेष जिसके पत्ते तोड़ने से दूध सा पदार्थ निकलता है) का छिलका, कांसे की थाली, स्याही, सरसों, कुमकुम, धूप तथा सूत की डोरी।

विधि :- एक कागज़ पर अनार की कलम से यन्त्र बनाया जाता है। सरसों के कुछ दाने तथा कुमकुम को यन्त्र में बंद किया जाता है और इसे धूप दे कर सूत की डोरी से गाय के गले में बांध दिया जाता है। यही यन्त्र कांसे की थाली में स्याही से लिखा जाता है और इसमें पानी डाल कर 'फेगड़े' के छिलके से मंत्र का जाप करते हुये घोला जाता है और यह घोल गाय को पिलाया जाता है।

विशेष :- अगर किसी मां के दूध न हो तो उपचार हेतु इसी यन्त्र, मंत्र, तंत्र का प्रयोग किया जाता है।

इस यन्त्र के लिए बुधवार, सोमवार तथा मंगलवार शुभ माने जाते हैं।

इस प्रकार आज के युग में भी यन्त्र-मन्त्रों के बल पर दैवज्ञ अपने वैदुष्य से अक्षुष्ण यश को प्राप्त कर सकता है। आवश्यकता है सच्चे साधकों की। साधनाक्रम सुव्यवस्थित एवं सत् अभिलाषा लेकर ठीक रखा जाए तो असम्भव को भी सम्भव किया जा सकता है।

❑

हिमाचल में साञ्चा विद्या एक तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० गोकुलचंद शर्मा

हिमाचल प्रदेश भारत का मुकुट है। इस प्रदेश की गरिमा, अपने कैलाश की ऊंचाई के कारण ही नहीं है अपितु अपनी समृद्धतम संस्कृति तथा अनेक विद्याओं की जन्मभूमि होने के कारण भी है। इस प्रदेश में ही सात सिन्धु प्रवाहित होते हैं, इसी प्रदेश में मानव जाति के उत्पादक मनु का जन्म हुआ है, जिस के नाम से विश्व प्रसिद्ध पर्यटन स्थल मनाली आज भी, मनु के इस सन्देश को स्मरण करवा देती है कि-

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं-स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवः।।

मनाली के ऊपर का पहाड़ रोहताङ्ग या रोथांग अपने नाम से ही बतला रहा है कि मनु इसी पर्वत के शिखर पर बना था और बचा था। लाहुली भाषा में, शवों के ढेर को ही रोथांग संज्ञा दी जाती रही है। महाप्लावन में पृथिवीस्थ समस्त मुर्दे इस पहाड़ के रूप में एकत्रित हुये होंगे।

इसी हिमाचल के शिखरों में शंकर निवास करते हैं। चाहे वह चम्बा का मणिमहेश हो या पालमपुर का बैजनाथ। मण्डी का भूतनाथ हो या कुल्लू का बिजली महादेव। चाहे निर्मण्डस्थ श्री खण्डेश्वर हो या किन्नर का कैलाश वासी वाणासुरेष्ट नर्मदेश्वर। चाहे अनहोल का महाशिव हो या हाटकोटी का अर्द्ध नारीश्वर-हाटेश्वर।

शिव के डमरु से ही 64 कलाओं का संकलन नन्दीकेश्वर ने किया था। जिन को जाने अनजाने में सभी जीव अपना कर, अपना-अपना जीवन-निर्वाह करते हैं।

मृतसञ्जीवनी विद्या में निष्णात शुक्राचार्य ने नन्दीश्वर से 64 कलाओं की शिक्षा ली और उनका लोकोपकार के लिए "नीतिसार'' नामक अपने ग्रन्थ में लक्षण कर के वर्णन किया।

"शक्तो मूकोऽपि यत्कर्तुं कलासंज्ञं तु तत्स्मृतम्।"

उसके बाद 64 कलाओं का नाम निर्देशन इस प्रकार से किया-

1. इतिहास, 2. आगम, 3. काव्य, 4. अलंकार, 5. नाटक, 6. गायकत्व, 7. कवित्व, 8. कामशास्त्र, 9. दुरोदर (द्यूत क्रीड़ा), 10 देश भाषा लिपिज्ञान, 11 लिपिकर्म, 12 वाचन, 13 गणक, 14 व्यवहार, 15 स्वर शास्त्र, 16 शाकुन, 17 सामुद्रिक, 18 रत्नशास्त्र, 19 गजाश्वरथ कौशल, 20 मल्लशास्त्र, 21 सूपकर्म (रसोई विज्ञान), 22 भूरुहदोहद (बागवानी), 23 गन्धवाद, 24 धातुवाद, 25 रससम्बन्धी खनिवाद, 26 बिलवाद, 27 अग्निस्तम्भन, 28 जलस्तम्भन, 29 वाचः स्तम्भन, 30 वयः स्तम्भन, 31 वशीकरण, 32 आकर्षण, 33 मोहन, 34 विद्वेषण, 35 उच्चाटन, 36 मारण, 37 कालवञ्चन, 38 परकाय प्रवेश, 39 पादुकासिद्धि, 40 वाक्सिद्धि, 41 गुटिकासिद्धि, 42 ऐन्द्रजालिक, 43 अञ्जन, 44 परदृष्टिवञ्चन, 45 स्वरवञ्चन, 46 मणिमन्त्र-औषधसिद्धि, 47 चोर कर्म, 48 चित्रक्रिया, 49 लोहक्रिया, 50 अश्मक्रिया, 51 मृतक्रिया, 52 दारूक्रिया, 53 नृत्यक्रिया, 54 वेणुक्रिया, 55 चर्मक्रिया, 56 अम्बरक्रिया, 57 अदृश्य करण, 58 दन्तिकरण, 59 मृगयाविधि, 60 वाणिज्य, 61 पाशुपाल्य, 62 कृषि, 63 आसव कर्म और, 64 लाव-कुक्कुट मेषादियुद्धकारक कौशल।

इन्हीं को "शिवतत्त्वरत्नाकर'' ग्रन्थ में भी स्वीकार किया है। जब कि वात्स्यायन के "कामसूत्र'' के टीकाकार "जयमङ्गल'' ने "कामशास्त्राङ्ग भूता'' एवं "तन्त्रावापौपयिकी'' नाम से दो प्रकार की कलाओं का वर्णन किया है। इन दोनों के अलग-अलग रूप में चौंसठ भेद किये हैं। जिन में "चित्राश्च योगाः'' नाम की कला भी स्वीकार की है। जिसका तात्पर्य है– जड़ी बूटियों के योग से विविध वस्तुयें तैयार करना या औषधियां तैयार करना या ऐसे मन्त्रों का प्रयोग करना, जिनसे शत्रु कमज़ोर हो या शत्रु की हानि हो तथा मित्र का बचाव हो सके। इसी कला के मन्त्रों, यन्त्रों, साधनों के संग्रह का नाम हिमाचल प्रदेश में "साञ्चा'' रखा गया है।

साञ्चा की व्युत्पत्ति और स्वरूप

चिञ् चयने धातु से पूर्व में, "सम्'' उपसर्ग लगाकर अच् प्रत्यय कर के

"संचय'' शब्द बनता है। जिसका अर्थ संग्रह करना होता है। संचय शब्द ही मुख सुख के भाषा विज्ञान सिद्धान्त से संकुचित होकर "साञ्चा'' बन गया। कुछ पहाड़ी ओझाओं की धारणा इस से विपरीत है। उनका कहना है कि "साञ्चा'' का अर्थ सच्ची खबर देने वाली विद्या से है। किन्तु "सा विद्या या विमुक्तये'' के आधार पर सच्ची विद्या मोक्ष देने वाली ही होती है बन्धन में डालने वाली कदापि नहीं। जबकि साञ्चा विद्या पग-पग पर बलि आदि कुकृत्य करवा कर व्यक्ति को कर्म बन्धन में फंसाती रहती है। सांचा में कहीं पर भी वेदान्तज्ञान एवं अध्यात्मोन्मुखी प्रवृत्ति नहीं पाई जाती बल्कि जादू-टोना, वशी करण, मारण, उच्चाटन आदि का ही बाहुल्य देखने को मिलता है। जिनसे "साञ्चा'' की परिभाषा ओझाओं डाउओं के कथनानुसार नहीं मानी जा सकती। अतः मेरे विचार से विभिन्न व्यक्तियों से अनेकों व्याधियों के तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र जहां इकट्ठे किये गये हों, उस संग्रह को साञ्चा संज्ञा दी जाती है क्योंकि अधिकतम साञ्चों में निम्न प्रकरण ही देखने को मिलते हैं :-

1. प्रश्न विचार

कोई व्यक्ति अगर किसी भी प्रकार की आधि-व्याधि से पीड़ित होकर उस के बारे में जानना चाहे कि यह आधि-व्याधि मुझे किस कारण से पैदा हुई है? तो उसका उत्तर डाऊ या ओझा, साञ्चे पर पाशा फैंक कर "अंकों'' को जोड़कर साञ्चे से उस जोड़ के आधार पर पढ़ देता है कि तुझे डाकनी-शाकनी, भूत-प्रेत, जादू-टोने, देव दोष या ग्रह के आधार पर यह बाधा उपस्थित हुई है। इसके लिये अब तुझे पूजा, पाठ, बलि या तन्त्रयुक्त यन्त्र को धारण करना पड़ेगा। दूसरा यमल शास्त्र का तरीका "अबद'' आदि अक्षरों के जोड़ का है। जिससे दोष लगाया जाता है। तीसरा तरीका होरा ज्ञान है, उससे भी दोष लगाया जाता है। इस प्रकार दोष लगाने के प्रकरण में :-

1. लग्नदोष, 2. राशि दोष, 3. ग्रह दोष, 4. वेलादोष आदि आते हैं। रमल प्रकरणगत :-

1. अङ्क प्रकरण, 2. अबजदी ब्रह्मावली प्रकरण, 3. कजपती प्रकरण, 4. वास्तुप्रकरण लाया गया है।

इस प्रकार प्रश्न प्रकरण में प्रयत्न किया गया है कि किसी-न-किसी तरीके से दोष की पुष्टि हो जाये और प्रश्न कर्ता उस का उपाय करने पर मजबूर हो जाये।

2. शकुन प्रकरण

इस प्रकरण में प्राकृतिक सूचना विपत्ति और सम्पत्ति आने से पूर्व ही हमें मिल जाती है। जैसा कि कालिदास ने "अभिज्ञान-शाकुन्तलम्" में लिखा है कि "प्रसाद चिह्नानि पुर: फलानि।" इसी आधार पर शकुन प्रकरण को रखा गया है और उसमें निम्न रूप से शकुन-अपशकुनों का विवेचन दिया गया है :-

1. अंग स्फुरण
2. काक का बोलना, विष्ठा करना, उड़ना आदि।
3. गृध्र, उल्लू आदि का बोलना व विष्ठादि।
4. सर्प की आवाज़, संगम, मार्ग काटना, विष्ठा आदि।
5. स्वप्न का वेलानुसार दीखना आदि।
6. मासों की वेला, वार वेला, मुहूर्त आदि।

3. उपचार प्रकरण

इस प्रकरण में आधिभौतिक, आधिदैविक, आध्यात्मिक आदि बाधाओं को घर में उपलब्ध साधनों से ही दूर करने का यत्न किया जाता है। जिससे साञ्चों का यह प्रकरण आयुर्वेद एवं तन्त्रों से सम्बन्ध रखने वाला है। इसमें सर्वप्रथम अजवायन, सरसों, छलीरा, मीर्च, छांवर, धूप, आग आदि का मिश्रण करके रुग्ण व्यक्ति को उद्वेजित कर के शाबर मन्त्रों द्वारा भूत-प्रेत, डाकिनी-शाकिनी आदि की बाधाओं को दूर किया जाता है। फिर मयूर पंख या झाड़ू से अथवा बणा या भेखल़ की डाली से झाड़ पोंछ की जाती है। जिससे अनेक प्रकार के आवेशों को दूर करने का दावा जतलाया जाता है। उस के बाद चन्दन, केसर, गोरोचन, कस्तूरी, कुमकुम, सिन्दूर और गुड़ का अष्टगन्ध बनाकर यन्त्र लिख कर गले में बान्ध दिया जाता है। यन्त्र को सिद्ध करने की विधियां गुरु मुख से ही सीखी जा सकती हैं। शाबर मन्त्रों का उपयोग भी सिद्धि और दीक्षा के बाद ही अभीष्ट है। ऐसे ही जो इन का उपयोग करता है वह हंसी का पात्र बनता है और उससे किसी का उपचार नहीं हो सकता। अंत:

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वर:।
गुरु: साक्षात्परं ब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नम:।।

की परम्परा को साञ्चों में भी पूर्णतया अधिमान दिया गया है।

साञ्चों की विविधता :-

हिमाचल 12 ज़िलों का प्रदेश है। इस लिये कम-से-कम 12 प्रकार के सांचे यहां उपलब्ध हो ही सकते हैं। परन्तु मैंने तीन ज़िलों में सांचों को देखने का भगीरथ

प्रयत्न किया। मण्डी और कुल्लू में मुझे लड़का समझ कर लोगों ने अपने घरों की इस अमूल्य धरोहर को दिखाने का दुःसाहस नहीं किया। एक बार तो एक बुजुर्ग के निःसन्तान होने पर उससे और उसके दत्तक पुत्र से, उसके घर में पड़े साञ्चे को लेने के लिये मैंने सैंकड़ों रुपये देने का भी आग्रह किया क्योंकि उस सांचे में अपनी बोली के शब्दों में सैंकड़ों उपयोगी बूटियों के नाम और काम लिखे थे। मैंने बूढ़े की गलती से एक बार उसके कुछ पन्ने पढ़ रखे थे। परन्तु बूढ़ा मरते समय अपने गोद लिये पुत्र से कह गया था कि "अगर तू इसे किसी को दिखायेगा, तो तुझे कोढ़ लग जायेगा। पुत्र अनपढ़ था, उसने उस सांचे को गौशाला में गढ़ा बनाकर दबा दिया और वह उपयोगी सांचा पृथिवी में समा गया। न जाने कितने सांचे इस प्रकार मूर्खों की मूर्खता के कारण काल की गाल में समा गये।

शिमला मण्डल की अनेकों तहसीलों में भी अलग-अलग सांचे सुने जाते हैं। जिन में से मैंने ठियोग तहसील के प्रसिद्ध तान्त्रिक-ग्राम भ्राणा में इस के छोटे-छोटे भागों को पढ़ा है। इस ग्राम में अब एक ही डाऊ विशेष रूप से जीवित है। जिसने सब लोगों के सांचे अपने पास जमा कर रखे हैं। वह है श्री भगतराम। वह इस लिये इन्हें नहीं दिखलाता कि कहीं उसकी रोज़ी रोटी बन्द न हो जाये। इसके अतिरिक्त पूरा सांचा, ग्राम-काठीनाली परगना-अणु, ठियोग के वासी श्री पद्मा के पास है। वह अलमारी खोलने के लिये भी बकरा मांगता है। जब कि इसे इस का एक अक्षर भी नहीं आता। इसके अलावा टिक्करी एवं बलग ग्राम के पाण्डों के पास भी सांचे पड़े हुये हैं। नाल ग्राम में देवी मन्दिर में भी एक सांचा पड़ा हुआ है जिसके लिये प्रसिद्धि है कि वह मनुष्य के खून की स्याही से लिखा हुआ है। उसको भी नाल के कुल में पैदा हुये पण्डित ही हाथ लगा सकते हैं अन्यत्र के लोग नहीं। कलार, बथोण, साम्बर, मातली, क्लीण्ड ग्रामों के पण्डितों के पास भी सांचे विद्यमान हैं, परन्तु सब जगह इन का नरोल रखा हुआ है। बठलौत, शड़ी, धरेच आदि देवठियों में भी सांचे हैं, परन्तु समस्त स्थानों में एक ही परिपाटी रखी गई है कि इन्हें हमारे कुल का ही बांच सकता है, अन्यत्र वासी नहीं। उनके कुल के लड़के अब इस पहाड़ी टांकरी को नहीं सीखते। जिस कारण इन सांचों का समझना बूझना समाप्त प्रायः है।

चौपाल के पौची ग्राम के ब्राह्मण भी सांचा विद्या के कर्णधार माने जाते हैं और उनका एक सांचा किसी सुबुद्ध विद्यार्थी की कृपा से साधु आश्रम होशियारपुर (पंजाब) के पुस्तकालय के हस्तलिखित मातृका विभाग में भी सुरक्षित रखा गया है। पौची में अभी भी लोगों के घरों में बड़े-बड़े आकार के सांचे पड़े हैं, जिन्हें अकादमी संगृहीत कर रही है।

जुब्बल तहसील में भी हाटकोटी के पुजारी श्री खुशीराम शर्मा, गेंस्टा ग्राम के वासी श्री जिया लाल शर्मा, हिंवण के श्री हरिनन्द शर्मा, डकैड़ के पण्डितों तथा राजपुरोहितों के पास सांचे विद्यमान हैं।

रोहडू उपमण्डल के अनेकों ग्रामों, दशोटियों एवं ब्राह्मणों के पास भी सांचे विद्यमान हैं। जिनमें से कुछ के नाम निम्न हैं :-

1. बटाड़ - श्री तुलसी राम शर्मा (रोहडू)
2. नौणा - श्री लछमनदास शर्मा (चड़गांव)
3. गुम्मा - श्री सेनराम शर्मा
4. टोड़सा - श्री ठाकुरलाल शर्मा
5. मसली - श्री परमानन्द शर्मा
6. पौली - श्री फुलाचन्द पुरोहित
7. खशकंड़ी - श्री राजा राम मास्टर
8. पारसा - श्री ईश्वर सिंह मास्टर
9. चिउणी - श्री जवाहर लाल आचार्य

इनके अतिरक्त और ग्रामों में भी इन सांचों की उपलब्धि हो सकती है। आवश्यकता सर्वे करने की है। मेरा सर्वे तो "ग्रामम् गच्छन तृणं स्पृशति" न्याय से हुआ है।

कुम्हारसेन तहसील के लाठी, पौची तथा कुम्हारसेन में भी सांचे विद्यमान हैं। रामपुर तहसील का यदि सर्वे हो तो वहां भी अनेकों सांचे मिल सकते हैं।

तहसील शिमला के कोटी रियासत में, जुनगा रियासत में अनेकों स्थानों पर सांचे देखे गये हैं। चनोग पंचायत के बरोग ग्राम के डॉ. सतीश कुमार आंगिरस के पास भी बुजुर्गी कुछ सांचे पड़े हुये हैं। महासु देवता के मूल स्थान अनहोल उत्तरकाशी में भी मैंने एक पण्डित के पास सांचा देखा है।

साञ्चा अध्ययन में समस्यायें

भाषा :-

सांचों का संग्रह करने में सर्वप्रथम समस्या भाषा और लिपि की आती है। विभिन्न स्थानों की भाषा (अनुलियां) अलग-अलग हैं और सांचे उन्होंने अपनी बोलियों में लिखे हैं। बहुत से सांचे पञ्जाबी और डोगरी भाषा से अनूदित होकर हिमाचल में पहुंचे हैं। उनकी भाषा विकृत हो गई है और समझने में दिक्कत आती

है। लिपिज्ञान भी विकृत हो गया है क्योंकि अनेकों सांचों का अवलोकन करने पर पता चला कि जिस पहाड़ी टांकरी में इन्हें लिखा है, उनमें कुछ अक्षर नये ही मिलते हैं। इसका कारण सांचे लिखने वालों की अल्पज्ञता ही कहा जा सकता है, क्योंकि वे न तो भाषा के ही ज्ञानी थे, न ही लिपि के विशेषज्ञ। अतः अक्षरों की बनावट लिखने वालों नें अपने ढंग से बनाई और पहाड़ी टांकरी का एक स्वरूप न रह सका। इस लिये आवश्यकता है इन सांचे धारियों के एक समूह बनाने की, ताकि वे अपने-अपने क्षेत्र के संकलित सांचों का शुद्ध देवनागरीकरण कर सकें।

दुराग्रह :-

अभी तक के अनुभवों से पता चलता है कि आनुवंशिक दुराग्रह सांचों के बारे में रहा है। जैसे यायावर जाति बरड़ अभी भी अपनी बोली किसी को बतलाने के लिये तैयार नहीं, इसी प्रकार सांचे धारी पौंगा पन्थी उन्हें दिखाने के लिये तैयार नहीं। स्वयं सांचों की भाषा, लिपि और विधान का उन्हें पता हो या न हो, परन्तु वे उसे सोने की ईंट बना कर बैठे हैं। जिससे सांचों का पूर्णरूपेण लोप होने जा रहा है।

उपेक्षा :- आज तक विद्वान् लोग इन सांचों को पोप विद्या कह कर इनकी उपेक्षा करते रहे हैं जिससे आनुवंशिक परम्परा भी लुप्त हो गई और वह दिन आ गया कि इन संग्रहों का रक्षण कैसे हो सकता है, यह चिन्ता बाधने लगी है।

अनुचित साधनों का अभाव

साञ्चों में जहां मानवोपयोगी साधनों का भाव या विद्यमानता है वहां इनमें सभ्य समाज में घृणित समझी जाने वाली सामग्री जैसे-मारण, उच्चाटन, वशीकरण आदि की भी विद्यमानता है। जिससे एक दोष भी गुणों के समूह को समाप्त कर देता है या एक मछली सारे तालाब को गन्दा कर देती है, के अनुसार सांचों का ह्रास हुआ है। अतः आवश्यकता है "सार-सार को गही रहे, थोथा देत उड़ाये" की।

साञ्चों की उत्पत्ति

पुरातात्त्विक-शोधों से यह भली भान्ति प्रमाणित हो चुका है कि विश्वभर के सभी देशों की सांस्कृतिक चेतना का मूल स्रोत "भारतीय अध्यात्म" ही रहा है। "एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति" "एकोऽहं बहु स्याम्" महावाक्यों के आधार पर एक ब्रह्म ही माया और अविद्या के द्वारा आच्छादित होकर ब्रह्मा, विष्णु और शिव रूप में परिणत होता है। तभी तो नेत्रतन्त्र के मंगलाचरण में "मृत्युञ्जय भट्टारक" ने कहा है-

त्रिधा तिसृष्ववस्थासु रूपमास्थाय शक्तिमान्।

उद्भव स्थितिसंहारान् कृत्स्नविश्वस्य शक्तित:।।

विधाता यो नमस्तस्मै शुद्धामृतमयात्मने।

शिवाय ब्रह्मविष्णवीशपराय परमात्मने।।

जब ब्रह्म के बाह्य रूप का अवबोध करना था तो इसी तन्त्र में पुन: प्रतिपादित किया है, कि-

एवं ममेच्छा ज्ञानाख्या क्रियाख्या शक्तिरुच्यते

इस प्रकार से ब्रह्म की शक्ति ज्ञान, क्रिया और इच्छा भेद से तीन प्रकार की बतलाई है। ज्ञान शक्ति को पुन: "ज्ञानं चेदं परापरभेदेन द्विविधिम्।'' परमवबोध रूपम्। अपरं च कामिकादि तन्त्ररूपम्। तथा इस की टीका में कहा है-

"ज्ञानं शिवं परं बोधपरं तन्त्र संज्ञितम्'' इति। इस प्रकार से पर-अपर भेद से ज्ञान को दो प्रकार का बतला कर शिव से समस्त शास्त्रों का बोध या प्रादुर्भाव बतलाया गया है:-

अनादिनिधनाच्छान्ताच्छिवात् परमकारणात्।

इच्छाशक्तिर्विनिष्क्रान्ता ततो ज्ञानं तत: क्रिया।।

तयोत्पन्नानि भूतानि भुवनानि चतुर्दश।

वाङ्मयं त्वैव यत्किञ्चित् तत्सर्वं मातृकोद्भवम्।।

क्योंकि शिवाम्नाय में शिव के पांच मुख माने गये हैं। "लौकिक वैदिक आध्यात्मिकातिमार्गिक मान्त्रिक भेदेन सदाशिवस्य प्रतिमुखं पञ्चविध भिन्नानि पञ्चविंशतिस्रोतांसि भवन्ति।''

अर्थात् लौकिक, वैदिक, आध्यात्मिक, आतिमार्गिक और मान्त्रिक ज्ञान स्रोतों को शिव भगवान् उन अपने पांच मुखों से निस्सृत करने के कारण, पचीस ज्ञान स्रोत बन जाते हैं। कामिक तन्त्र में इसी बात को स्पष्ट करते हुए कहा गया है-

लौकिकं वैदिकं चैव तथाध्यात्मिकमेव च।

अतिमार्गं च मन्त्राख्यं तन्त्रभेदमनेकधा।।

सद्यो वाममहाघोर पुरुषेशानमूर्तय:।

प्रत्येकं पञ्चवक्त्रा: स्युस्तैरूक्तं लौकिकादिकम्।।

इस प्रकार शिव के सद्योजात, वामदेव, अघोर पुरुष, ईशान नामक मुखों का वर्णन किया गया। इन मुखों से ही सब तन्त्रों का विनिर्गम हुआ है। जैसा कामिक तन्त्र में कहा है-

तथैव मन्त्र तन्त्राख्यं सदाशिवमुखोद्गतम्।
सिद्धान्तं गारुड़ं वामं भूततन्त्रं च भैरवम्।।
ऊर्ध्व-पूर्व-कुवेराप्य याम्यवक्त्राद यथा क्रमम्।

अर्थात् शिव के ऊर्ध्व मुख अर्धांश से सिद्धान्त, पूर्वमुख से गारूड़ी शास्त्र, उत्तर दिशा वाले मुख से वाम शास्त्र, पश्चिम वाले मुख से भूततन्त्र एवं दक्षिण वाले मुख से भैरव तन्त्र निकला। इस प्रक्रिया से सर्वप्रथम तन्त्र पांच प्रकार के बने और उनके संग्रह किये गये। शंकराचार्य जी ने सैंकड़ों तन्त्र संग्रहों के उदाहरण अपने भाष्यों में दिये हैं। जिन सब तंन्त्र वाक्यों का संग्रह मं.मं. डॉ. गोपीनाथ शर्मा जी ने अपने "लुप्तागम संग्रह'' ग्रन्थ में किया है। जिससे यह ज्ञात होता है कि आद्य शंकराचार्य ने इन तान्त्रिक ग्रन्थों को आज के सांचों की तरह इधर-उधर जाकर पढ़ा और उनके विकृत भाग को दूर करने का भरसक प्रयत्न किया। परन्तु जन मानस में उनके प्रति घृणा होने से उन की समाप्ति ही हो गई। इस के बाद काश्मीर के महापण्डित अभिनवगुप्त ने तन्त्रालोक टीका में सैंकड़ों तन्त्रकारों के वाक्य संगृहीत किये हैं जिससे पता चलता है कि शंकराचार्य के बाद भी पहाड़ी प्रदेशों में इन तन्त्र ग्रन्थों का प्रभाव रह चुका था और नवीं शताब्दी तक भी वे पूर्णरूपेण हिमालय में विकसित थे। 14वीं शताब्दी में सायण माधव ने "मन्त्र महोदधि'' का संग्रह कर के यह सूचना दी है कि तब तक पहाड़ी प्रदेशों में भी इन संग्रहों का लोप होता जा रहा था। 14वीं शताब्दी के "मन्त्र महार्णव'' का संग्रह भी यही सूचना देता है कि साञ्चों का ह्रास होता जा रहा था और अनेकों नुक्ते खत्म होते जा रहे थे और दक्षिण के पण्डित माध्व सायण ने वेदों के भाष्य करण के साथ-साथ तन्त्रों का भी संग्रह (सांचे) बनाये और रक्षा की। वे मन्त्र महार्णव में कहते हैं–

दृष्ट्वा तन्त्राणि अनेकानि माधवाख्येन धीमता।१।१।३।
वक्ष्यते कलिसिद्धोऽयं ग्रन्थो मन्त्र महार्णवः।।
सर्वतन्त्रैक मुकुटं सर्वसारमयं ध्रुवम्।१।१।४।
वक्ष्यामि परमप्रीत्या रहस्यं सर्वमन्त्रिणाम्।।
नामूलं लिख्यते किञ्चिदिह विज्ञेयमादरात्।१।१।५।
नैवात्र संशयः कार्यो नानाभेद विधानके।।१।१।६।
तन्त्रान्तरेष्वनेकानि विधानानि मुनिश्वरैः।
उक्तान्यनेकदेवानां प्रसिद्धानि च सन्ति वै।।१।१।७।
देशदेशाच्च तेषां वै संग्रहः क्रियते मया।
साधकानां हितार्थाय श्री दुर्गायाः प्रसादतः।।१।१।८।

इसी ग्रन्थ में तन्त्रों की संज्ञा या संख्या बतलाते हुये वे कहते हैं, कि:-

सिद्धीश्वरं महातन्त्रं कालीतन्त्रं कुलार्णवम्।
ज्ञानार्णवं नीलतन्त्रं फेत्कारी तन्त्रमुत्तमम्।।१।१।१३।
देव्यागमं चोत्तराख्यं श्रीक्रमं सिद्धियामलम्।
मत्स्यसूक्तं सिद्धिसारं सिद्धिसारस्वतं तथा।।१।१।१४।
वाराहीतन्त्रं देवेशी योगिनी तन्त्रमुत्तमम्।
गणेश मर्षिणीतन्त्रं नित्यतन्त्रं शिवागमम्।।१।१।१५
चामुण्डाख्यं महेशानि मुण्डमालाख्यतन्त्रकम्।
कुलप्रकाशं देवि कल्पं गान्धर्वकं शिवे।।१।१।१६
क्रियासारं निबन्धाख्यं स्वतन्त्रं तन्त्रमुच्यते।
सम्मोहनं तन्त्रराजं ललिताख्यं तथाशिवे।।१।१।१७
राधाख्यं मालिनी तन्त्रं रुद्रयामलमुत्तमम्।
बृहच्च श्रीक्रमं तन्त्रं कवाक्षं कुसुमादिनि।।१।१।१८
विशुद्धेश्वर तन्त्रं च मालिनी विजयं तथा।
समयाचार तन्त्रं भैरवीतन्त्रमुत्तमम्।।१।१।१९
योगिनीहृदयतन्त्रं भैरवं परमेश्वरि।
सनत्कुमारकं तन्त्रं योनितन्त्रं प्रकीर्तितम्।।१।१।२०
तन्त्रांतरं च देवेशि नवरत्नेश्वरं तथा।
कुलचूड़ामणिं तन्त्रं भावचूड़ामणीयकम्।।१।१।२१
तन्त्रदेवप्रकाशं च कामाख्या नामकं तथा।
कामधेनुं कुमारीं च भूतडामर संज्ञकम्।।१।१।२२
नलिनीविजयं तन्त्रं यामलं ब्रह्मयामलम्।
विश्वासारं महातन्त्रं महाकुल कुलान्तनम्।।१।१।२३
कुलोड्डीशं कुब्जकाख्यं यन्त्रचिन्तामणीयकम्।
एतानि तन्त्ररत्नानि सफलानि युगे-युगे।।१।१।२४

ये पूर्वोक्त 60 तन्त्र सम्प्रदाय हैं जिन्हें ब्राह्मसम्प्रदाय, वैष्णव सम्प्रदाय और शिवसम्प्रदाय रूप से 20-20 विभागों में विभक्त किया जा सकता है। क्योंकि शिव के पञ्चवक्त्रों से निकले तन्त्रों को ब्रह्मा, विष्णु, भैरव तथा इनकी शक्तियों सरस्वती, लक्ष्मी और काली ने ग्रहण किया, जिस कारण तन्त्रों के साठ भेद हो गये।

वर्तमान समय में हिमाचल प्रदेश में समुपलब्ध सांचों की स्थिति भी इसी आधार भूमि पर कभी प्रचलित हुई थी। क्योंकि मैंने पौची चौपाल के एक सांचे में

मंगलाचरण देखा तो ॐ कुमार पतये नमः। मण्डी के मजडवार ग्राम वासी शेर सिंह तथा भूपराम, तह० थुनाग, डा० चिड़णि वालों के पास जो सांचे हैं, उनके मंगलाचरण में ॐ शिवा पतये नमः'' लिखा गया है। हाटकोटी जुब्बलसांचे में "ऊँ सीता रामपतये नमः'' लिखा है। भ्राणा ठियोग के सांचों में भी "गुरुचरणेभ्यो नमः, शिवाय नमः'' से आरम्भ किया गया है।

"मङ्गलादीनि, मङ्लमध्यानि, मङ्गलान्तानि शास्त्राणि प्रथन्ते, वीर पुरुषकाणि च भवन्ति'' इस महाभाष्य के सिद्धान्तानुसार हिमाचली सांचों में मंगलाचरण किये गये हैं, जिनसे सांचों के ब्राह्मी, वैष्णवी, शैवी होने का तो पता लगता ही है साथ में यह भी पता लग जाता है कि यह सांचा गणपति के तन्त्र से सम्बन्धित है, कुमार के तन्त्र से सम्बन्धित है, शिव तन्त्र से सम्बन्धित है, कालीतन्त्र से सम्बन्धित है, सनत्कुमार, कुब्जा, योगिनी, भैरव आदि किस देवता की तान्त्रिक परम्परा से सम्बन्धित है।

परम्परा-विशेष सिद्धि मार्ग की प्रदर्शिका होगी और उसमें विशेष देवता आराध्य होगा। उस देवता की कृपा से अन्य देवताओं का तन्त्र,मन्त्र,यन्त्र भी फलीभूत हो जायेगा। किन्तु मारणोच्चाटन आदि आभिचारिक क्रियाओं में ऐसा सम्भव नहीं है। उसमें प्रत्येक आभिचारिकी के लिये अलग-अलग डाकिनी, शाकिनी, भूत, बेताल आदि का साधन अपेक्षित है, जो बकरा, मुर्गा, बिल्ली, घुघु आदि की बलि लेकर साधक का नरकगामी काम किया करता है।

गोरक्ष सिद्धान्त संग्रहकार के अनुसार तन्त्रों का विभाजन, देशानुक्रम से किया जाता है। जैसे-वैष्णव तन्त्र, जो कर्मप्रधान है, दक्षिण भारत में प्रचलित हुआ। पूर्व देश में संन्यास प्रधान शिवतंत्र की या भैरव तन्त्र की उत्पत्ति हुई। पश्चिम देश में शाक्त तन्त्र की स्थापना की गई और उत्तरभारत में अवधूत तन्त्र के रूप में ये अवतरित हुये। कुछ लोग इसी मत को कापालिक संज्ञा भी देते हैं। शवर तन्त्र में 12 कापालिकों एवं उनके शिष्यों को निम्नरूपेण दर्शाया है-

आदि नाथो ह्यनादिश्च कालश्चैवातिकालकः।
करालो विकरालश्च महाकालश्च सप्तमः।
कालभैरव नाथश्च बटुकस्तदनन्तरम्।
भूतनाथो वीरनाथः श्री कण्ठो द्वादशो मतः।
एते कापालिकाः प्रोक्ता वीरतुम्बीमहाफलैः।
शिष्याणां सूर्यसंख्या च तानिह वच्मि संशृणु।।
नागार्जुनो जड़भरतो हरिश्चन्द्रस्तृतीयकः।

सत्यनाथो भीमनाथो गोरक्षश्चर्पटस्तथा:।।

अवद्यश्चैव वैराग्यः कन्थाधारी जलन्धरः।

मार्ग प्रवर्तका ह्येते तद्वच्च मलयार्जुनः।।

इन चौबीस आचार्यों द्वारा तन्त्र शास्त्र का विस्तार हुआ जो बाद में तन्त्रालोक आदि ग्रन्थों में आचार्यों ने अभिव्यक्त किया। इन तन्त्रों की उत्तरोत्तर श्रेष्ठता फलाभिप्राप्ति के आधार पर बढ़ती गई। जैसा कि षट् शाम्भव रहस्य में प्रतिपादित किया है-

अथान्यत्संप्रवक्ष्यामि सम्प्रदायस्वरूपकम्।

आदितो वैदिकः प्रोक्तस्ततो हि वैष्णवः परः।।

ततो गाणपतः प्रोक्तः क्रमेण हि मया तव।

गाणपत्यं च द्विविधं ततः सौरं प्रकीर्तितम्।।

सौराच्छ्रेष्ठम् शैवशास्त्रं शैवाच्छाक्तं महेश्वरि।

शाक्ताद्वामं महादेवि ! श्रेष्ठं ते परिकीर्तितम्।

वामात्तु दक्षिणं श्रेष्ठं दक्षिणाद्वीर एव तु।

अथ वीराच्चावधूतः कौलः पूर्वं प्रकीर्तिः।।

अवधूताछिव्यमार्गो दिव्याच्छ्रेष्ठो न विद्यते।१।१४०-१४४

हिमाचल के मध्यवर्ती विभाग में जहां न तो भोटी का प्रभाव हो पाया, न ही खरोष्ठी से उत्पन्न पंजाबी भाषा की लिपि गुरुमुखी का ही पूर्ण असर हो पाया। वहां पर काश्मीर के गिलगित से लेकर उत्तरकाशी जनपद उत्तर प्रदेश के इलाके तक पहाड़ी टांकरी लिपि का बोलबाला रहा है, जिसमें अज्ञानता के कारण इलाके के भेद से, रियासत के भेद से, अनूली के भेद से फर्क आता गया। सांचों की बोली भी डोगरी से कुछ मेल खाती है। देखिये।

कुम्हारसेन सांचा-

पदं-पदं-पदं चैव (111)। यह संस्कृत वाक्य प्रश्न का है।

उत्तर है- पुत्रफलधन सिद्धः। राज का प्रसाद मिले। भूमिलाभ होये। मन इच्छा पूरी होगी। मन चिन्ता काम होगा।

शिलारु बठलौत

पदं-पदं-पदं चैव (111)। पाशा प्रश्न है।

उत्तर- स जू हे पतिता तव धन गमन भवेह से आ। महाराज चिन्ता भवे। भाद्रे मासे सुफल दृश्यते। पंच पाप जल चैवा। परिमातृ दोष भी कर। सही वचन सीजे।

पराली (सरोग)

प्रश्न- (111) पदं-पंद-पदं चैव = पाशे पर आया।

उत्तर- मंगल पतीतं तौवा गोत्र हत्या होई। तेस की पूजा करण सोघर गंभार समागते। अथा लाभ सुफल होला, गृह माता रे घरे पूजा ते हत्या करे, सोकण कोल पुष्टी करे, पुत वे कार्य सिध होला, तबे जाणे ग्यान सचा।

इसी तरह प्रश्न प्रकरण में, प्रश्न के उत्तर में अधिक सांचों में लिखा है- 'ये ही पुच्छण हारिया-जे तेरा कारज़ पूरा होवे। हे पृच्छका डंकणी दोष लगा है। वल पूजा करणी तत आनन्द होगा।

ऐसे ही आठों दिशाओं में कौवा बोलने का विचार करते हुये लिखा है :-

"अथ कागाष्ट दिशा शब्द कहे तिस का विचार महादेव कुन्ता सम्वादे-प्रथम प्रहरे पूर्वमुख रमते कागा कोई प्राहुणा आवे। प्रथम प्रहरे अग्नय काग बोले तो धन लक्ष्मी मिले आदि।

इसी प्रकार से चन्देलों के राजवंश का वर्णन करते हुये कहा गया है :-

"ॐ श्री चन्देली चान्दले चन्द ओड़ध ओड़ घर शमो दे पार। एती चन्देल बधे अजी नी खड़ग लई तलवार। ब्रह्मेते लकल गाये आ पुरी भाय। मस्त तेरा जे जन्मिया, जिनिखड़ग पकड़ी तरोआर'' आदि।

इसी तरह मन्त्र प्रकरण में डोगरी और पञ्जाबी की गन्ध देखने को मिलती है, जैसे-

श्री हनुमान बारह वर्ष का जवान, सोने दा पंखा, रुपये दा कड़ा, जित्थे देखूं हनुमान ओघा खड़ा। भूत को टाल, प्रेत को टाल, मड़ी मशानी जो हटा, औरां दी चौकी उठांदा जा, अपनी चौकी जमान्दा जा, अस्सी भैरौं, नब्बे नारसिंघ, बावन पहाड़िये हमारी अंग्या से बाहर जायें, तां माता अञ्जनी दा दूध हराम चले। फुरे मन्त्र महादेव तेरी वाचा चले, उत्थों टले तां लूणा चमारी दी कून विच गलें।''

इस प्रकार हिमाचल प्रदेश की सांचा विद्या पर काश्मीरी तन्त्र का सम्पूर्ण प्रभाव मेरे विचार से पड़ा है और गुरु गोरखनाथ के नाथ पन्थ या अघोर अवधूत पन्थ द्वारा इस का इस राज्य में विस्तार हुआ। इस विद्या को जीवित रखने के लिये हि.प्र. अकादमी ने जो सामूहिक कदम उठाया है, वह प्रशंसनीय है।

❑

साञ्चा विद्या : एक अद्भुत परम्परा

डॉ० बंशीराम शर्मा

काश्मीर क्षेत्र शैवधर्म की प्रमुख शाखा, जिसे 'काश्मीर शैव दर्शन' कहा जाता है, के लिये प्रसिद्ध है। इस शाखा की अद्भुत विशेषता यह थी कि इसके आचार्य शिष्यों का कुण्डली जागरण शक्तिपात से करते थे। शक्तिपात दीक्षा पात्र शिष्यों के जीवन को बदल देती थी और वे प्रारम्भिक उपासना के सोपानों को लांघकर बिना प्रयत्न तथा साक्षी भाव से चक्र भेदन आरम्भ करने में सक्षम हो जाते थे। कतिपय आचार्य अपने योगबल से शिष्य में सिद्धत्व स्थिति लाने में सफल हो जाते थे और इस प्रकार यह महायोग पुष्पित पल्लवित होता रहा। आचार्य शम्भुनाथ, जिनका काल नवम दशम शताब्दी माना जाता है, हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा ज़िला के निवासी बताए जाते हैं। ये जालन्धरपीठ, जिसका मुख्य स्थान वज्रेश्वरी मन्दिर कांगड़ा था, के मुख्य मठाधीश थे। इनके शिष्य परिवार में अनेक निष्णात आचार्य रहे। अभिनव गुप्त तथा अन्य आचार्यों ने शैवदर्शन के मूल्यवान ग्रन्थ प्रदान किए हैं। शैव दर्शन परम्परा का इतिहास स्वयं में स्वतन्त्र विषय है और उस पर बात करना प्रस्तुत लेख का प्रयोजन नहीं है फिर भी इस परम्परा का प्रचार-प्रसार मात्र आचार्यों तथा उनके शिष्यों तक ही रहा हो, ऐसा नहीं है। किसी भी क्षेत्र में निवास करने वाला सिद्ध पुरुष लोगों के आकर्षण तथा आदर का पात्र होता है। शैवदर्शन के आचार्य संस्कृत में महान् पण्डित होते थे और उन्होंने समग्र दर्शन ग्रन्थ संस्कृत में ही लिखे। इसका कारण जहां उन दिनों संस्कृत का प्रचार-प्रसार हो सकता है वहां अपने अलौकिक अनुभवों को वैज्ञानिक भाषा में सटीक ढंग से प्रस्तुत करना भी रहा होगा। ये ग्रन्थ जिनमें स्पन्दकारिका, प्रत्यभिज्ञा दर्शन आदि गहन व गुह्य विषय विवेचित हैं, सामान्य जन की समझ से परे थे और आज भी उनकी व्याख्या सभी के लिए सुलभ नहीं

है। संस्कृत वाङ्मय का संरक्षण पण्डितों ने जिस ढंग से किया है, उसका उदाहरण विश्व में अन्यत्र दुर्लभ है। उन्होंने उसकी व्याख्या की तथा उस पर अपने ज्ञान व विद्वत्ता की छाप अंकित की।

काश्मीर तथा हिमाचल प्रदेश के भाग भौगोलिक दृष्टि से भी उत्तर-पश्चिमी हिमालय के अन्तर्गत आते हैं। यहां प्राचीन काल से ही ज्ञान-विज्ञान का सामंजस्य तथा आदान-प्रदान प्रचलित रहा है। कांगड़ा (त्रिगर्त) के अनेक भाग तो काश्मीर के शासकों द्वारा जीते गए और द्विगर्त (डुग्गर) प्रदेश को कई बार त्रिगर्त के शासकों ने अपने अधीन किया। यही नहीं, शिमला तथा गढ़वाल क्षेत्र भी कांगड़ा के शासकों द्वारा विजित हुए। ब्रह्मपुर को प्राचीन भरमौर कहा जाता है परन्तु गढ़वाल में भी ब्रह्मपुर है और वहां के शासक एक समय में चम्बा तक के शासक थे, ऐसा इतिहास के अध्ययन से आभास मिलता है। गढ़वाल राज्य के शासकों की उपलब्ध वंशावली में अजयपाल, विजय पाल, लोकपाल, हरदेव, राम देव, वीरभान, सूर्य भान, सूरतसिंह, महासिंह, गोकुल नाथ, गोपीनाथ, सदानन्द, प्रेमानन्द, जगत नारायण, आनन्द नारायण आदि से संकेत मिलता है कि समय-समय पर नामों में अन्तिम अंश का परिवर्तन जय-पराजय तथा सांस्कृतिक प्रभावों के प्रतीक हैं। यही बात अन्य क्षेत्रों के शासकों के नामों से भी प्रकट होती है कि ऐतिहासिक घटनाओं से नामों में परिवर्तन होते रहे तथा आक्रान्ताओं से बचने के लिए लोग एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा कर बसते रहे। इतिहास में कुछ बातें पूर्णतः अंकित नहीं हैं परन्तु लोक प्रचलित मन्त्रों में भी इतिहास सुरक्षित है। सांप के मन्त्र में अजय पाल के पुत्र व पोते और वीरों का वर्णन प्राय : उत्तर पश्चिमी भारत में प्रचलित है। गुरु गोरखनाथ की शिष्य परम्परा से सम्बन्धित मन्त्र उनके शिष्यों के सम्बन्ध में ऐतिहासिक जानकारी देते हैं। साञ्चा विद्या तन्त्र विद्या है। वास्तव में प्राचीन काल में 'साञ्चा' तन्त्र का पर्यायवाची था। सामान्य व्यक्ति भी सांचा फैंक कर भविष्यवाणी करता हुआ आज भी देखा जा सकता है। मैच आरम्भ करने से पूर्व अब भी सिक्के अथवा अन्य प्रकार से प्रथम तथा द्वितीय टीम के खेल का निर्धारण किया जाता है। हार जीत के लिए सिक्के के दो पहलू निर्णायक होते हैं। ज्योतिष विद्या में प्रश्नोत्तर तथा साञ्चा जिसे रमल ज्योतिष कहा जाता है, काश्मीर की देन माने जाते हैं।

साञ्चा ज्योतिषी यह बताते हैं कि ऐतिहासिक रूप से सिरमौर रियासत के राजा को नटनी को रस्सा काट कर मार डालने के पाप से मुक्त नहीं किया जा सका और राजवंश अभिशप्त हो गया। रायमोण तथा रायगोपाल दो वज़ीर काश्मीर के राजवंश के पास इस उद्देश्य से गए कि वहां से किसी युवराज को सिरमौर की राजगद्दी पर आसीन किया जाए। राजा ने युवराज के बजाय अपनी गर्भवती छोटी

रानी को ही शय्यादान के रूप में ऋषि, चारण तथा भाट के साथ सिरमौर भेजा। यह भाट पण्डित ही बाद में पाबुच अर्थात् 'पवित्र' के रूप में प्रसिद्ध हुआ। सम्भवतः ऐसा उसके आचार-व्यवहार, नैतिक कर्मकाण्ड और तान्त्रिक उपलब्धियों के फलस्वरूप हुआ। खड़कांह के पण्डितों के पास उपलब्ध साञ्चे में लिखा गया है कि "लोय आणा मंगतु पुरोहित साथ लोय आणा राय भाट लोय आणा, विक्रमी सम्वत् साल थी तोदी 1152 म्हीना माघ। इससे स्पष्ट होता है कि सम्वत् 1152 वि० अर्थात् सन् 1095 ई० के पश्चात् का इतिहास सुरक्षित है और सिरमौर तथा शिमला के क्षेत्रों में निवास करने वाले पण्डित, जिनका सम्बन्ध सांचा विद्या से है, मूलतः काश्मीरी पण्डित हैं जिन्होंने कालान्तर में इन ज्योतिष ग्रन्थों को स्थानीय भाषा में बदलकर जनोपयोगी बनाया। प्रश्न उठता है कि दशम शताब्दी से पूर्व क्या इस क्षेत्र में तन्त्र का कोई अन्य स्वरूप विद्यमान था ? यदि नहीं तो मण्योटी गांव में उपलब्ध साञ्चा पाण्डवों के एक भाई सहदेव का साञ्चा क्यों कहा जाता है ? इसके अतिरिक्त अन्य प्रश्न भी महत्वपूर्ण हैं, वे हैं कि पाबुची, पण्डवाणी, चन्दवाणी व भटाक्षरी आदि लिपियों की आवश्यकता एक ही वर्ग के पण्डितों द्वारा क्यों विकसित की गई और इन लिपियों पर किन प्राचीन लिपियों का प्रभाव है ? आदि, आदि।

काश्मीर में शारदा लिपि का प्रचार-प्रसार लगभग दशम शताब्दी में रहा। शारदा का सम्बन्ध टाकरी लिपि से रहा। टाकरी की अनेक विधाएं विभिन्न शासकों द्वारा अपनायी गईं और उसका एक रूप गुरमुखी लिपि के रूप में विकसित हुआ। कुछ क्षेत्रों में टाकरी सरकारी काम-काज में प्रयुक्त होती रही और जम्मू काश्मीर के महाराजा रणवीर सिंह द्वारा उसका स्वरूप-निर्धारण के लिए प्रयत्न किए गए। मण्डी-सुकेत, चम्बा, बिलासपुर, सिरमौर, कुल्लू तथा अन्य पहाड़ी रियासतों में इस लिपि में परिवर्तन परिवर्द्धन किए गए और यही कारण है कि टाकरी के अनेक रूप इस क्षेत्र में उपलब्ध हैं। टाकरी को 'गणमत' नाम से भी जाना जाता था। लहन्दा लिपि के रूप में इसका विकास वर्तमान पंजाबी के समीप है। वर्तमान समय में जिन चार लिपियों में साञ्चा ग्रन्थ (पाण्डुलिपियां) उपलब्ध हैं, उन में से कोई भी टाकरी से नितान्त भिन्न नहीं है परन्तु लिपि विज्ञान के क्षेत्र में उनका अत्यधिक महत्त्व है। इस पर अलग से शोध की आवश्यकता है।

साञ्चा पाण्डुलिपियां हज़ारों की संख्या में शिमला, सिरमौर तथा जौनसार बाबर (उत्तर प्रदेश) के पण्डितों के पास सुरक्षित हैं और उनकी ओर किसी शोधकर्ता का ध्यान शायद ही गया हो। इनमें स्थानीय परम्पराओं, पाबुच, चन्दाण, भाट तथा पण्डवाण वर्ग के ब्राह्मणों के वंशों तथा विद्या का पूरा ज्ञान अंकित है। लोक महाभारत, लोक रामायण, ज्योतिषि, गणना पद्धति का सही इतिहास इस क्षेत्र में विद्वानों की

बाट जोड़ रहा है। रहस्य-विज्ञान की अद्भुत धरोहर हिमालय के इसी क्षेत्र में सुरक्षित मिल सकती है। गढ़वाली ज्योतिषी जो ज्योतिष तथा तन्त्र की प्राचीनतम शाखाओं से सम्बद्ध हैं, अपने कार्यक्षेत्र में ख्याति प्राप्त हैं। सांचा पद्धति में प्रकाशित ज्योतिष ग्रन्थों के ज्योतिष-सिद्धान्तों से कहीं अधिक सूक्ष्मता व गहराई है।

साञ्चा विद्या ने जहां पहाड़ी भाषा के प्राचीनतम स्वरूपों को सुरक्षित रखा है, वहां तन्त्र, योग, भक्ति, धर्म और ज्योतिष का दुर्लभ भण्डार संजो कर वर्तमान मानवजाति पर बड़ा उपकार किया है। हिमालय क्षेत्र के विद्वानों का ध्यान इस अमूल्य धरोहर की ओर अग्रसर हो। इतिहास व संस्कृति के पुष्ट तन्तुओं का उपयोग ज्ञान पिपासा को शान्त करने तथा सुरक्षा प्रदान करने के लिए किया जाए, साञ्चा पाण्डुलिपियों की पूजा से अधिक इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है।

❑

साञ्चा परम्परा–एक परिचय

सी०आर०बी० ललित

हमारा सम्पूर्ण प्राचीन वाङ्मय श्रुति और स्मृति के आधार पर सुरक्षित रहा है, जिसे कालांतर में लिपिबद्ध किया गया। वैदिक एवं पौराणिक साहित्य को लिपिबद्ध करने का अधिकांश कार्य गुप्त काल में हुआ, जिसे हम भारतीय इतिहास का स्वर्ण काल भी कहते हैं। उससे पूर्व भी इस क्षेत्र में छुट-पुट प्रयास होते रहे हैं। इतिहास साक्षी है कि चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन काल में भी कौटिल्य द्वारा "अर्थ-शास्त्र'' नामक शोधग्रंथ लिपिबद्ध प्रस्तुत किया गया था। भले ही आज अधिक प्राचीन पाण्डु-लिपियां उपलब्ध नहीं हैं, परन्तु हम वैदिक देव ब्रह्मा को अपना आदि लेखक और महर्षि बाल्मीकि को आदि कवि मानते हैं। आशु-लेखन की परम्परा को हम अपने प्रथम आशुलिपिक गणेश से सम्बद्ध करते हैं, जिनकी श्रुतिलेखन में प्रवीणता से महर्षि व्यास स्वयं आश्चर्य-चकित रह गए थे। पौराणिक देवी सरस्वती को हम लेखन व चित्रांकन समेत समस्त ललित कलाओं की अधिष्ठात्री देवी मानते हैं और यदि हम यह मान कर चलते हैं कि वैदिक पौराणिक युग में आर्यों की सभ्यता सप्त सैंधव क्षेत्र की पर्वत उपत्यकाओं तक सीमित थी तो स्कंद पुराण में सरस्वती को वाणी अथवा गिरा कहने का आशय सारस्वत सभ्यता के विकास से जुड़े 'गिरा'' अथवा आधुनिक गिरिगंगा क्षेत्र को चिह्नित करना ही रहा होगा जो सरस्वती के सम्बन्ध में खोज करने वाले विद्वानों को अरब सागर तट से सिरमौर के गिरिगंगा क्षेत्र तक ले आया है। यहां यह कहना समीचीन होगा कि गिरी नदी यानी गिरिगंगा का शिमला के चौपाल, ठियोग, कोटखाई व जुब्बल क्षेत्र में स्थानीय लोगों द्वारा लिया जाने वाला नाम "गिरा'' अथवा सरस्वती ही है जो सिरमौर में बदलकर "गिरी'' अर्थात् गिरने के अर्थ में हो गया है। यह परिवर्तन मात्र मुखसुख भेद के कारण ही हुआ है और बाद में कुछ क्षेपक जोड़ कर इसे आज गिरीगंगा बना दिया गया है और कुछ लोग पहाड़ की गंगा के अर्थ में मात्राओं को बदलकर 'गिरिगंगा'' भी लिखने

लगे हैं। सभी पवित्र जल-धाराओं के साथ गंगा जोड़कर उन्हें सम्मान प्रदान करना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं है। गिरा यानी सरस्वती, जो वैदिक काल में चूड़धार क्षेत्र में राजगढ़ के पझौता व पच्छाद क्षेत्रों को चीर कर अरब सागर में जा मिलती थी, पौराणिक काल में नाहन के पास से सिंधुवन को बींध कर कुरुक्षेत्र के पास से गुज़रती हुई प्रयाग में गंगा जी से गले मिलने लगी और ऐतिहासिक युग में प्राचीन सिरमौर की राजधानी सिरमौर को ध्वस्त करती रामपुरघाट में यमुना से जा मिली। यही सरस्वती हिमालय के इसी भूखण्ड में वेदों, पुराणों के स्रष्टा ऋषियों को सान्निध्य प्रदान कर सभ्यताओं और लिपियों के प्रवाह को प्रशस्त करती रही है।

आज उपलब्ध प्राचीनतम अभिलेख हमें मौर्यकाल के अन्तर्गत उत्कीर्ण किए गए अशोक महान के शिलालेखों से प्राप्त होते हैं जिन्हें देश के विभिन्न क्षेत्रों में ब्राह्मी एवं खरोष्ठी लिपियों में लिखा गया है। इन शिलालेखों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि लेखन कार्य में इस युग तक आते-आते हमारे विद्वान प्रवीणता प्राप्त कर चुके थे। ये शिलालेख भाषा एवं लिपि के उत्कृष्ट उदाहरण हैं, और लेखन परम्परा को इस स्थिति तक पहुँचते-पहुँचते अवश्य ही सहस्रों वर्ष लग गये होंगे। अत: यह धारणा कि वैदिक एवं पौराणिक काल में निर्बाध गति से आर्ष साहित्य लेखन की परम्परा इस देश में रही है, सत्य प्रतीत होती है। अशोक महान की अनेकानेक उपलब्धियों में से एक यह भी रही है कि उन्होंने प्रस्तर स्तम्भों एवं शिलाखंडों पर अपने राज्यादेश उत्कीर्ण करवाए। इससे पूर्व जो लिखा भी गया वह भोज-पत्रों एवं ताम्रपत्रों पर अंकित किए जाने के कारण समय के प्रवाह के साथ कालकवलित होता गया और हमारे युग तक मात्र भीमबेटका के अस्पष्ट चित्र, जो लिपि संकेत भी हो सकते हैं, मोहनजोदाड़ों की मचिका मुद्राओं पर अंकित लिपिनुमा चित्र और अशोक महान और उनके अधोवर्ती सम्राटों के शिलालेख से पाए हैं मात्र विप्रावा और वली में ईसा पूर्व पांचवीं शताब्दी के कुछ स्तूप-लेख मिले हैं किंतु जैन समवायांग सूत्र तथा ललित विस्तार में ब्राह्मी के अतिरिक्त बहुत सी अन्य लिपियों का वर्णन उनके अस्तित्व को तो उजागर करता ही है भले ही उनके स्वरूप का ज्ञान हमें नहीं हो पाता।

भारतवासियों के कागज़ बनाने की कला में पारंगत होने का प्रमाण हमें सिकंदर महान के साथ संवत् 327 (विक्रम-पूर्व) यानी ईसापूर्व 432 वें वर्ष में आए निआर्कस के वृत्तांत से मिल जाता है जिन्होंने इस देश में रुई को कूट कर लिखने के लिए कागज़ बनाए जाने की पुष्टि की है जबकि चीन में पहले पहल कागज़ बनाने की शुरूआत सन् 105 ईसवी में हुई मानी जाती है। अशोक के दो महत्वपूर्ण अभिलेख भूतपूर्व सिरमौर रियासत (अब हिमाचल प्रदेश) में कालसी का विशाल शिलालेख व टोपरा का अशोकस्तंभ जिसे फिरोज़शाह तुगलक (1351-88 ईसवी) उखाड़ कर यमुना नदी में नावों पर बहाकर दिल्ली ले गया था, प्राप्त हुआ है। दोनों की लिपि ब्राह्मी है। कालसी का शिलालेख ऐसा एक मात्र

शिलालेख है जिसके उत्तरी मुख पर गजतमे उत्कीर्ण है जो सम्राट अशोक के इस देवधरा के प्रति आत्मीय सम्मान का द्योतक है। अशोक महान के अन्य शिलालेख सहसराम, बैराट (राजस्थान), दतिया (मध्य प्रदेश), मास्की, ब्रह्मगिरी, सिद्धपुर, जटिंग रामेश्वर, एर्रगुडी, गोविमठ-पालकिगुण्डु राजुल मुंडगिरि, अहरौरा (उत्तर प्रदेश), बराबर (बिहार) नागार्जुनी गुहा, मेरठ, लौरिया अरराज-लौरिया नन्दनगढ़, रामपुरवा, प्रयाग, सांची, सारनाथ, कौशम्बी, रूम्मिन देई निगली सागर, गिरनार, कालसी, धौली (उड़ीसा) जौगड़ सोपरा तथा एर्रगुडी (शिला) में ब्राह्मी लिपि में शाहबाज गढ़ी तथा मानसेहरा में खरोष्ठी लिपि में तथा तक्षशिला कन्धार तथा पुले दारून्त (लमगान) में अरेमाई लिपि में प्राप्त हुए हैं। खरोष्ठी व अरेमाई लिपि के अभिलेख वर्तमान भारत वर्ष की उत्तर-पश्चिमी सीमा के बाहर हैं।

शिव पुराण के एक आख्यान के अनुसार एक बार ब्रह्मा और विष्णु में इस बात पर तकरार हो रही थी कि उन दोनों में बड़ा कौन है। दोनों अपने पक्ष में तर्क दे ही रहे थे कि वहाँ एक इतना विशाल शिवलिंग प्रकट हुआ जिसका कोई ओर-छोर न था। इस शिवलिंग के भीतर से भगवान शंकर ने आकाशवाणी की कि दोनों में से जो सृष्टि के अंतिम छोर तक जाकर पूर्ण वृत्तांत आकर सुनाएगा उसे ही बड़ा देव मान लिया जाएगा। ब्रह्मा सृष्टि के ऊपरी छोर की ओर और विष्णु निचले छोर की ओर चल पड़े। ब्रह्मा पर्वत शिखरों के समीप पहुँचे तो उन्हें आभास हुआ कि इससे ऊपर सृष्टि का विस्तार असंभव है। साक्षी के रूप में वे भोजपत्र वृक्ष, केतकी पुष्प एवं सुरागाय (जिसे चुरू कहते हैं) को लेकर वापस भगवान शिव के पास आ गए और उनसे वृत्तांत सुनाया कि वे सृष्टि के अंतिम छोर तक हो आए हैं। साक्ष्य में ऊपरलिखित तीनों से भी पुष्टि हुई तो भगवान शंकर ने उन्हें शाप दे डाला। फलस्वरूप ब्रह्मा पूजन की आहुतियों से वंचित हुए, भोजपत्र को खाल उधेड़े जाने का, केतकी पुष्प को पूजा में न चढ़ाए जाने का और सुरा गाय को उसके दूध पीने वालों द्वारा ही उसके मांस भक्षण का शाप मिला। जब वे सब गिड़गिड़ाए तो ब्रह्मा के एकमात्र तीर्थ पुष्कर को तीर्थराज कहलाने भोजपत्र की खाल को ब्रह्मा के हाथों वेदों के ग्रंथों के लेखन में प्रयुक्त होने, केतकी पुष्प को शिवलिंग के अतिरिक्त अन्य सभी देवों के पूजन में सर्वश्रेष्ठ पुष्पांजलि बनाने और सुरागाय की पूंछ, जो साक्ष्य देते समय इनकार में हिल रही थी, का देवताओं के भी शीर्ष पर झूलने का वरदान भोले बाबा शंकर ने तत्काल दे डाला। विष्णु, ब्रह्मा के बाद लौटे किन्तु उन्होंने कबूल किया कि वे जहाँ तक जा सकते थे, गए, किन्तु सृष्टि का विस्तार उसके भी परे तक था। उन्हें शंकर ने तीनों देवों में श्रेष्ठ होने का वरदान दिया। तभी से ब्रह्मा भोजपत्र की खाल उधेड़ कर उस पर वेदों के लेखन में जुट गए, जो हमारी सृष्टि के आदिग्रंथ कहलाए। सांचा ग्रन्थ भी प्राचीन काल में भोजपत्र पर ही लिखे जाते रहे हैं और इनके मंत्र आज भी भोजपत्र पर अंकित कर ही तत्काल प्रभाव दिखाते हैं। इन्हें "भुजड़ी" कहा जाता है।

ब्रह्मा के पुत्र कश्यप ऋषि ने कश्यप मेरू अर्थात् कश्मीर, जिसका तात्कालिक विस्तार वर्तमान हिमाचल तक था, की घाटियों में तपस्या की। कश्यप ऋषि के पुत्र ऋषि मारीच की यज्ञशाला आज भी सतलुज नदी घाटी में देव मरीचक मंदिर के रूप में अवस्थित है जहाँ उस समय सम्भवत: उनका आश्रम रहा होगा। ऋषि मारीच के पुत्र मार्तण्ड (सूर्य) को किरण क्षेत्र (उत्तर प्रदेश) के वर्तमान जौनसार चौपाल के किरण क्षेत्र, रोहडु, जुब्बल के पब्बरपार क्षेत्र तथा सिरमौर के शिलाई क्षेत्र का स्वामी माना जाता है। यह किरण क्षेत्र सूर्यसुता यमुना एवं तमसा नदियों का उद्गम क्षेत्र है जो प्राचीन सिरमौर रियासत का भाग रहा है और आज भी हिमाचल तथा इसकी दक्षिणी सीमा पर स्थित है। हमारी सृष्टि को कश्यप सृष्टि ही माना जाता है। सूर्य पुत्र वैवस्वत मनु, जिनका आश्रम तमसा के तट पर मनेवटी में माना जाता है, ने अपने कुल के मानवों के लिए प्रथम धर्म संहिता का निर्माण भी इसी क्षेत्र में किया जो भले ही आज के परिप्रेक्ष्य में अप्रासंगिक हो गयी है, वह भी इस लिए कि बाद की शताब्दियों में व्यवसाय पर आधारित वर्ण-व्यवस्था को स्वार्थी पौंगापंथियों ने अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए सुविधापूर्ण जीवन सुनिश्चित करने के लालच में कर्म पर आधारित इस वैज्ञानिक व्यवस्था को जन्म पर आधारित कर इसके स्वरूप को पूर्णत: विकृत कर इसे लोकतांत्रिक आर्य समाज के लिए प्रतिकूल बना दिया और कर्मप्रधान लोकतंत्रीय प्रणाली को ब्राह्मणवाद एवं राजतंत्रीय प्रणाली के प्रचालन से जन साधारण के शोषण का ज़रिया बना दिया।

सूर्य के ही दूसरे पुत्र यम ने आर्य को अपने ही परिवार में यौन सम्बन्ध स्थापित करने एवं विवाह करने की परम्परा से मुक्त कराया जब उन्होंने अपनी बहन यमी के विवाह प्रस्ताव को अस्वीकार कर उससे अपने हाथ में राखी बंधवाकर सुरक्षा एवं स्नेह का आश्वासन दिया। इन्हीं यम द्वारा विवाह मुहूर्त के सम्बन्ध में एक सिद्धांत का प्रतिपादन भी किया गया, जिसे सांचा विद्यामें "जमदाड़ा'' अथवा यम मुखोद्धृत सिद्धांत माना गया है। इसका समावेश, मात्र चूड़धार-गिरिगंगा क्षेत्रों के सांचा ग्रन्थों में ही पाया गया है, देश के अन्य भागों में प्रचलित ज्योतिष ग्रन्थों में नहीं।

सांचा ग्रन्थ संचयन से ही प्रादुर्भूत हुआ है और स्थानीय विद्वानों के पास मात्र एक सांचा उपलब्ध रहता है, जिसमें रमल विद्या के अनुसार फलादेश निकालने के लिए एक अथवा तीन अंकों वाले कोष्ठक आते हैं। ज्योतिष ज्ञान का संचयन होता है और कुछ आवश्यक तंत्र-मंत्र-यंत्र जोड़ दिया गया होता है; जिसका सामान्य भूत पिशाच अथवा रोक-टोक निवारण में बल प्रयोग किया जाता है। वास्तव में सांचा ग्रन्थ के तीन प्रकार हैं, जो बड़े-बंड़े गुरुकुलों में उपलब्ध रहे हैं, जिनमें चूड़धार क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले खड़काहां, भटेवड़ी, मनयोटी, सिद्धयोटी, खादर गुम्मा (रोहडू) आदि प्रमुख हैं, ये प्रकार निम्न हैं:-

उगताई का सांचा :— इस सांचा में विभिन्न खगोलीय पिंडों, ग्रहों के परिक्रमा-पथों को आधार मानकर पंचांग (जंत्री अथवा स्थानीय भाषा में चिरी) के निर्माण की प्रक्रिया से सम्बद्ध ज्ञान का संचय रहता है, जो मात्र सैद्धान्तिक होता है। इस उगताई के सांचा के अन्तर्गत मूल नक्षत्र का निर्धारण करने के लिए विभिन्न गणितीय सूत्रों का समावेश किया गया है किन्तु इसके अतिरिक्त हज़ारों वर्षों की तपस्या एवं अनुभव के आधार पर कुछ अन्य गुप्त संकेत भी रहते हैं जिन्हें मूल नक्षत्र यंत्र अथवा "मुलादु" तैयार करते समय प्रयोग में लाया जाता है। ये गुह्य संकेत मात्र गुरु-शिष्य परम्परा के आधार पर ही आज तक प्रचलन में हैं और गुरु भी इन्हें मात्र अपने प्रधान शिष्य को ही बताते हैं। मूल नक्षत्र की सही वेला के अंक का निर्धारणं हो जाने के पश्चात् कोई भी गणितज्ञ विद्वान पूरे वर्ष का पंचांग तैयार कर सकता है।

2. फलित ज्योतिष सांचा:—आम तौर पर फलित ज्योतिष एवं जंत्र-मंत्र का प्रयोग करने वाले स्थानीय ब्राह्मणों के पास मात्र यही सांचा उपलब्ध रहता है। इसमें निहित रमल विद्या के ऋषि विश्रमा पुत्र लंकाधीश रावण भी एक प्रकाण्ड विद्वान् थे। रमल विद्या के आधार पर "पाशा" फैंककर प्रश्न करने वाले की जिज्ञासा शांत की जाती है तथा उससे मार्ग निर्देशन अनुसार दोष निवारण की विधि बताई जाती है, यज्ञानुष्ठान अथवा क्लेश, भूतप्रेत बाधा, छाया छिद्रा जोगिणी आदि उपद्रव शांत करने के उपाय कराए जाते हैं। सांचा में 3 अथवा 4 प्रकार के कोष्ठकों के आधार पर विभिन्न मुहूर्तों जैसे वास्तु, विवाह, जन्म, गृह प्रवेश, व्यापार एवं कृषि कार्यारम्भ, नाल छेदन, जातकर्म, चूड़ाकर्म, देवपूजन, विदेश गमन, विद्यारम्भ, देव-भूत-प्रेत बाधाओं के उपाय दर्शाये गए होते हैं। चन्द तंत्रों एवं यंत्रों का उल्लेख भी रहता है जिन्हें तात्कालिक तौर पर प्रयोग में लाया जा सकता है। ये तंत्र-मंत्र-यंत्र स्वतः सिद्ध होते हैं और उनके उच्चारण/लेखन मात्र से ही समस्या का समाधान होता है।

3. भारथा का सांचा:—भारथा (वार्ता) अथवा पुराण के सांचा में विभिन्न पौराणिक आख्यानों का संचयन रहता है, जैसे "शिवत्रेउड" यानी शिव पुराण, "राम त्रेउड" यानी रामायण, "कानड़ू" यानी कृष्ण लीला, "पाण्डवायण" यानी महाभारत, आदि-आदि। इस सांचा को मात्र वर्ष में एक बार पारायण हेतु कोठरी से बाहर निकाला जाता है। इस अवसर पर पाबुच ब्राह्मण जो निरामिष भोजी हैं इसका पूजन करते हैं और भाट तथा पाण्डे (ब्राह्मण) जो आमिष भोजी हैं इसे बकरी या बकरे की बली चढ़ाते हैं।

4. तंत्र-मंत्र-यंत्र का सांचा:—यह सांचा अत्यन्त गोपनीय विद्या है, जिसे गुरुकुल में भी मात्र एक ही परिवार द्वारा सम्भाल कर रखा जाता है और परिवार में बंटवारे की स्थिति में इसका अधिकारी मात्र बड़ा भाई होता है। इसमें ऐसे स्वतः सिद्ध परम गुप्त यंत्र-मंत्र-तंत्र संकलित रहते हैं, जिनकी शक्ति अत्यन्त प्रचण्ड होती है और अनधिकारी

ब्राह्मण भी इसका अवलोकन नहीं कर सकते। कुछ तंत्र तो ऐसे भी हैं जिनके प्रयोग हेतु गाँव की सीमा के बाहर गुप्त स्थलों का निर्माण किया जाता है। आमतौर पर सुरक्षित ढंकार में बनी गुफाओं से उनका संचालन किया जाता है। सांचा ग्रंथ ताम्र पत्रों, भोजपत्रों अथवा हस्त निर्मित कागज़ों पर हस्त लिपिबद्ध ग्रन्थ होते हैं। इनके लेखन के लिए "बान वृक्ष" की जड़ के पास बने खोखर से पुरानी सड़ी लगड़ी निकाल कर मसि अथवा स्याही बनाई जाती है। तवे की कालख में कुछ स्थानीय सामग्री मिलाकर भी मसि का निर्माण किया जाता है। यह मसि काली होती है। लाल मसि के लिए शिंगरफ को घिस कर घोल तैयार किया जाता है। सांचा के बाहर काकड़ (बार्किंग डीयर) की खाल की जिल्द लगाई जाती है, जिसे दुहरा फोल्ड कर बाहर से लाल कपड़ा लपेट कर दुहरे कते सूत के छींके में रखा जाता है। ब्राह्मण इस छींके को जब बगल में लटका कर चलता है, तो इसका आकार एक बड़ी रक्तिम बूंद की मानिंद हो जाता है। बूंद को पहाड़ी भाषा में 'चुड़का' कहा जाता है अतः लोकगीतों में कहीं-कहीं इसे चुड़कू सांचा कहकर भी सम्बोधित किया जाता है।

पाशा : सांचा की अंक विद्या के मर्म को जानने के लिए एक 'पाशे' अथवा पासे का प्रयोग किया जाता है। सबसे पवित्र पाशा श्वेत गरुड़ पक्षी की हड्डी का होता है। मारण, उच्चाटन के लिए उल्लूक की हड्डी का पाशा उत्तम माना जाता है। हाथी दांत, काकड़ या साही की हड्डी तथा गीदड़सिंगी के पाशे का प्रयोग भी किया जाता है। पाशा आम तौर पर 4.5 से 5.00 सेंटीमीटर लम्बा अस्थिखण्ड होता है, जो चौड़ाई में 0.7 से 1.00 सेंटीमीटर तक होता है। चारों ओर सुन्दर ढंग से बिन्दु के बाहर वृत्त उत्कीर्ण कर 1 से 3 की संख्या अंकित की जाती है। एक को दाव या प्रदाँ, दो को दुआ या द्विकाँ, तीन को त्रेक या त्रिकाँ, चार को सऊक या चतुकाँ कहते हैं। प्रत्येक सांचा के भीतर प्रत्येक कोष्ठक में 3 अंक दर्शाए जाते हैं और इन्हीं को आधार मानकर होर या पाशा फेंक कर प्रश्नवाचक अपने यजमान के मंतव्य का ज्ञान प्राप्त कर लेता है और उसका निदान भी बताता है।

लिपि:—सांचा ग्रन्थ की लिपि ब्राह्मी लिपि के स्वरूप परिवर्तन के कारण शारदा के पश्चात् वर्तमान स्वरूप तक पहुँची है। भारत की अन्य लिपियां भी इस क्रम में विकसित हुई हैं। हिमाचल प्रदेश में राजकाज आदि हेतु टाकरी, व्यापार कार्य हेतु लाहण्डा तथा ब्रह्म कर्म हेतु भट्टाक्षरी का विकास हुआ। भट्टाक्षरी स्थानीय नाम भेद के कारण पाबुची, चन्दवाणी, भीउंचाणी तथा पण्डवाणी उपलिपियों में परिवर्तित हो गई। भ्यूचाण अथवा विस्वान कुल के ब्राह्मण सूर्य ज्योतिष को आधार मान कर्म-काण्ड करते हैं और चन्दवाणी के विद्वान चन्द्र ज्योतिष को आधार मानकर। ये दो हिमाचल प्रदेश के प्राचीन गुरुकुल हैं। पण्डवाणी गुरुकुल का मुख्य केन्द्र क्रमशः बलग (ठियोग) तथा मणेवटी और पाबुची का मूल गुरुकुल चानणा (चौपाल) में रहा है। भूतभूर्व थरोच रियासत घूंड, रतेश आदि के क्षेत्र में इसी कुल के ब्राह्मणों ने अनेकों बस्तियां बसाई। चान्दणा से ही कालांतर में खड़काहां (सिरमौर)

में भी पाबुच गुरुकुल की सबसे बड़ी आबादी अस्तित्व में आई। पाबुच यानि पवित्र, वे कश्मीरी ब्राह्मण हैं जो राजस्थान में कश्मीर राजवंश की कन्या के विवाह के फलस्वरूप ज्योतिषकार्य में अपना भाग्य आज़माने वहां चले गए और स्थानीय ब्राह्मणों की देखादेखी निरामिषभोजी होकर अपने को पवित्र कहने लगे क्योंकि कश्मीर के सभी अन्य ब्राह्मण तो भौगोलिक स्थिति एवं अत्यधिक शीतल जल-वायु के कारण आमिषभोजी ही रहे हैं। बाद में सिरमौर में भाटी राजवंश की स्थापना के फलस्वरूप उनके पुरोहित के तौर पर इस वंश के पंथ नामक ऋषि सम्वत् 1152 विक्रमी (सन् 1095 ईसवी) में कुशलवाड़ा (शायद वर्तमान कुशलगढ़) जो हस्त-लिखित ग्रंथ के आधार पर उस समय जैसलमेर रियासत के अन्तर्गत आता था, सिरमौर में आ बसे। सिरमौर की रियासत का विस्तार तब पूर्व में गंगा तक, उत्तर में नोगढ़ी (रामपुर बुशहर) तक था। कालका, यमुनानगर, अम्बाला, देहरादून, सहारनपुर आदि क्षेत्र तो मुगलकाल के आखिरी दिनों तक सिरमौर रियासत के अंतर्गत रहे हैं। ये पाबुच कालांतर में चानणा व झीना (वर्तमान तहसील चौपाल, जिला शिमला) में भी आकर बस गए। झीना के कंवर के यज्ञ में दो पाबुच ब्राह्मण नरपत व पूरण भी ब्रह्म कर्म हेतु आमंत्रित थे। उनके भोजन में भात की थाली में दबाकर मांस के टुकड़े डाल दिए गए। बड़े भाई नरपत ने पहला ग्रास खाया तो इस बात का पता चल गया और उसने अपने छोटे भ्राता पूरण को थाली में परोसा अन्न ग्रहण करने से मना किया। अतः बड़ा भाई भोटू (मांसाहारी) हो गया और छोटा पाबुच बना रहा। लेखक स्वयं पौड़िया (चौपाल) के आमिषभोजी यानि भोटू वंश का सदस्य है। पंथ ऋषि की प्रारम्भिक वंशावली निम्न प्रकार है:—

1. काश्मीर से जैसलमेर को प्रयाण —— पाणू पंडित
2. कुशलवाड़ा राजस्थान से सिरमौर —— पंथ ऋषि (सम्वत 1152 विक्रमी)

चान्दणा (चौपाल) के ब्राह्मण | नधेता (सिरमौर) के ब्राह्मण रामभोण व राम गोपाल

नरपत भोटू ग्राम भोट (आमिषभोजी) | पूरण पाबुच ग्राम चानणा (निरामिषभोजी)

पौड़िया (चौपाल) सी. आर. बी. ललित | खड़काहां (सिरमौर) पं० देवी राम आदि

भोटू ब्राह्मणों की बस्तियां भोट-झीना, पोड़िया, चफलाहां, हरणाहां, कोटी

(चौपाल), नमाणा (घूंड) ज़िला शिमला, खड़काहां (सिरमौर) तथा फेड़ज (जिला देहरादून) में व पाबुचों की चान्दणा (चौपाल) घुरौत, जुबलोग बागनल, डिमिच तिलूरब उन्हीं के उपवंश भरोउटों की कटोरी तथा चौपाल में स्थापित हुई। इन्हीं पाबुचों के गुरुकुल में चौपाल व सिरमौर के खदराई तथा अनेकों अन्य ब्राह्मणों ने विद्यार्जन किया किन्तु पाबुच आज भी बड़े भाई के वंशज भोटू ब्राह्मणों को गुरु का दर्जा प्रदान करते हैं।

इस कुल का विस्तृत विवरण इसलिए आवश्यक जान पड़ा कि खड़काहां ग्राम में इनके पास अब प्रकाश में आयी सबसे प्राचीन 509 वर्ष पुरानी पांडुलिपियाँ सुरक्षित हैं। इसमें प्रमुख हैं रामदिया का सांचा जिसे संवत् 1666 मास चैत्र गते 12 (शुक्रवार) को पुष्य नक्षत्र की 27 घड़ियों के मुहूर्त में पूर्णमासी के दिन पूरा किया गया था। 449 वर्ष पूर्व विक्रमी सम्वत् 1603 में कार्तिक प्रविष्टे 20 (चन्द्रवार) को अनुराधा नक्षत्र की 60 घड़ी वाले मुहूर्त में नवमी तिथि को पूर्ण हुआ। सूरदास सुपुत्र छणी द्वारा लिखित तथा 447 वर्ष पूर्व माघ मास गते 12 (चन्द्रवार) को अश्लेषा नक्षत्र में शुक्ल अष्टमी के दिन ही सूरदास पुत्र छणी द्वारा उगताई (पंचांग) का सांचा भी इसी खड़काहां ग्राम में सुरक्षित है। नरपत (भोटू) व पूरण (पाबुच) द्वारा लिखित सांचे की एक प्रति कुमारसैन, ज़िला शिमला से प्राप्त हुई है जिससे इस वंश के सतलुज घाटी में प्रसार का प्रमाण मिलता है। सांचा विद्या चौपाल और सिरमौर के इलावा बुशहर, करसोग, कुल्लू तथा उत्तर प्रदेश के जौनसार बाबर, उत्तरकाशी, गढ़वाल और कुमाऊं क्षेत्रों में भी आज तक प्रचलन में है। इनके अतिरिक्त मनेवटी (किरण-चौपाल) में सहदेव पांडव का ताम्रपत्र पर अंकित परम गुप्त सांचा और यहीं पर आसू पाडे का, बज्रोठ (चौपाल) में पंडित देवी राम का, बरोट (हाटकोटी) में पंडित शंकर का और सरांहा मंदिर चौपाल में फेड़िया का सांचा उल्लेखनीय है।

विक्खवानी तथा चन्दवानी लिपियों के गुरुकुल स्थानीय पहाड़ी ब्राह्मणों की श्रेणी में माने जाते हैं, जिन्हें पहाड़ी में भाट या भट्ट कहा जाता है और इनकी बस्तियाँ हिमाचल प्रदेश और उत्तर प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्रों, जिनमें गढ़वाल व कुमाऊं सम्मिलित हैं, में पाई जाती हैं। यह साधारणतः आमिषभोजी हैं। पाबुची लिपि के विद्वान पाबुच (पवित्र) ब्राह्मण कहलाते हैं। पंडवाणी सांचा विद्या के विद्वान अपने आपको पाण्डु पुत्र सहदेव का वंशज मानते हैं और पाबुची विद्या के विद्वान अपने आपको कश्मीर के पाणु पंडित के उत्तराधिकारी कहते हैं।

सांचा परम्परा की प्राचीनता:—स्थानीय परम्परा के अनुसार सांचा विद्या का प्रचार रामायण काल में भी रहा है। जब दशरथ के संतान नहीं हो रही थी तो उन्होंने अपने मंत्री-संतरी को आदेश दिया कि वे तीर्थों के द्वार पर जाएँ और विद्वान ब्राह्मणों को बुलाएँ। ब्राह्मणों ने सांचा के माध्यम से गणित विद्या का प्रयोग किया।

गौणो खोज़ो बामणी ज़ी सांचे रै हयाओ
कियों विदिए कियों विदिए मेरे अंश वंश रह जाओ

सांचा हेड़ा बामणै खोलणा लाए
बेद हेड़ा बामणै विचारणा लाए
सांचा खोली बामणौं विद्या बोली कल्याण
तांदो लागो जसरता जनैती को पाप
राजा बोलो जसरतौ मनौ के हियाऔ
कियौं बिधीं कियौं मेरो अंशवंश रह्याऔ

अर्थात् दशरथ पूछते हैं विप्रवर, आप सांचा ग्रंथ के माध्यम से गणित की खोज कर बतलाएं कि किस विधि से मेरा अंशवंश कायम रह सकेगा? ब्राह्मण ने सांचा ग्रंथ खोल वेद का विचार किया और कहा कि दशरथ राजा तुम्हें तो जनेती का पाप लगा है उसका निवारण हो जाए तो संतान अवश्य होगी।

इस प्रकार कृष्ण लीला में भी सांचा ग्रंथों का वर्णन निम्न प्रकार दर्शाया गया है:–

गोकुलरो ज़बै रै पंडता नगरी काछौ उदे छाड़े और सांचटे पाए
सौदा माता तबे पुछौ ले पंडता देवतैफै केथु तुऐं
रौए औ गोकुलो खै आए

माइचौ रा तैरा देवतिऐ पुरोहितौ राशि इथा रौआ खोजदा आए। अर्थात् पंडित गोकुल नगरी के लिए बगल में सांचा ग्रंथ को लटका कर चल पड़ा। यशोदा माता पूछती है कि हे ब्राह्मण देवता आप गोकुल में क्यों पधारे हैं। विप्रबसु ने फिर यशोदा माता को अपना मन्तव्य वखान किया कि, मैं तुम्हारे मायके का ब्राह्मण (तुम्हारे पुत्र की) राशि खोजने आया हूँ।

शिरगुल देवता–चूड़ेश्वर शिरगुल के पिता भूखड़ू जो राजगढ़ (सिरमौर) क्षेत्र के शाया नामक क्षेत्र पर राज करते थे, भी संतान न होने की स्थिति में कश्मीर के पाणू पण्डित के पास गए और पण्डिंत ने उन्हें परामर्श दिया कि वे एक ब्राह्मण बालिका से विवाह रचाएंगे तो उनके संतान अवश्य होगी।

गणौ खोज़ो पाणु बामणौ गौणौं सांचै रे ताऔ
गर्भै हंदा तेरी राणी रे बालकौ चावलौ रै देऊ दाणटै हांऔ
आखरी छाड़ौ पाणु चावलौ रे हाथो रे पड़े चावलौ रे जोरे
गौणौ खोजौ पाणु पंडतौ पाशै री बोलौ ली होरो

अर्थात्–पाणू पंडित ने सांचा ग्रंथ के सहारे गणित के साक्ष्य से कहा कि हे राजन! तुम्हारी रानी के गर्भ में बालक ठहर जाएगा, मैं तुम्हें चावल के दाने देता हूँ। मेरे हाथ में इतना बल है कि चावल के दानों के माध्यम से ही मनेच्छा पूर्ण हो जाएगी ऐसा मेरे पासे की होरें बतलाती हैं।

सांचा का स्वरूप क्या है? इसमें किन-किन पद्धतियों, मंत्रों-तंत्रों और यंत्रों का संचयन है, इस विषय पर क्षेत्र से बाहर के विद्वानों को भनक तक नहीं लगने दी गई है क्योंकि इस परम गुप्त विद्या को इसके विद्वान मात्र अपने गुरुकुल से सम्बंधित विद्वानों एवं विद्यार्थियों के अतिरिक्त किसी बाहरी व्यक्ति से सांझा नहीं करते हैं। प्रत्येक विद्यार्थी के हाथ में उसके गुरु द्वारा हस्त लिखित ग्रंथ होता है और गुरु के सान्निध्य में ही वह ग्रंथ की एक प्रति अपने हाथ से लिखकर दीक्षा प्राप्त कर वेद, ज्योतिष यंत्र, मंत्र व तंत्र का अधिकारी बन जाता है। इस प्रति में मात्र फलित ज्योतिष व अन्य आवश्यक विधि विधान होते हैं। मंत्र व यंत्र श्रुति, स्मृति परम्परा के आधार पर ही पीढ़ी-दर-पीढ़ी सिखाए जाते रहे हैं ताकि वे किसी अनधिकारी द्वारा प्रयोग में न लाए जा सकें। प्रमुख यंत्रों के पत्रे भी सांचे से अलग ही रखे जाते हैं, किंतु कुछ का समावेश सांचा में भी रहता है परन्तु जब तक उनके लिखने के माध्यम यानी, कागज़, भोजपत्र, धातु अथवा चमड़े व स्याही, बान, केसर, गोरोचन अथवा रक्त और कलम, बांस, तुलसी, काथी अथवा अस्थि का ज्ञान न हो जो लिखित ग्रंथों में उपलब्ध नहीं रहता तब तक ये अपना प्रभाव नहीं दर्शा सकते। पंडित देवी राम पाबुच खड़काहां सिरमौर के देवनागरी में हस्तलिखित सांचे के आधार पर सांचे के स्वरूप के विषय में कतिपय जानकारी निम्न प्रकार है।

सांचे की ज़िल्द पर इष्ट देव-देवी का आह्वान कर पाशे की तीन होरें दी जाती हैं, उन्हीं के आधार पर व्याख्या की जाती है ! किसी मामले में एक होर से और किसी में तीनों होरों का योगफल निकालकर जो अंक बनें, उसके आधार पर व्याख्या की जाती है।

1. (333) (111) से (444)

त्रिकां-त्रिकां-त्रिकां तु चैबो : सरगुणी पति ता तबं समा प्रति यती कलपणी समा प्रति मुक्ति तंत्र पर जायत तत्र गृह देक्षिण सिधि संफल भवे खंती सिध्यति पूजये तू शकरों देवा थान क्रति विपत दुहि आसन वर्जति यति निसफल भवे पुत्र चतु दुश्यति तथाई।

2. (111) से (444) तक

(124) (8) प्रदां द्विका चतुकां-तु चैवो : गुह छिद्र डंकणी दुख आप छाया दुख: (1) से (4)

3. (4) चतुकाँ-तु चैवो : सेतु उच जाती डंकणी पीड़ा धन क्षय अर्थ धन क्षय अर्थ नाश तत्र श्रिये भवी खंती: इति: एक पाष्टी होर पूरी

4. (1) से (4)

प्रथम पहिरे: चण्डी देवी का दुख है देही शांवली आख काणी समफला हाथ फलो खादि दुष्टा भई एक पाप भी होला

5. (1) से (64)

(3) ये काज पऐ नारी न सिझे सिंग दोपर छाना न रहे सीग उत्तम पुरुष है ये काज भला ना देखे चिंत 2 आयो उत्तर दिशा का दो वृक्ष लंगदो है सि काली वास्तु आणी थी पछिम दिशा पाणी ते डरायों तेरों दांवें अंगे चिनु वसो होला: ये जो काज मन सिद्ध होवे जी सिंह राहू मर धन मित्र उत्तम पुरुष मिलना तव सिझला संग किरिया सिकाज सिझे एषु काज त्रला न देखु सि पूजा मांग दो सि शत्रु हारे उत्तर दिशा काटो वृक्ष सि तेरे घर पछिम दिशा पाणी सि ताही दूर पूजा मांगदो सि तेरे पराओचिनु सि तो जाणी ज्ञान सचो सि:

6. (1) से (20)

(5) पांडु देवता साचो बुलांदा सि जो तेरे मन भागरे होला पर तेरा भाग बड़ा सि मन चिंता कार्ज होली सि कार्ज करी संतोष होला सि काज करी बड़ा दु:ख सि तंधुरे देव की चिंता करिया सि पूजा करी लाभ होला सि:

7. (1) से (12)

(4) चौसठ जोगणी यो बुलंदी है कि तेरी देही में आगम कांत्री लगी है कि छिद्र पूजा देणी तवे भवी शुभ होला मसाण की दृष्टा लगी पूजा करि सुख होला ताते श्रियो भवि संति:

8. (1) से (12)

(6) कन्या लगने ईचों संखणी दुख बाह्मणी शखणी नमी भवी पीड़ा सर्वोदर ईचों पति बंधु, पूजा कर पर कृत्वा सम परावती सत वचन किरिया प्रभाते पूजि ततो श्रियो भवी संती :

9. (1) से (12)

(6) कन्या लगने अर्थमान रिषी पूछे कि खतरी होला भये पुन वाल वसत काज किया रुत मान सुख उपजे:

10. (1) से (12)

(8) बिछ राशि करते पाप पहिले जन्में चकवा-चकुरी होवे: दुजे जन्मे ब्रह्मण होवे: तीजे जन्मे कृष्णा का औतार होवे: चौथे जन्मे सिंघ का औतार होवे: पांचवे जन्मे कीड़ा पतंग्णी होवे छटे जन्मे कलवाल या ऊंट होवे सातवें जन्मे भागमती स्त्रि होवे सि पाप काल में छपे ब्राह्मण पूजा भोर्जन कांसा तांबा कृष्ण वर्ण गौ दान दीजे तो शुभ फल होवेगा।

11. (1) से (12)

(8) बिछ राशी जदा सथान हिर्ण सर्प का वाहन अगिन त्रमा पूर्व छ्या ब्राह्मण

गोत्र हत्या देव अगिन दृश्यति उत्तर पूर्व बसंता उलास जंता:

12. (अअअ) से (अअब) (अअज) से (ददद) = 64

( ) पूछ हार पुरुष तू दोनों कान खोल कर सुणिऐ जी तेरा गुण चिंत करी लक्ष्मी मिलेगी पर कल भय होला चिंता नहीं भली होवे तेरे शरीर में क्लेश है भाई बंधु से विरोध रहता है जो मन में कारज विचारा है सो होगा मन इच्छा पूरी होगी।

13. (अकार) (आकार) (क्षकार) तक = 51

(शकार) (47) विष्णु चिंता भवे चेव तु जायते चिंता रोगण स गृहा जायते तथा अचिंत का अचिंत सर्व सिंधु कार्शो पुरुष पाप भवे चेव गल रसा निच हत्या दुख दृश्यति:

14. (1) से (15) व (30)

(14) चौदसी पछिम दिशे का दुख पाप कन्या स्त्रि उपचते पीड़ा

15. (1) से (7)

(5) जीव वारे जो दुख लागे सा गृहणी देवी का दुख लागे अन दूध खांदे दृष्टा भई आंक के पात की भोज के पात माने वल देजी पीता वर्ण नाग कर्णा तव वल देणी पीड़ा होर दिन दुई:

16. (1) से (9)

(7) शनी तु हत्या दुख ब्राह्मण हत्या तु दृश्यति पराये कार्ज खुन पुन लाभ कर्णा तु दृश्यति कांसा पात्र कर धर्म दाण टास के भूमी दाता लखु देणा पाप पूजा करतव्यं तत्र भवि खंती :

17. (1) से (8)

(2) अग्नि दिशा काला वस्त्र मिला दाहिणे हाथे काचन हुआ शब्द करा तेरे कार्ज निशफल मिटि का आवण कुछ ता तेरा काज निशफल ब्राह्मण स्त्रि रोगी दिशा जी

18. (1) से (54)

(23) धकारे कार्य सिद्धि च लभते शुभ प्रदा सुभ भाग कल्याण च प्रजायते

(1) भला मानुश भेटे तो भला कि नहि सत कहो जी

19. (1) से (8)

(5) ये सू ठाकुर वारी जाए तो मत जाउण जी

20. व्याह को वास्त

21. बार टूटने का विचार मंगसिर

1. मंग फागुण चैत-वैशाख मास चार

22. बालक जाणे के लग्न का सगुन (1) से (12)

(6) कन्या लग्ने बालक जाए तो शिर पछिम को माथा दखिण पिता घर पर नहीं जन्म ते बालक ने आधा शब्द किया अस्त्रि 7 दाई स्त्रि मिल के पीछे आई पिनाने पीला बस्तु खाय दिवा सन्मुख थिया बाये अंग बालक के नाल घरो होय उठे वेग पुत्र रोय पांच त्रिया भीतर घर में दोउ और लेख एक एक त्रिया कन्या को लिए फरे वस्त्र वर्तन या घर तीने पहिणे वीच जननी को कष्ट होय पिता के बीच में।

23. (1) से (12)

(6) कन्या में बालक जन्मे तो काने हीण होवेगा

24. ग्रहशांति यंत्र

25. विवाह मुहूर्त

26. हल जोतने/बीज बोने/उगाहने अन्न भण्डारण के मुहूर्त

27. बाग विचार

28. छींक स्फूरण, स्वप्न आदि का विश्लेषण

29. तात्कालिक तौर पर प्रयोग किए जाने वाले यंत्र

30. अपने यजमानों के बालकों को जन्म कुंडलियां

आम मान्यता यही है कि सांचे की लिपियां ब्राह्मी से निकली शारदा लिपि से स्थानभेद के कारण अलग-अलग गुरुकुलों में अलग-अलग स्वरूप में विकसित हुई हैं। चौपाल (ज़िला शिमला) से प्राप्त पाबुची लिपि का स्वरूप निम्न प्रकार है:

(पत्र)

चौपाल से ही प्राप्त पाबुची लिपि के कुछ यंत्रों के स्वरूप निम्न प्रकार है:

❑

संदर्भ ग्रंथ

(1) भारतीय प्राचीन लिपि माला पं. *गौरी शंकर हीराचन्द ओझा*, मुंशीराम मनोहर लाल, नई दिल्ली।

(2) पं. *देवी राम ज्योतिषी खड़कांह (सिरमौर)* हिमाचल प्रदेश का हिन्दी सांचा।

(3) *स्व. पं. तुलसी राम, ग्राम मंढोचली, तहसील चौपाल (शिमला)* का पंडवाणी लिपिबद्ध सांचा।

(4) *पं. देवी राम, ग्राम मणेवटी, तहसील चौपाल (शिमला)* का पंडवाणी लिपिबद्ध सांचा।

(5) *स्व. पं. देवी राम, ग्राम वजोठ, तहसील चौपाल (शिमला)* का भियुंचाणी (विवस्वामी) लिपिबद्ध सांचा।

(6) *पं. नरपत व पूर्ण* का *कुमारसैन (शिमला)* से प्राप्त पाबुची लिपिबद्ध सांचा।

(7) *अशोक के अभिलेख डॉ. राजबली पांण्डेय (वाराणसी)*

